ओथेलो.

गोविन्दप्रसाद घिलड्याल.

श्रीपरमेश्वरो जयति ।

शेक्सपियर नाटकमाला—

प्रथमपुष्प ।

या

वेनिसका मूर

नामक

अंग्रेज़ कविशिरोमणि शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक

का

हिन्दी अनुवाद ।

पण्डित गोविन्दप्रसाद घिलड्याल बी. ए.
डिप्टीकलक्टर संयुक्तप्रदेश

रचित.

SHAKESPEARE'S OTHELLO
IN HINDI

TRANSLATED BY

PANDIT GOBIND PRASAD GHILDIAL B. A.
Deputy Collector
UNITED PROVINCES.

पहलीवार १००० } सं० १९७२ { मूल्य प्रतिपुस्तक ॥)

विज्ञप्ति ।

अँग्रेज कविशिरोमणि शेक्सपियर से हिन्दीपाठक भलीभाँति परिचित हैं ।

इनके प्रसिद्ध २ नाटकों के सार कहानियों के रूपमें प्रकाशित होचुके हैं। उनमें से कई उपन्यास रूपमें भी छपचुके हैं। कई नाटक पूर्ण रूपसे भी अनुवादित होगये हैं । यह नाटक "ओथेलो" जो पाठकों की भेंट कियाजाता है कहानी और उपन्यास की छटामें प्रकट होचुका है । परन्तु इसका पूरा अनुवाद अभीतक नहीं हुआ था। इसनाटक का तीसरा अँक शेक्सपियर के सब लेखोंमें अत्यन्त प्रभावशाली कहाजाता है। मैं इस बातको स्वीकार नहीं करसकता कि यह अनुवाद जैसा होना चाहिये ठीक वैसा हुआ है । पद्यका अनुवाद यथोचित रीतिसे पद्यमें ही होना चाहिये था, परन्तु ऐसा नहीं होसका है। प्रायः अनुवाद सब गद्यमें ही कियागया है। वह भी साधारण ।

परन्तु जब इस बातपर विचार कियाजाता है कि शेक्सपियर के काव्योंका आजकल हिन्दी में विकाश सा होरहा है—पहले कहानी निकली—फिर उपन्यास—और तदनंतर साधारण गद्यमय नाटक तो यह आशा भी कीजासकती है कि किसीदिन वे सांगोपांग भी बनजावेंगे। यदि हिन्दीपाठकोंको इस कृतिके अवलोकन से सम्पूर्ण मूलका कुछ रस भी प्राप्त होजाय तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा। यदि यह अनुवाद पाठकोंको रुचिकर हुआ और अवकाश मिला तो कुछ अन्य नाटकों के अनुवादभी जो अभीतक नहीं हुए हैं क्रमशः प्रकाशित कियेजावँगे ॥

मुरादाबाद
श्रीपंचमी
संवत् १९७१

निवेदक—
गोविन्दप्रसाद घिलड्याल ।

प्रस्तावना।

रचना का काल।

प्राचीनदिनवृत्तावलियों के देखने से जाना जाता है कि यह नाटक १६०४ और १६०५ ईस्वी में राजनाटकमंडली ने खेला था। कुछ विद्वानों का मत है कि यह पीछे बना है पर अब यही बात सर्वसम्मत ठहरी है कि १६०२ ईस्वी ही इसकी रचनाका समय है।

प्रबंध की सामग्री।

ऐसा भासित होता है कि शेक्सपियर ने और कथाओं से भी इस नाटक की प्रबंध रचनामें सहायता ली है। इसका मुख्य आधार इटलीदेश के सिनथो के कथासंग्रह की सातवीं कहानी है। मूल कथा में यागो पताकावाहक देशदामिनी से अनुचित प्रेम करता है। देशदामिनी सहकारी सेनापति को उससे अधिक चाहती है। यही यागो का उससे बदला लेने में प्रयोजन होता है। सहकारी पहरेमें किसी सैनिक पर प्रहार करने के अपराध पर पदच्युत किया जाता है। इसको पदस्थ करने के लिये देशदामिनी अपने पति से दोबार प्रार्थना करती है। पताकावाहक उसके पति मूरके रुमालको देशदामिनी से चुराकर सहकारी की गद्दी पर डालता है और फिर मूर से जाकर कहता है कि वह उसकी भार्या ने प्रेम के उपहारमें दिया है। वह उस रुमाल के आदर्श पर बना हुआ एक दूसरा रुमाल भी उसको बतलाता है और सहकारी के वध करने का बीड़ा उठाता है। सहकारी मारा तो नहीं जाताहै पर उसकी टांग पर चोटआती है। तब पताकावाहक मूरकी सहायता से देशदामिनी

का शिर फोड़कर वधकरता है । और दोनों मिलकर घरकी छतको गिराते हैं तथा यह प्रकाशित करते हैं कि देशदामिनी छत गिरने से मरी है। पीछे ओथेलो उसके शोकसे व्याकुल होकर पताकावाहक को पदच्युत करता है । तब पताकावाहक सब भेद सहकारी से खोलता है और ओथेलो पर अभियोग चलायाजाता है। पताका-वाहक की साक्षीपर ओथेलो को देशनिकाले का दंड मिलता है और कालान्तर में देशदामिनी के बंधुवर्ग उसको मारडालते हैं। फिर पताकावाहक पर भी अपने सहयोगी पर झूठा कलंक लगानेका अभिशाप लगायाजाता है, उसे घोर यातना दीजाती है जिससे उसके प्राणपखेरू उड़जाते हैं।मूल कथामें रौदरिगो ब्रवंशो यमिलिया इत्यादि नहीं हैं ॥

घटना का काल।

तुर्क बादशाह सेलिमस के सेनाधिपति मुसतफा ने ईसवी १५४० मई के महीने में सैप्रस पर चढ़ाई की थी इससे यही काल नाटक की मूल कहानी का प्रतीत होता है।

घटना का परिमाण।

इसके विषय में बड़ा वादानुवाद है। पर निम्नलिखित मत ठीक ठहरा है। अंक १ दृश्य १-२-३ एकदिन। बीचमें समुद्रयात्रा का समय। अंक २ दृश्य १-२-३ एक दिन । अङ्क ३ दृश्य १-२-३ एक दिन । फिर बीचमें न्यून से न्यून एक सप्ताह का अन्तर। अङ्क ४ दृश्य १-२-३ और अङ्क ५ दृश्य १-२ एक दिन ।

नाटक का आभास।

अंक १

प्रथम अंक के तीन दृश्योंमें देशदामिनी और ओथेलोका गुप्त-रीति से बिवाह होना, देशदामिनी के पिता ब्रवंशो का राजसभापति

और राजसभासदों से इसकी दुहाई देना और ओथेलो तथा देश-दामिनी की ओर से इसका प्रतिवाद, सैप्रस टापू पर तुर्कों के चढ़ाई करनेका समाचार आना, ओथेलोका उसकी रक्षाकरनेके लिये नियुक्त किया जाना, यागो का ओथेलो से द्वेष रखने के कारण उसका बदला लेने की परिकल्पना और उसका रौदरिगोको जो देशदामिनी पर आसक्त है इस कार्य्यसाधन के लिये कठपुतली बनाने का वर्णन है।

यागो की दुष्टतारूपी कीली पर ही नाटक की लीला घूमती है। यहाँपर क्षण भरके लिये यागोका ओथेलो के साथ किसप्रकार का द्रोह था इसपर कुछ विचार करना अच्छा होगा। इसका एक कारण जैसा कि वह प्रथम दृश्य के आरंभ में रौदरिगोके साथ बात चीत करने में स्वयं कहता है, यहथा कि-ओथेलो ने उसको छोड़ कर, वह जिसको लड़ाई की विद्या का व्यावहारिक कुछभी ज्ञान नहीं होने से तुच्छ समझताथा, उस केसियोको दयार्द्रभावसे अपना सहकारी बनाया। फिर पीछे दूसरे अ के पहले दृश्य के अंतमें एक आत्म-भाषण में वह अपनी घृणा का एक दूसरा हेतु भी बतलाता है। अर्थात् उसको यह सन्देह था कि ओथेलो उसकी स्त्री यमिलिया के साथ फँसा था। यागो ने पैशाची लीला का जैसा घोर षड़यंत्र रचा है उसको देखकर उसके द्वेष का पहिला कारण बड़ा थोथा जँचता है, कई समालोचक इस बातका विश्वास करते हैं कि यागो का दूसरा सन्देह निर्मूल नहीं था। उस षड़यन्त्रका पहला अभिप्राय केसियो पर कुछ कलङ्क लगा, उसे पदच्युत कराकर स्वयं सहकारी बननेका था, और दूसरा अभिप्राय ओथेलो के मनमें यह विश्वास जमादेनेका था कि देशदामिनी पुँश्चली है और वह उसके कर्मचारी से फंसी है। अपने भोंदू रौदरिगो को

केसियो के विरुद्ध मंत्रणा में अपने साथ सम्मिलित करने के लिये और साथही धनप्राप्ति के लिए भी उसने उसपर यह रंग जमाया कि वह देशदामिनीको उसके वशीभूत करनेका प्रयत्न कररहा था। अच्छा अब नाटक की लीला की ओर फिरिये।

ब्रवंशो ने गुप्त परिणय के विरुद्ध जो पुकार मचाई वह निष्फल होनेसे और ओथेलो की तुरत सैप्रस जाने की आज्ञा होनेसे देशदामिनी भी उसके साथ जाने का निश्चय करती है।

अंक २।

दूसरे अंकका श्रीगणेश होनेपर हम देखते हैं कि केसियो सैप्रस पहुँचगया है, और उसके थोड़ी देर पीछे देशदामिनी, यमिलिया और यागो भी दूसरे जहाज से वहीं पहुँचते हैं। ओथेलो जो सब से पहले जहाजपर सवार हुआ था सबसे पीछे पहुँचता है, क्योंकि एक भयानक आंधी के आनेसे उनके जहाज एक दूसरे से अलग होगये थे। साइप्रस पहुँचने ही पर यागोको केसियो के विपरीत कार्य्यवाही करने का पहला अवसर मिलता है। उन दोनों को यह आज्ञा मिलती है कि वे रातमें दुर्गके पहरे की देखभाल करें। यागो इस बातको जानताथा कि थोड़े से ही सुरापान से केसियो विवश होजाता है, अतः वह नौकरीमें जानेसे पहलेही उसको कुछ मदिरा पिलादेता है। इससे उसका यह प्रयोजन था कि केसियो रौदरिगो से, जिसे उसने पहले से ही केसियो के साथ जुटपड़ने के लिये उभाड़ रक्खा था लड़ाई कर बैठे। इसके अनुसार हम शीघ्र ही देखते हैं कि केसियो तलवार खींचकर रौदरिगो का पीछा कर रहा है और मौनतेनो को जो साइप्रसका शासक था, बीचबिचाव करने में घायल करता है। तब यागो तुरन्त रौदरिगो को चुपकेसे भय-

सूचक घंटी बजाने को भेजता है, जिसकी ध्वनि सुनकर ओथेलो इस कलह दृश्य में आपहुँचता है।

उसके इस गुलगपाड़े का अनुसंधान करने पर यागो इस बातका मिस करता है कि वह केसियो को हानि पहुँचाना नहीं चाहता है और बड़ी अनिच्छा प्रकट करके इस बातको स्वीकार करता है कि इस खलबली का मूलकारण केसियो का रोदरिगो पर आक्रमण करना था। इसपर ओथेलो केसियो को सहकारी पद से अलग करता है और यागो की कपट कला का एक भाग फलीभूत होजाता है। इसका कठिन भाग अर्थात् ओथेलो को देशदामिनी से विमुख करदेना शेष रहजाता है। इसको पटाने के लिये वह पहली चाल यह चलता है अर्थात् केसियो को भलीभांति समझा देता है कि देशदामिनी के कहने सुनने से ही उसका अपराध ओथेलो निश्चय क्षमा करेगा। केसियो झटपट उसके जाल में फँसजाता है।

अंक ३

तीसरे अंक के आरंभ में हम केसियो को पुनः अपने पदस्थ होने के लिये देशदामिनी से आग्रह करता पाते हैं। देशदामिनी जो उसकी योग्यता से पूर्णरूप से परिचित थी, तुरन्त इस बात की प्रतिज्ञा करलेती है कि वह केसियो की पुनः पदस्थिति के लिये भरशक्य प्रयत्न करेगी। तब यागो ठीक उस समय जब कि केसियो अपनी प्रार्थना करके देशदामिनी से बिदा होता है ओथेलो को उस स्थल पर लाता है जहां पर केसियो की भेंट देशदामिनी से हुईथी। केसियो को देशदामिनी के संग देखने पर और उसके आने से केसियो के एकाएकी चले जाने पर, यागो विस्मित सा होकर कुछ ऐसा बड़बड़ाता है कि जिससे ओथेलो के मनमें सन्देह

उत्पन्न होजाताहै । अपनी प्रतिज्ञा पालन करनेके लिये देशदामिनी-उसी समय ओथेलो से केसियो को फिर उसके पदपर रखदेने के लिये उसका पक्ष समर्थन करती है और अपराध क्षमा करने के लिये अनुरोध करती है । उसके मनानेसे ओथेलो इसबातका वचन देता है कि वह केसियो को मिलने की अनुमति देदेगा । ज्योंही देशदामिनी वहाँ से चली जाती है कि यागो ओथेलो से इसबातका संकेत करने का अवसर निकालता है कि केसियो के पदस्थ कराने के लिये देशदामिनी इतना अनुरोध केवल स्वार्थ सिद्धि के लियेही कर रही है—उसमें कुछ दालमें काला है ।वह देशदामिनीके जीवन-चरित्र की कुछ ऐसी घटनायें वर्णन करता है कि जिनसे उसका आचरण स्वभावतः दुरंगा होना झलकता है,और यह भी संभावना होती है कि उसकी शीघ्रही ओथेलो से अरुचि होजायगी । यहाँ एक तुच्छ दैवी घटना से यागो को सफलता प्राप्त करने का सुगम मार्ग मिलजाता है । ओथेलोने देशदामिनी के मिलने पर उससे यह बहाना कियाकि उसके सिरमें पीडा है । इसपर देशदामिनीसे शिर बाँधने के लिये अपना वह रूमाल उसको देती है कि जिसको बड़े चमत्कार का बताकर ओथेलो ने बड़ी सावधानी के साथ उसको रक्षित रखनेका आदेश देरक्खा था । वह इसरूमालको बहुतही छो-टा है कहकर छोड़देता है और वह देशदामिनीके विना देखे भूमिपर गिरपड़ता है और पीछे शीघ्रही यमिलिया के हाथ लगजाता है । वह उसे यागोको देती है जिसने कई वार यमिलिया से उसके चुराने का आग्रह किया था । यागो जाकर उसे केसियो की कोठड़ी में डाल आता है । इसीवीच में यागो ओथेलो से यह कहकर कि उसने एक वार केसियो को उस रूमाल से अपनी दाढ़ी पोंछते देखाथा और ऐसी २ कई घटनाओं का पूर्ण रूपसे वर्णन करके जिनसे यह स्पष्ट प्रकट होजावे कि देशदामिनी केसियो से प्रेमासक्त थी ओथेलो को

और भी सन्देह युक्त करदेता है। यागो की मन्त्रणा के अनुसार दूसरीवार देशदामनी से मिलनेपर ओथेलो उस रूमाल को उस से माँगता है। वह उस रूमाल को नहीं लासकता है और अनजाने फिर केसियो के शीघ्र बुलालेने का अनुरोध करने से उसका क्रोध पात्र बनजाती है तथा उस के संशयकी पुष्टता कर बैठती है।

अंक ४

चौथे अँक के आरम्भ में इस बातपर दृढ़प्रतिज्ञ होकर कि ओथेलो को चैन नहीं लेनेदेना चाहिये और किसी ऐसी घटना होने के पहिले जिससे उसकी कुमन्त्रणाका भेद खुल पड़े सब बात ठीक होजानी चाहिये। यागो वार २ ओथेलो के कानों में विष भरता जाता है। वह एक छल भरा प्रपंच रचता है—केसियोके साथ एक वियंका घरवारी रंडी के विषयमें बात चीत करता है जिसमें केसियो यह स्वीकार करता है कि वह उसपर लट्टू होरही है। ओथेलो इसको गुप्तरीति से सुनता रहता है। वियंका उस रूमाल का विषय भी छेड़ती है जो केसियो ने उसको दियाथा। और इससे ओथेलो को यह विश्वास दिलाता हैं कि वह वार्त्तालाप देशदार्मनी के ही बारेमें हुआ था। वस इससे देशदामिनी के दुष्टचरित्रा होने का ओथेलो को और भी अधिक विश्वास होजाता है और देशदामिनी के वध का संकल्प करदेता है। इसके थोड़ी देर पीछे देशदामिनी उसको मिलती है और वह उसको इस घोर अपराध के लिये ललकारता और फटकारता है। वह उसे अस्वीकार करती है और करुणा के लिये प्रार्थना करती है, पर वह उस की एक नहीं सुनता है कानों में अँगुली डाल देता है उसको सोतेहुए में वधकर देनेका निश्चय करलेता है।

अंक ५

इस बीचमें यागो अपनी कठपुतली रोदरिगो के द्वारा केसियो के वध करानेका जोड़ तोड़ लगाता है। परन्तु इस जोड़ तोड़कर उलटा फल होता है, यद्यपि केसियो के चोट आती है परन्तु इस झगड़े में रोदरिगो मारा जाता है। इस मृत पुरुष की जेब से जो चिट्ठियाँ निकलती हैं किसी अंश में उनके द्वारा और किसी अंशमें यमिलियाके सब भंडा फोड़करदेनेसे यागोकी दुर्जनता खुल जाती है और इस दुःखान्त नाटक का अन्त, देशदामिनी का वध करने के पश्चात्ताप में ओथेलो आत्मघात करके करता है।

नाटक का प्रसंग।

शेक्सपियर के प्रत्येक नाटक में किसी भले या बुरे चरित्र का चित्र खींचकर उसका भला या बुरा परिणाम उत्तम भाँति दर्शाया गया है। विद्वानों का इस नाटक के पात्रों के चरित्र के विषय में इतना मत भेद है कि इसपरे एक महाभारत बन गया है इसके विषय में पूर्णरूप से विवरण करने में लेखके बढ जाने का भय है। सूक्ष्मरीति से यह नाटक स्त्री संदेह, ईर्षा, संशय और अविश्वास का द्योतक है। झूठे अपवाद और दिखावटी बातों से स्त्रियों के आचरण पर संदेह करने का क्या परिणाम होता है, इसकी झांकी इसमें दिखलाई गई है। दुर्जनोंके फंद में पड़कर सज्जन भी अनजाने में कैसे२ अनर्थकर बैठते हैं तथा उत्कट कर्मोंका फलभी उत्कटही होता है इनके दृश्य इस नाटकमें पाठकोंकी आँखोंके आगे आते हैं।

नाटक पात्रों के चरित्र।

ओथेलो—ओथेलो मूरजातिका है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि वह एक असभ्य हवशी था। वह स्वयं अपने को कृष्ण वर्ण का बतलाता है और उसका एकवैरी उसको मोटे होठोंवाला कहता

है। किन्तु उसका असभ्य होना नहीं पाया जाता है। वह राजवंशमें जन्मा था और एक शूर तथा शिष्ट पुरुष था। उसका धर्म ईसाईथा वह सुशिक्षित था और उसका रहन सहन उच्च कक्षा का था। जो वक्तृता उसने राजसभामें दी थी उससे वह बुद्धिमान् उदार कल्पनाशक्ति वाला और किसी अंशमें उसका कवित्व से परिचित होना भी पाया जाता है। परन्तु उसकी कल्पनाशक्ति अति बढ़ी चढ़ी थी, आवश्यकतासे अधिकभी थी वह दृढप्रतिज्ञ और निश्चल हृदय बीर था पर साथही इसके उसके मनोविकार बड़े प्रबल होते थे और वह क्रोधी प्रकृति का भी था। पहिले तो उसको किसी ओर झुकाना बड़ा कठिन था, परंतु जहां वह झुका कि जिधर झुके झुकगये जिधर फिरे फिर गये कि कहावत उसपर चारितार्थ होती थी। पीछे उसको दूसरी ओरका ध्यानही नहीं रहता था। वह जिस धुनमें पड़ जाता था उसको पूरा किये विना नहीं छोड़ता था। इसका यह एक प्रबल दृष्टान्त है कि वह इतने उच्चपद तक पहुंच गया था। कभी २ प्रबल मनोविकार के होने से उसकी विवेचन शक्ति कुंठित होजाती थी और वह उसके वशीभूत होकर अनर्थ कर बैठता था। इसको उसने केसियो के पदच्युत करने पर स्वयं स्वीकार किया हैं और इसी छिद्र के द्वारा यागो को उसे बहकानेका अवसर मिलगयाथा। क्रोधी स्वभाव बड़ा हानिकारक होता है, किन्तु जहां वह दृढ़ता और कर्तव्य ज्ञान से सम्मिलित होता है उससे उत्तम चरित्र की नीव भी पड़ती है। यह बात ओथेलो में विद्यमान थी। उसपर यौवनकाल में बड़ी आपत्तियां पड़ी थीं और इस कारण से उसमें धीरज की मात्रा बढ़ी हुई थी।

यात्रा करनेसे और साहसिक कार्यों में पड़ने से उसके मन का विकाश होगया था, उसमें निरीक्षण और अध्यवसाय की प्रचुर शक्ति होगई थी। वह यथार्थ सैनिक युवा था और शासन करने के

पूर्ण योग्य था। वह भीतर और बाहरसे भिन्न नहीं था। वह उदार और खुले स्वभाव का था। उसकी स्थिर, स्नेही और उच्च प्रकृति थी। वह काम करनेवाला था नकि डींग मारनेवाला। वह लोगों के साथ निष्कपटभाव से वर्ताव करता था। छोटा साभी कलंक लगने की अपेक्षा वह किसी वस्तु को त्यागना या किसी आपत्ति के भोगने को अच्छा समझता था। सारांश यह है कि उसमें प्रत्येक मानुषी गुण था। और वह प्रेममें इतना लवलीन था कि युद्ध को भी छोड़ बैठता। उसके लिये संदेह करना असंभव था, यहांतक कि यह देशदामिनी को इतनी पतिव्रता समझता था कि इसकी सत्यता पर अपने जीवन की होड़ लगासकता था। उसको इसका पूर्ण विश्वास था। फिर ऐसे उत्तम चरित्र के पुरुष का ऐसा घोर पतन? इसका क्या हेतु है? इसका मूल कारण यागो है। वह न होता तो कुछभी न होता। देशदामिनी के मिल जाने से उसके आनन्द का प्याला छलक उठा था। इसही प्रफुल्लता में उसका नई परीक्षा में पड़ना पड़ा था। यह उसकी पहली प्रेम की परीक्षा थी। नये अनुभवों में नवीन संकटों से पल्ला पड़ता है। जो एक काम में सिद्धहस्त होते हैं वह कभी किसी नये काम के पड़ने पर उसमें सफल नहीं होते हैं। उसके प्रेम का श्रीगणेशही अशुद्ध हुआ। उसने देशदामिनी को उसके पिता की रक्षा में से चोरी से प्राप्त करलिया। यदि उसके मनोविकार प्रबल न होते तो वह इस कामको निन्दनीय समझता। यागो का स्वत्व उसका सहकारी होने का था परन्तु केवल देशदामिनी की प्राप्ति में सहायता पहुँचाने के ही कारण उसने केसियोको वह पद दे डाला। चाहे केसियो अपने स्वामी का भक्त था, परंतु वह इतना योग्य नहीं था कि जितना यागो था—यह उसकी समझ की भूल थी कि जो क्षोभ के कारण हुई। जब उसने केसियो को पदच्युत किया तो भाग्यवशात् देशदामिनी वहां पहुँच गई, उसको

अपनी प्रियतमा का यह क्लेश उठाना बड़ा बुरा लगा। और उस को सहसा पदच्युत करदिया। कदाचित् देशदामिनी वहां न आती तो ऐसा न होता, और वह अधिक अनुसंधान करता, पर उसकी एकमात्र लगन (लौ) देशदामिनी ही पर थी, इससे और बातों की यथोचित सुध उसको नहीं रही।

व्याह के पीछे ओथेलो वेनिस के एक ऐसे समाज में पड़गया कि जिसके अंतरग का उसको कुछ भी ज्ञान नहीं था। इससे वह कुछ घबड़ाया हुआ और चौकन्ना सा होरहा था। "पहले मियां बावरे तापर खाई भांग"-इसके अतिरिक्त वह देशदामिनी के प्रेममें निमग्न था वह उसकी प्राणाधार और जीवनाधार थी। सो यह अवसर यागो को उसके बहकाने के लिये अच्छा मिला। ओथेलो के ही पूर्व कथित कर्म्मों से यागो को ऐसा करनेमें सहायता मिली। मानो व्रबंशो का यह कहना चरितार्थ होपड़ा—

"उस पर रखना दृष्टि मूर जो,दीख पड़े कुछ तुझे कहीं।
उसने अपना पिता ठगा है,तुझ को भी वह ठगे नहीं" ॥

"ह ! ह ! यह बात मुझे अच्छी नहीं लगती।" यागो के इन वचनों से ही उसके मनमें संशय का अंकुर जमा था। "स्वर्ग की शपथ वह मेरी प्रतिध्वनि करता है। " इस वाक्य से ही ओथेलो के मनमें पहले पहल सन्देह उपजने की झलक है पर यागो उसको एकदम अपने जालमें न फंसा सका, उसकी विषमयी बूटीने क्रमशः प्रभाव डाला। वह कभी यागो को झूठा मानता था और कभी सच्चा। पीछे उसकी विचारशक्ति जाती रही और वह उस दुष्ट के जालमें फंसही गया।

जबकि एक वार यागोने सन्देह को उसके मनमें दृढ़ कर दिया फिर वह जम गया। ओथेलोने केवल उन्हीं स्त्रियों का स्वभाव देख रक्खा था कि जो सेना के पीछे २ लगी रहती थी इससे उसकी

कल्पना शक्तिने भयानक शीघ्रता से अपना काम करडाला। यदि वह विचार शून्य न होगया होता और केसियो के देशदामिनी के साथ शुद्ध व्यवहार पर कुछ भी सोचता या देशदामिनी या यमिलियासे इसका वृत्तान्त पूछ लेता तो सब रहस्य प्रकट होजाता और ओथेलो उतावला होकर बावला न बनता। छिद्रेष्वनर्था बहुली भवंति। ओथेलो ने दुष्ट यागो को जो थोडासा छिद्र दिया वह होते २ अनर्थ करगया। ओथेलो का परम शोक का कारण यह नहीं है कि उसपर कलंक लगेगा किन्तु उसका यह कारण है कि उसका जो देशदामिनी पर पूर्ण विश्वास था उस विश्वासकी ही क्षति होनेपर उसकी जान जातीरही। —०—

देशदामिनी—देशदामिनी की छवि की मनोहरता से उसकी आतमाकी शुद्धता तुलना करती है। उसमें स्वार्थका नाम नहीं पाया जाता वह इतनी पुनीत और पवित्र है कि उस को पतित ललनाओं का नाम लेने तक में घृणा होती है। उसकी सच्चरित्रता उसका भोलापन, उसका मृदुलस्वभाव, उस के रहन सहन के लालित्य और सौन्दर्य से लोग मोहित होजाते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं। यागोको छोड़कर जिसका पत्थर का कलेजा था सब नाटकपात्र उसको प्रेमकी दृष्टि से देखते हैं। ओथेलो केविषय में तो क्या कहना है कि वहतो उसके पूर्ण वशीभूत ही है। केसियो उसको आदर और प्रेम की दृष्टि से देखता है। अल्हड़ रासिया रोदरिगो भी उसके सतीत्व और लावण्य से परिचित है। निपट ग्रामीण यमिलिया जो लंपट समाज में पाली पोसी गयी थी उसकी संगतिसे बहुत उच्च होगईथी यहां तक कि उसने अपने प्राण की बाजी खेलकरभी रूमाल के विषय में सत्य वार्ता अंत में खोल डाली। शेक्सपियरने जितने स्त्रियों के चित्र खीचे हैं कदाचित् उन सबोंमें देशदामिमिनी ही सबको मुग्ध करती है। उस का स्वभाव सौन्दर्य विचित्र है उसका निश्छल प्रेम, उसकी सुशीलता,

गृहकार्य में कुशलता, सहानुभूति, शीघ्रबोध इत्यादि और इन सबसे बढ़कर उसका पतिव्रतधर्म्म स्त्रीतत्व का उत्कृष्ट व्यक्ती करण है। परन्तु देशदामिनी में एक बड़ी भारी त्रुटि है, और वही त्रुटि होते२ दूषण होगई। वह अपने मनकी तरंग (वृत्ति) को रोक नहीं सकती थी। जिधरको वह उसको बहाती लेचले उसमें वह वही चली जाती थी। मनकी तरंग क्या है? और नियम क्या है? इसका भेद वह पूर्ण रूपसे नहीं जानती थी। कर्म्म और वचन से कर्त्तव्य पालन का तथा यथार्थ और अ-यथार्थ का उसको यथा योग्य विचार नहीं था। मनकी तरंग ही जीवनयात्राकी यथ दर्शक नहीं होती है। उस में समझ से भी बड़ा काम लेना होता है। अपने वृद्ध पत्नीहीन पिता के घरसे वह बिना उसकी आज्ञा के गुप्तरूप से एक विदेशी के साथ निकल आई। यागो के ओथेलो को देशदामिनी के विरुद्ध भड़कानेमें इस बातने ही बड़े जादू का काम किया। उसने अपने पिताके साथ बुरे व्यवहारका फल भोगा। उसका वृद्ध पिता उसको इतनी प्यारी मानताथा कि इस वियोगनेही उसको मृत्युका ग्रास बना दिय। इससे यह नहीं समझना चाहिये कि उसको अपने पिता से प्रेम नहीं था। किन्तु उसकी मनकी तरंग इतनी प्रवल होतीथी कि उसके एक ओर झुकने पर उसको दूसरी ओर की सुधि नहीं रहती थी। वह एक देशी या एकपक्षी थी।

ऐसीही त्रुटियां या यों कहिये कि बिचार की न्यूनता या कम समझी उसके आचरण में उस समय भी देखने में आती है जबकि उसने केसियो के पदच्युत होने पर उसके फिर पदारूढ़ करने के लिए ओथेलोसे उसकी सिफारिश की थी। यह सेना प्रवन्धका विषय था, इसका निर्णय करना ओथेलो का काम था न कि देशदामिनीका। जब घंटीबजने पर ओथेलो अनुसंधान के लिये आया था,

तब भी देशदामिनी को वहां नहीं आना चाहिये था। आगे इसी का लाभ उठाकर यागो ने उसको रूमाल के फंदे में सहज ही फंसालिया उसको इतना सङ्क्षोभ्य होना उचित नहीं था के अपने मारे जाने के पहिले भी उसको कुछ विचार न हुआ वह एकदेशी ही बनी रही। जब ओथेलो ने उससे कहा कि केसियो मर गया है तो वह बोल उठी–"हाय! उसके साथ विश्वासघात" कियागया है और मेरा भाग्यफूट गया है।" इस से उसका अर्थ यह था कि केसियो विश्वास-घात से मारागयाहै और उसका भाग्य इसलिये फूटगया है कि उस का साक्षी देनेवाला अब कोई नहीं रहा।

ओथेलो ने इस अभिप्राय को नहीं समझा और देशदामिनी के वाक्यों का यह अर्थ लगाया कि केसियो का भेद खुल गयागया है और इस भेदके खुलने से देशदामिनी का सर्वस्व बिगड़ गया। यदि उसमें समझ होती तो वहकोई और उत्तर देसकती थी तथा मरनेसे बच जाती। कभी २ देशदामिनीकी भोली भाली झूठ बोलने की बान भी थी। जब ओथेलोने उससे रूमाल मांगा तो उसने स्पष्ट-तया नहीं कहा कि वह खोया गया हैं। उसेने अपने पति की उस समय की टेढ़ी चाल नहीं पहचानी और केसियो की सिफारिश करके प्रज्वलित अग्नि में और घी छिड़क दिया। जब यामिलियाने देशदामिनी के मरनेपर उससे पूछा कि यह हत्याकांड किसने किया है तो उसने यह उत्तर दिया किसीने नहीं किया है मैंने अपने आप किया है मेरे प्राणनाथ से मुझे स्नेहपूर्वक स्मरण रखने की विज्ञप्ति कर देना। इसकी भी कुछ यूरोपीय समालोचक झूठ में गणना करते हैं। हिन्दुस्तानी भावसे इसका आशय यह होसकताहै कि "मेरे कर्म्मने किया है" आहा देशदामिनी का अपने पति के लिये कैसा निर्मल गूढ़प्रेम है उससे वध करीजानेपरभी वह ओथेलोपर लांछन लगा-ना पसंद नहीं करती वह अपने मनकी तरंगमेंही मग्न है।

यागो। यागो सांसारिक पण्डित है, परन्तु दुष्टात्माओं का शिरोमणि है। यह शठ मन घुन्ना है, उसकी दुर्जनता कभी कम नहीं होती है और परमार्थ का तो उसमें लेशमात्र भी, नहीं है। उस की योग्यता का क्या कहना है? वह तो उसके पद पद पर टपकती है। चाहे कैसी ही कठिनाई का सामना आपड़े वह इतना प्रवीण है कि उसको सहज ही में टाल सकता है। वह सदैव निश्चल धीर, गंभीर, चौकन्ना और साहसी रहता है। वह जो कुछ षड्यंत्र रचता है, उसकी रचना में उसके मनकी तरंग की शीघ्रता से बाधा नहीं पड़ती है। उसको जिस व्यक्ति के साथ चाहे जिस अवस्था में रख दीजिये वह अपने को उसके अनुकूल बना लेता है। उसका प्रकट स्फुट बक्तापन उसे प्रत्येक का विश्वासपात्र करदेता है। प्रत्येक उस को अपना विशेष मित्र समझता है वह प्रत्येक का "सत्यशील यागो" है। उसकी पत्नी यमिलिया तकको भी जो उसके साथ बरसों रही और जिसको मानवी प्रकृति की पहिचान का बहुत कुछ ज्ञान था, अंततक यह बात विदित नहीं हुई कि वह ऐसा दुष्ट था। नैतिक अवस्थाको छोड़कर इस पुरुष की प्रत्येक बात प्रशंसनीय है और वह अपनी जीवनयात्राको सफलताके साथ पूरी करनेके लिये सांगोपांग योग्य है। और इसके असफल होनेका केवल एक कारण यह है कि वह धर्म्म से रहित था। वह नहीं जानता था कि संसार में धर्म्म भी कोई वस्तु है और उसमें कुछ शक्ति भी रहती है। उस को सुपने में भी इस बात का विचार नहीं हुआ कि धर्म्म का इतना प्रभाव यमिलिया पर पड़ेगा कि वह उसका भंडा फोड़ कर देगी। वह धर्म्मरहित पुरुषार्थ को ही सब कुछ समझता था। अपनी इच्छा शक्ति परही उसका बड़ा भरोसा था। इससे बढ़कर और किसी शक्ति को संसारमें वह नहीं जानता था। चाहे कैसाही नीच कामहो उसको करनेमें वह घृणा नहींकरताथा। वह विवेकरहितथा

केवल अपना स्वार्थ ही एक ऐसी वस्तु थी कि जिस से उसको कुछ चरपराहट लगती थी। इसके साधनमें उसको भले बुरे का कुछ भी विचार नहीं रहता था। वह अपने को शैतान*का अनुयायी समझता था। और शैतानी काम करने से उसको बड़ी प्रसन्नता होती थी। किसी को निष्कारण दुःख पहुँचाने में, चाहे उसने उसका भला ही किया हो वह बड़ा हर्षित होता था। निदान जब उसकी कलई खुल गयी तोभी वह अपने चरित्र पर दृढ़ रहा। उसको कुछ भी शोक नहीं हुआ। और उसने अपनी दुष्ट कार्य्यवाहीका कुछ अंश कदाचित् इसलिये स्वीकार किया कि उसे अपने चातुर्य्य का चमत्कार दिखलाना था।

केसियो। केसियो रंगीला जवान है। उसने अपने बुद्धिबल से नहीं, वरन अपने स्वामी की ही कृपासे या कहिये उसके और उसकी पत्नीके बीच व्याहसे पहिले मध्यस्थ होनेसे ही सहकारी पद पाया था वह भला मानुष है चतुर है और बोलना अच्छा जानता है परन्तु उसके चरित्र में दृढता नहीं है वह एक हलका पुरुष है। उसमें सहानुभूति है और संगतिका असर भी उसपर बहुत शीघ्र पड जाता है। उसके उद्देश अच्छे हैं उसके लक्ष्य प्रमाण भासात्मक है और थोथे हैं वह अनुभव से कुछ नहीं सीखता है व्यवहारिक शिक्षापर ध्यान न देने से और खुला दयालु स्वभाव का होनेसे वह बहकाने में आ जाताहै ऐसे मनुष्यका मानकम होताहै और लोगोंके ऊपर उसका कम प्रभाव पड़ताहै। प्रत्येक व्यक्ति उसके साथ स्वतंत्रताके साथ बरताव करता है यहां तक कि विदूषक तकभी उसकी परवाह नहीं करते हैं। वियंका पातरभी खुले खजाने उसको झिडकती है और उसके गले

* शैतान—ईसाई और मुसलमानों के धर्म्म में एक परमेश्वर का दूत है जो संसारको पाप में लगाता है।

बया डालती है। ओथेलो उसका इतना सन्मान नहीं करता है कि जितना उसके पदके अनुकूलथा यदि वह सन्मान योग्य होत तो चाहे ओथेलो उसपर क्रोधित भी होगयाथा वह उसको एकदम पदच्युत नहीं करता। केसियो का हल्कापन उस के मदिरापान करनेसे और पदच्युत होनेपरभी विंय॰ाके साथ हास्यक्रीडा करनेसे भली भाँति प्रकट होता है। उसके चरित्र मे चंचलता और विचार तथा आत्म शासन में न्यूनता पाई जाती है।पदच्युत होनेके पीछे पहिलेतो उस ने ओथेलो के समीप जानेकाही नहीं ठहराई। परन्तु जब यागोने उसको पट्टी पढ़ाई तो वह तुरंत देशदामिनीके पास उपस्थितहोगया फिर उसने ऐसी भारी भूलकी कि ओथेलोको आते देखते ही वहांसे उठ खड़ा हुआ, जिससे ओथेलोके हृदय मं पहिले पहल सन्देह का सूत्र पात हुआ, जो पीछे ऐसे अनर्थापातका कारण होगया।

यमिलिया—यमिलिया एक बहुत साधारण पर अति सांसारिक स्त्री है। वह चली हुई चाल पर चलती है, और उसको जीवन या कर्तव्य कर्म के जो महान् लक्ष्य हैं, उनका ज्ञान नहीं है। उसका चाल चलन भी अच्छा होना नहीं पाया जाता। पर देशदामिनीकी सुसंगति का उस पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा है-यहां तक कि अंत म उसने सत्यका पक्ष लेकर यागो की कलई खोलदी। यथार्थ में इसका कोई चरित्र नहीं है।

रौदरिगो—रौदरिगो का भी कोई चरित्र नहीं है। वह एक साधारण व्यक्ति है। जब वह नाटक के आरंभ में प्रकट होता है उस में कोई अंकित करने योग्य बात नहीं दीखती है। वह एक वेनिस का छैला है जो देशदामिनी पर मोहित था। ऐसा पाया जाता है कि वह किसी रईसका लाड़लाथा—और जैसे बहुधा ऐसे युवक दुष्ट

जनों के फन्दे में फँसजाते हैं वह यागोके चक्र में पड़गया था। न उस में ऐसी बुद्धि थी कि वह यागो की चाल समझता और न इतनी धर्म की मात्रा ही थी कि वह अपनी कुत्सित इच्छाओं को रोक सकता, और उन दुष्ट फंदों में फंसने से बचता, जिनसे अंतमें उसकी मृत्यु हुई।

ब्रबंशो–नाटकके और पात्रों में सिवाय ब्रबंशो के कोई कुछ अङ्कित करने योग्य नहीं है। ब्रबंशो एक प्रेमीपिता था, पर वह ज्ञानी नहीं था। उसने देशदामिनी के भगा लेजाने पर ऐसाही व्यवहार किया है जैसे बहुधा साधारण मनुष्य कियाकरते हैं। वह इतना क्रूर बनगया कि उसने स्वाभाविक पैत्रिक मृदुलता और बुद्धिमता कोभी तिलांजलि देदी। यदि वह कुछ क्षमा गुण दिखला सकता तो संभव था कि उसकी लाड़ली पुत्री और जामाता का ऐसा महान् दुःखान्त न होता।

शिक्षायें।

इस नाटक से कई शिक्षायें मिलती हैं–उनमें से कुछ इस लेख के आरंभ में और नाटकपात्रों के चरित्र वर्णन में आगई हैं।

इस नाटककी बड़ी भारी शिक्षा मेरी समझ से यह है कि हम को इससंसारमें रहनेके लिये धर्मानुकूल सांसारिकपण्डित होना आवश्यक है। इस नाटकके जितने मुख्यपात्र हैं अर्थात् ओथेलो, देशदामिनी, केसियो, यागो, रौदरिगो, यमिलिया, इनमें सिवाय यागो और यमिलियाके कोई भी सांसारिक पण्डित नहीं था। ओथेलोने यागो का हकमाराथा, केसियोको उसका हकमारकर वहपदमिलाथा, इतनेपर भी ओथेलो, केसियो व देशदामिनी उससे सचेतनहीं रहे। रौदरिगो तो निरा भोंदू ही है यागो पूर्ण सांसारिकपण्डित अवश्य है, परन्तु उस में सच्चरित्रता रत्तीभरभी नहीं है, इसी से वह कृतकार्य्य नहीं हुआ। यमिलिया में नैतिक साहस (Moral courage)

थाही नहीं। पहिले उसने रूमालका पता नहीं दिया-पीछे जब बात बिगड़चुकी तब दिया। बड़े लोगों को बहुत छोटी से छोटी त्रुटियां या बुराइयां बिगाड़ देती हैं चाहे वह छोटों को या दुष्टों को नहीं बिगाड़ती हैं। किसी जोंकके दो टुकड़े करदीजिये वह दो जीव होकर चलने लगती है। मनुष्यकी कोई छोटी से छोटी अंगुली काटदीजिये उसको बड़ी भारी पीड़ा होती है इत्यादि इत्यादि। मेरी समझ से शेक्सपियर का अभिप्राय इस नाटक से यह भी है कि यह संसार मूढ़ों के लिये नहीं है॥

समाधान।

हमलोग दुःखात नाटकों को पढ़ना पसन्द नहीं करते हैं। और इस नाटकको पढ़ने से तो अत्यन्त ही दुःख होता है। कुछ यूरोपीय विद्वानों को भी जिनके देशमें दुःखान्त नाटक बड़े महत्वके समझे जातेहैं, इसनाटकके अध्ययनसे मानसिक क्लेश हुआहै। एक तो यह कह बैठा है कि अच्छा होता यदि शेक्सपियर इस नाटक को लिखता ही नहीं। पर जो संसार की भलाई दुःखान्त नाटकोंसे होसकती है और जो शिक्षा उनसे मिलती है वह सुखान्त नाटकों से नहीं मिलसकती।

"यागो" जो दुष्टों का दुष्ट था वह तो जीवित रहे—बेचारी देशदामिनी, बेचारा ओथेलो और यमिलिया अपमृत्यु के ग्रास हों-यह प्रकट में नाटककी नीति विरुद्ध प्रतीत होता है परंतु यदि विचार करके देखा जाय तो देशदामिनी इसही योग्य थी, वह इस संसार में रहनेके योग्य नहीं थी कि जहां ऐसे दुष्टोंसे अधिक पल्ला पड़ता है कि जिनसे अपने को बचाने की बुद्धि और शक्ति उसमें नहीं थी उसको अपने पिता का शाप लगा। देशदामिनीको निरपराध मारने से ओथेलो का आत्मघात बड़ा न्याययुक्त और महत्व का है। यमि-

लिया का मरना क्या है वहतो जीवित है। वह सत्यके कारण मरी। कर्म्मफल के विचार से रूमाल चुराने का पाप, जिससे देशदामिनीका बध हुआ उसपर लगा। जब कि उसपर ऐसे भारी अपराध प्रमाणित होचुके तो "यागो" का जीना क्या है मरने से भी बुरा है। जैसे तैसे जीने से मरना अच्छा होता है। जैसा शारीरिक संसार में प्रकृतिदेवीके नियमों का भङ्ग करने पर दंड मिलता है, मानसिक नियम तोड़ने पर उससे अधिक दंड प्राप्त होता है। उसके दरबार में अपराधी के लिये कुछ करुणा या अनुकम्पा कभी नहीं होती है।

ओथेलो

नाटक—पात्र ।

पुरुष ।

राज सभापति ।

ब्रवंशो—एक राजसभासद् ।

अन्य राजसभासद् ।

ग्रत्यानो—ब्रवंशोका भाई ।

लोदोविको—ब्रवंशोका सम्बन्धी ।

ओथेलो—एक राजकुलीन मूर, बेनिसराज का कर्म्मचारी ।

केसियो—उसका सहकारी ।

यागो—उसका पताकाबाहक ।

रौदरिगो—एक बेनिसका रईस ।

मौनतेनो—ओथेलोका पूर्वाधिकारी, साइप्रसका शासक ।

विदूषक—ओथेलो का सेवक ।

स्त्री ।

देशदामिनी—ब्रवंशो की बेटी, ओथेलो की पत्नी ।

यमिलिया—यागोकी पत्नी ।

विर्यंका—केसियो की उपपत्नी ।

विविध ।

मल्लाह, दूत, ढिंढोरिया, राजकर्म्मचारी, भद्रपुरुष, गवैये, अनुचर ।

दृश्य ।

पहिले अङ्कके लिए बेनिस नगर । और अङ्कोंके लिए साइप्रसका पोताश्रय ।
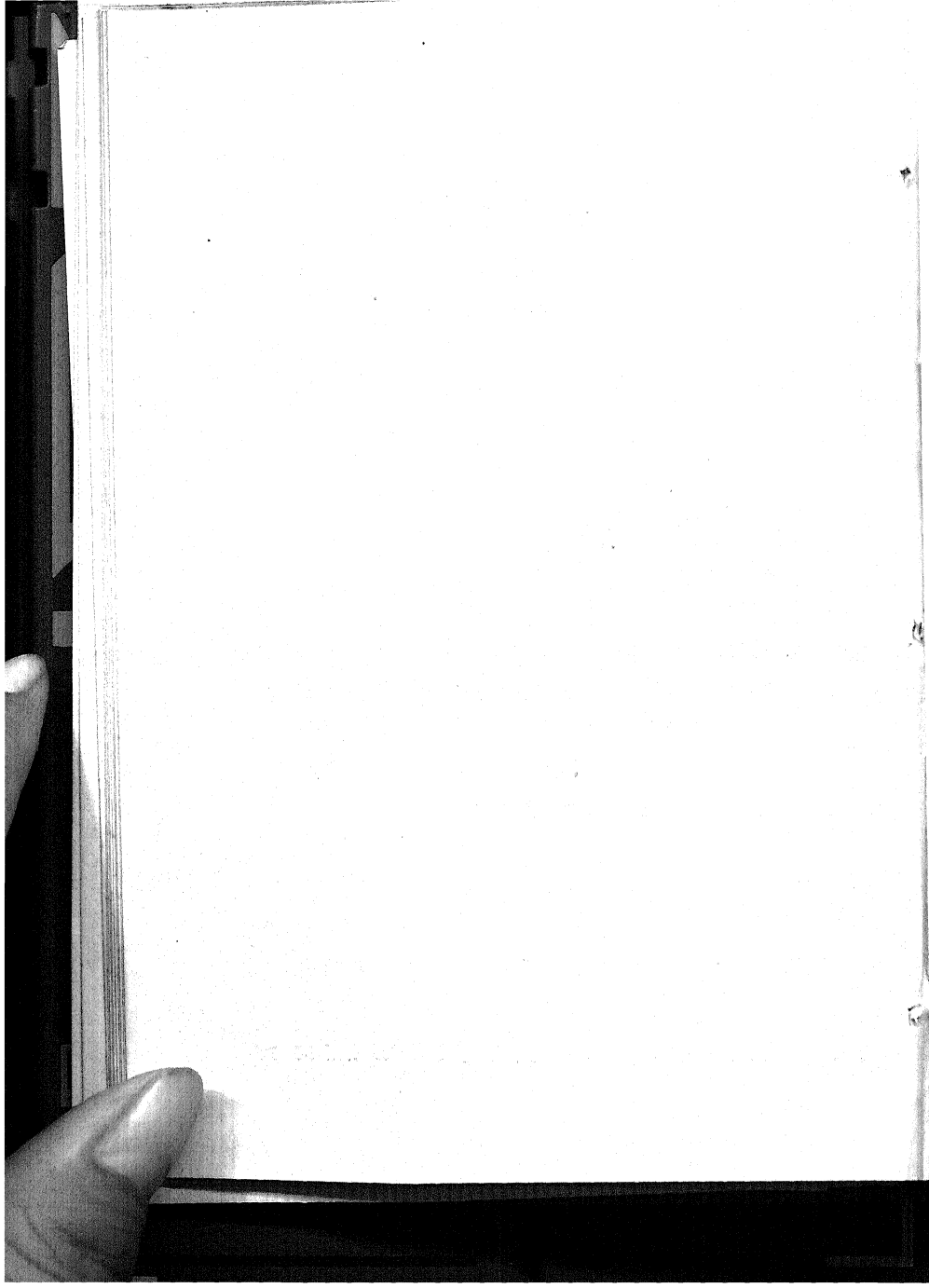
श्रीपरमेश्वरो जयति।

शेक्सपियर-नाटकमाला-प्रथम पुष्प।

ओथेलो।

पहला अङ्क

पहला दृश्य-वेनिसकी एक गली।

(रौदरिगो और यागो का प्रवेश।)

रौदरिगो-धुत ! मुझसे मत बोल। मुझे यह बात बहुत बुरी लगती है कि तुझ यागो ने जिसके ऊपर मैंने अपने तोड़के तोड़े न्योछावर कर दिये, जान बूझकर भी मुझसे यह बात छिपाई।

यागो-ईश्वर जाने, मैं इस बातको नहीं जानता था। परन्तु तुम अपनी ही कहते जाओगे और मेरी एक नहीं सुनोगे। यदि मुझको इसका ज्ञान स्वप्न में भी हुआ हो तो मेरा मुँह मत देखना।

रौदरिगो-तूने तो मुझसे कहा था कि तू उसको देख नहीं सकता।

यागो-यदि ऐसी ही बात न हो तो मेरे मुँह पर थूक देना। इस नगर के तीन रईसोंने स्वयं उसके पास जाकर मुझे अपना सहकारी बना देनेके लिये मेरी सिफारिश उससे की थी, यहां तक कि उन्होंने अपनी टोपियाँ तक उसके पैरो में रखदीं थीं। पर उसको इतना गर्व है कि उसे

अपने मंतव्योंमें किसीका हस्तक्षेप करना बुरा लगता है। वह युद्ध सम्बन्धी विषयों में बड़ी लम्बी चौड़ी और अतिशयोक्ति पूर्ण डींग मारकर उनको टालता ही रहा और अंतमें उसने यह कहकर कि "सचमुच इस पदके लिए मैंने पहिलेही एक मनुष्य चुन लियाथा" मेरे सिफारिशियों का तिरस्कार करदिया। धर्म्म की शपथ, मैं अपनी योग्यता भलीभांति जानता हूँ; मैं इससे छोटे पदके योग्य नहीं हूँ। अच्छा वह है कौन व्यक्ति जिसको उसने चुना है? वह फ्लोरेन्स का एक केसियो है, जो अङ्कशास्त्र के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानता, वह एक ऐसा जना है जो एक सुन्दरी स्त्री के वशीभूत होकर पशुवत् होगया है। उसने युद्ध में कभी सेना के एक भाग का भी संचालन नहीं किया। वह युद्ध के लिये सेना को संवारना भी नहीं जानता है और इस काम में एक कुमारी की भांति निपट अनजान है। लड़ाई की केवल वे काल्पनिक बातें जो पुस्तकों में लिखी रहती हैं, उसको अच्छी आती हैं। जैसे वाचाल राजमंत्री किसी प्रस्तावपर अद्भुत प्रभावशाली वक्तृता देसकते हैं, वैसे ही युद्ध-विषयों में वह भी बोल सकता है। पर सब वक २ ही है, कला करतूत कुछ भी नहीं है। यही उसकी सैनिक योग्यता है। किन्तु भाई! क्या किया जाय? उसने उसही को चुना है। उसने मेरी योग्यता रोड्स और साइप्रस में, कृस्तानी और अन्य मतावलंबियों के देश में अपनी आंखों से देख रक्खीथी, परन्तु उसने मुझे एक मुनीम के बराबर भी नहीं समझा। मुझे उससे नीचा देखना और चुप होना पड़ा है। यह क्षुद्र गणितज्ञ शुभ अवसर पर सहकारी होगा और मैं (परमेश्वर मेरे अशुभ लक्षणों के दोषों का निवारण करे) उस मूर महाराजका पताकावाहक ही रहूँगा।

रौदारिगो—ईश्वर साक्षी, मैं तो पताकावाहक होनेकी अपेक्षा उसका फाँसी परलटकाने वाला होना पसंद करता।

यागो–क्या करूँ? इसकी कोई औषधि नहीं है। यह सेवावृत्ति की विपत्ति है। पदोन्नति स्नेह और प्रशंसापत्र द्वारा होती है यथा क्रम नहीं होती है, जिसके अनुसार प्रथम व्यक्तिका पद खाली होने पर द्वितीय व्यक्ति को मिलाकरता है। अब भाई, तुमही विचार करो कि मेरा मूरसे कोई ऐसा संबन्ध है जिसके कारण मैं उसको अच्छा मानूँ?

रौदरिगो–ऐसी दशामें मैं उसके साथ कभी नहीं रहता।

यागो—अरे भाई! इस पर आश्चर्य मत करो। मैं उसके साथ केवल अपना स्वार्थसिद्ध करनेके लिये हूँ। हम सब स्वामी नहीं हो सकते हैं और न सब स्वामियों ही की सेवा सच्चरित्रता से होसकती है, आप विचारपूर्वक देखेंगे तो आपको बहुत से ऐसे निखट्टू सेवक मिलेंगे जो अपना कर्तव्य पूरा पालन करते हैं और अपने घुटने तोड़कर अपने स्वामियों के आगे खड़े रहते हैं वे ऐसे दासत्व की हीन दीन दशामें अपने स्वामी के गधे की भांति मगन रहकर उदरपोषण में ही जीवन गँवाते हैं और जब बूढ़े होते हैं, कान पकड़ कर निकाल दिये जाते हैं। उनके पल्ले कौड़ी नहीं रहती है। मैं तो ऐसे सत्यशील निखट्टुओं पर खूब कोड़े जमाऊँ। परन्तु कुछ दूसरी कक्षा के भी नौकर होते हैं, जो सुन्दर बन ठनकर और अपने कर्तव्य पालन करनेका आडंबर दिखलाकर, बाहरसे तो अपने स्वामी की सेवा करते हैं पर भीतर से अपनी ही और वे अपने स्वामियों की सेवा करने का मिष करके उनके प्रताप से बड़े चैन उड़ाते हैं और जब उनका अर्थ सिद्ध होजाता है तब अपनी ही पूजा करते हैं। ऐसे लोगोंका ही कुछ कलेजा होता है, और मैं अपनेको इन्हीं में से एक समझता हूं। क्योंकि भाई! यदि मैं मूरके पदपर होता तो जैसी यह बात निश्चय है कि तुम रौदरिगो हो, निश्चय मैं भी इसप्रकारका यागो न रहता। इस भांति उसकी निरंतर

सेवा करनेमें मैं यथार्थ में अपनी ही सेवा करता हूँ । इस बातमें ईश्वर मेरा साक्षी है। मैं ऐसा प्रेम या कर्त्तव्य पालनके भावसे नहीं करता हूँ, वरन केवल बाहरी दिखलावा ही दिखाता हूँ कि मेरे ऐसे भाव हैं। मैं केवल अपने स्वार्थ साधन ही के लिये ऐसा करता हूँ। जब तुम देखो कि मेरे, आन्तरिक अभिप्राय मेरे बाहरी काम और शिष्टाचार से प्रकट होते हैं, जब तुम देखो कि मैं निष्कपट भाव और सचाई से काम कररहा हूं,तो तुमको इस पर अचंभा नहीं करना चाहिये । जैसा मैं बाहर से दिखलाई पड़ता हूँ वैसा मैं भीतर से नहीं हूँ।

रौदरिगो–यदि बिना किसी रोक टोकके उस मोटे होंठवाले* का ब्याह देशदामिनीके साथ होने दिया जाय तो वह बड़ाही भाग्यशाली है।

यागो–उसके बापको जगाओ, ओथेलोको उठाओ,उसका पीछा मत छोड़ो, उसके मंगल में अमंगल करो, हाट वाट में उसका ढिंढोरा पिटवाओ, देशदामिनी के बंधुओं को भड़काओ,और यद्यपि उसको भगाकर वह निश्चिन्त आनन्द लूट रहा है तोभी उसमें विना विघ्न डाले मत रहो ।भरशक्य उसको सताओ यद्यपि उसको प्रकाश-रूप में प्रत्येक वस्तु सुहावनी और मनभावनी होरही है तोभी अपनी पहुँचभर उसमें विकार पैदा करो और उसके रंगमें भंग डालो।

रौदरिगो—यह उस के बापका घर है। मैं चिल्लाके पुकारूंगा।

यागो–हां चिल्लाकर पुकारो। जब किसी भरेपूरे नगरमें, रात में असावधानी से आग लगजाती है, और जिन लोगों के घर में आग लगती है वे इसकी जानकारी होनेपर, जैसे बड़े कातर स्वरसे भयभीत होकर चिल्ला उठते हैं,इसी भांति तुम भी चिल्लाओ।

* मोटे होंठवाला–ओथेलो, जो जातिका मूर था।

रौद्रिगो—ब्रवंशो जी ! उठो, जागो, क्याकर रहेहो ? चोरी होगई है ! चोरी होगई है ! चोरी होगई है ! अपने घरकी देखभाल करो ! अपनी लड़की और मालमताको देखो ! चोरी होगई है ! चोरी होगई है !

(ऊपर एक खिड़की में ब्रवंशो का प्रवेश ।)

ब्रवंशो-इस भयावनी चिल्ली पुकार का क्या कारण है? क्या बात होगई है ?

रौद्रिगो-राज सभासद् ! क्या आपके सब घरके लोग भीतर ही हैं?

यागो-क्या आपके सब किवाड़ बंद हैं ?

ब्रवंशो-क्यों ? तुम मुझसे ऐसा प्रश्न क्यों करते हो ?

यागो-परमेश्वर की शपथ, महाशय ! आपकी चोरी होगई है। बड़ी लज्जा की बात है, आप अपना चोगा पहनिये । आपके हृदयके टुकड़े २ होगये हैं। आपने अपनी आधी आतमा खोदी है। इसी समय, ठीक इसीसमय अभी एक बूढ़ा काला भेड़ा आपकी नवल श्वेत भेड़ीका रस लेरहा है। उठो, उठो, भयसूचक घंटी बजाकर सब नींद से घुर्राते हुए नगरनिवासियों को जगाओ; नहीं तो तुम्हारा नाती काला भुतना होगा। मैं कहता हूँ उठो !

ब्रवंशो-अरे तुम यह क्या बक रहे हो बावले तो नहीं होगये ?

रौद्रिगो—मानमूर्त्ति राजसभासद् ! क्या आप मेरी वाचा नहीं पहचानते हैं ?

ब्रवंशो—नहीं मैं नहीं पहचानता हूँ। तुम कौन हो ?

रौद्रिगो-मेरा नाम रौद्रिगो है।

ब्रवंशो-तो तेरा यहां आना और भी बुरा है। मैंने तुझको भली-भांति समझा दिया है कि तू मेरे घरद्वार की ओर बार बार मत

आया कर। मैने तुझसे स्पष्ट रीतिसे कहदिया है और इसमें कोई बात छिपाके नहीं रक्खी है कि तू मेरी लड़की के योग्य नहीं है। इसपर भी तू विक्षिप्त की भांति भरपेट भोजन करके और मदिरा से चूर होकर द्वेषभावसे मेरा तिरस्कार करने के लिए और मेरे विश्राममें विघ्न बाधा डालनेको इस समय यहां आपहुँचा है।

रौदरिगो—म-हाशय,म-हाशय, म-हाशय।

व्रवंशो--पर तू इस बातको निश्चय समझ ले कि मैं न तो ऐसा कृपणात्मा हूँ और न सभ्यसमाजमें ऐसा अपकृष्ट ही हूँ कि तुझको इस धूर्त्तता का स्वाद न चखा सकूँ।

रौदरिगो--भद्र महाशय, थोड़ा धीरज धरिये।

व्रवंशो–तू चोरीके विषय मुझसे क्या कहता था ? यह वेनिस नगर है और मेरा घर एक साधारण किसान का झोपड़ा नहीं है।

रौदरिगो--महामान्य व्रवंशोजी, क्रुद्ध न हूजिये। मैं आपके पास अत्यन्त सीधे और स्वच्छ भावसे आया हूँ।

यागो-ईश्वर की शपथ। महाशय, आप उन लोगोंमें से एक हैं जो उस बातको करने में चाहे वह ठीकही हो निषेध करेंगे, यदि उन से उस बात के करने के लिये कोई ऐसा व्यक्ति कहे जो उनकी दृष्टि में बुरा हो। आप इसलिये कि हम आपकी भलाई करने के लिए आये हैं, हमको दुष्ट समझते हैं। आप अपनी कन्या को एक वारवरी* के घोड़ेके बन्धन में पायेंगे। आपके नाती आपके सामने हिनहिनायेंगे, घोड़दौड़के घोड़े आपके संबंधी होंगे और टट्टू आपके बन्धुवर्ग।

---

* वारवरी=एकदेशका नाम है जहांके कृष्णवर्ण मूर लोग निवासी थे। वहांके घोड़े अच्छे होते थे।

ब्रवंशो–तू कैसा दुरात्मा है जो ऐसी बातें बकता है।

यागो–महाशय, मैं ऐसा पुरुष हूँ जो आप से यह कहने को आया हूँ कि आप की पुत्री और मूर इस समय एक इस भांति के पशु बने हुए हैं जिस की दो पीठ होती हैं।

ब्रवंशो–तू एक नराधम है।

यागो–आप तो हैं–राजसभाद्।

ब्रवंशो–तू इसका उत्तरदाता होगा। रौदरिगो, मैं तुझको भली भांति जानता हूँ।

रौदरिगो–महाशय, मैं प्रत्येक बात का प्रतिवाद करूंगा। पर मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि यदि आपकी यह इच्छा हो और आप पूर्ण ज्ञानसे इसमें सम्मत हों (जैसा कि मैं समझता हूं किसी अंश में आप हैं) कि आपकी सुन्दरी पुत्री घोर रात्रिमें १२-१ बजे के बीच एक ऐसे व्यक्ति के द्वारा जो एक भाड़ेका टट्टू खेवट है और किसी दशामें परिचर होनेके योग्य नहीं है; भगाई जाकर एक कामी मूरके दुरालिंगनमें पड़े, और यदि आप इससे जानकार हैं और इस में आपकी संमति है तो हमने धूर्त्ततासे आपका उत्कट अपराध किया है। किन्तु यदि आप इस बातको नहीं जानते हों तो मुझे अपने शुभाचरणसे बोध होता है कि आप हमारे वास्ते बुरा करते हैं जो इसभांति रुष्ट होकर धमकाते हैं। आप इसका कभी विश्वास न करें कि शिष्टता की सीमा को उल्लंघन करके मैं आप श्रीमान् का हँसी ठट्ठा करता। मैं फिर भी कहता हूं कि यदि आपने उसको अनुमति नहीं दी है तो आपकी दुहिताने बड़ा ऊधम मचा दिया है। उसने अपने कृत्य, सुन्दरता, बुद्धि और भाग्य का संयोग एक ऐसे मर्यादारहित और भ्रमणकारी विदेशी से किया है जो न यहां का है न वहां का है। आप सीधे भीतर जाकर अपना समाधान करलीजिये। यदि आपकी आत्मजा, अपनी कोठड़ी या आपके घरमें हो तो इस

भांति आपको धोखा देनेके अपराध में जो राजदंड आप चाहैं मुझे दिला सकते हैं।

ब्रवंशो—अरे! आग झाड़ो, मेरेलिए एक मोमबत्ती लाओ, मेरे अनुचरवर्गको बुलाओ! यह घटना जो हुई है मेरे सुपने से ठीक ऐसी मिलती है कि मुझे इस बात के विश्वास करने से क्लेश होता है कि वह सुपना सच्चा निकला है। उजियाला करो! मैं कहता हुं उजियाला करो! (ऊपर से चलाजाता है।)

यागो-(रौदारिगो से) अच्छा प्रणाम, मुझे अब तुम्हारा साथ छोड़ देना चाहिये। यह उचित नहीं जान पड़ता है और मेरे पदके भी अनुकूल नहीं है कि मैं यहीं ठहर कर मूरके विरुद्ध साक्षी बनूं। यदि मैं यहाँ ठहरा तो अवश्य ऐसा होगा। क्योंकि मैं जानता हूं कि चाहे कितनी ही बड़ी घुरकी धमकी उसको इस विषय में मिल जाय, राजसभा उसको निर्भय होकर निकाल नहीं सकती है। इस कारण से कि साइप्रसकी लड़ाइयों में जो अभी छिड़ी हैं उसका नियोजन होगया है और अपनी आत्मरक्षा के लिये उनको इन लड़ाइयों में उसका सेनापति बनाना अत्यन्त आवश्यक है। इस महत् कार्य्य को करनेके लिये उसकी पहुँच का और कोई दूसरा उनके पास नहीं है। इस बात का विचार करके, यद्यपि मैं उससे नरक के समान घृणा रखता हूं तथापि अपनी वर्तमान आजीविका के निमित्त मुझे उसके प्रेमपताका और चिह्न अवश्य दिखलाने चाहियें, चाहे वे चिह्नमात्र ही हों। इस अन्वेषणमंडली को जो तुमने एकत्रित की है छावनी में लेजाना। वह तुमको वहाँ निःसन्देह मिलेगा और मैं भी उसके साथ वहाँ हूंगा। अच्छा प्रणाम। (जाता है।)

(मसालों को लिये हुये सेवकों के साथ ब्रवंशो नीचे आता है।)

ब्रवंशो—यह अत्यंत सत्य दुर्घटना है, वह निकलगई है और अब

मेरे जीने का कुछ स्वाद नहीं है, मेरा जीवन,शोक और दुःख में ही कटेगा। अच्छा रौदरिगो, तुमने उसको कहां देखाथा? हा भाग्य-हीन बेटी! तू कहता है मूरके साथ देखाथा? जो उसके बाप होने के योग्य है। तुझको कैसे जान पड़ा कि वह वही है? हाय उसने मेरे साथ ऐसा छल किया है कि जिसकी संभावना नहीं होसकती थी। उसने तुझसे क्या कहा था? अरे और मोमबत्ती लाओ! मेरे सब बन्धुओं को जगाओ! क्या तू समझता है कि उनका व्याह होगया है?

रौदरिगो–मैं समझता हूँ कि उनके व्याहकी बात पक्की है।

ब्रवंशो–हे परमेश्वर, न जाने वह कैसे बाहर निकली? हा! रुधिर का विद्रोह! अरे बेटियों के बापो! आजसे उनका खाली बाहरी आच-रण देखकर,उनके मनोंका विश्वास मत करो। क्या ऐसा जादू टोना नहीं है कि जिससे एक नवयौवना कुमारी की शारीरिक व मानसिक शक्तियां मोहित की जाकर वह माया और मिथ्या भावनाओं के वशीभूत की जासके। रौदरिगो, क्या तुमने कभी ऐसे विषय नहीं पढ़े हैं?

रौदरिगो–हाँ! महाशय मैंने पढ़े तो हैं।

ब्रवंशो—मेरे भाई को बुलाओ। हा! रौदारिगो, कैसा अच्छा होता कि वह तुम्हारे पल्ले पड़ती, कोई इस सड़क से चलो, कोई उस सड़कसे चलो। (रौदारिगोसे) तुम जानते हो कि हम उसको और मूर को कहाँ पकड़ पावेंगे।

रौदरिगो--यदि आप कृपा करके हट्टे कट्टे चौकीदारों को उसके पकड़ने के लिये मेरे साथ करदें तो मैं समझता हूं कि मैं उनका पता लगा दूँगा।

ब्रवंशो–कृपापूर्वक तुम आगे २ चलो। मैं प्रत्येक घरके लोगों को बुलाऊँगा। मेरा पद ऐसा है कि नगर--निवासियों में से थोड़ेही लोग मेरे साथ आने से इन्कार करेंगे। अरे! अस्त्र शस्त्र ले आओ

और रात के विशेष पहरेवाले कर्म्मचारियों को बुलाओ। प्रिय रौदरिगो ! तुम आगे चलते रहो। तुमने मेरे लिये जो क्लेश उठाया है मैं इसका प्रत्युपकार करूँगा। (सब जाते हैं।)

दूसरा दृश्य। वही वेनिस। दूसरी गली।

(ओथेलो, यागो और अनुचरोंका मसालोंके साथ प्रवेश।)

यागो--यद्यपि मैंने लड़ाई के व्यवसाय में कई मनुष्यों को मारा है तथापि द्वेषके साथ किसी का वध न करना, मैं विवेक का मूल तत्त्व समझाता हूँ। किसी समय मुझमें वह हृदय की दुष्टता नहीं रहती है जिसके द्वारा मैं कृतकार्य्य होजाऊँ। नौ या दस बार मैंने यहाँ उसकी पसली के नीचे चाकू घुसेड़ने की ठहराई थी।

ओथेलो--अच्छा हुआ, तुमने ऐसा नहीं किया।

यागो--नहीं, क्योंकि उसने ऐसा बकवाद किया है और श्रीमान् को ऐसे कटु और प्रकोपक शब्द प्रयोग किये हैं कि यद्यपि मैं बड़ा साधु व्यक्ति नहीं हूँ तो भी मैं उसके वध करने से अपने तईं बड़ी कठिनताई से रोक सका हूँ। पर महाराज ! मैं आपसे विनीत भाव से पूछता हूँ कि क्या आपका विवाह हो चुका है ? आप इस बात को निश्चय समझें कि वह राजसभासद् सबका बड़ा प्रिय है और उसकी वाणी इतनी प्रतिभाशाली है कि उसका प्रभाव राजसभापति से भी दूना पडता है। वह आपका विवाहोच्छेद करा देगा या आपको इतना कष्ट देगा और आपका इतना प्रतिरोध करेगा जिसका कि दंड शासन विधिसे (जिसका वह भरशक्य प्रवर्त्तन करेगा) करने का उसको अवसर मिलेगा।

ओथेलो--वह अपनी खुन्नस जितनी चाहे निकाल ले। वे अच्छी सेवायें जो मैंने राजसभाकी की हैं ऐसी हैं कि जब वह मेरा अपवाद करेगा, उसके मुँह को बंद कर देंगी।

यह बात अभी प्रकट होनेसे रह गई है (जिसको-जब मैं समझूँगा कि अभिमान करनेसे मान होता है, तब प्रकाशित करूँगा) कि मेरा जन्म राजवंश में हुआ है। और चाहे मेरे सिरपर मुकुट नहीं बंधा है, मेरे श्रेष्ठ गुण ही इस बात की साक्षी देंगे कि मैं इस महान् ऐश्वर्य के योग्य हूँ जो देशदामिनीके परिणय से मुझे प्राप्त हुआ है। क्योंकि, यागो ! तुम इस बातको ठीक समझो कि यदि मैं उस कुल-वंती को वास्तव में प्यार न करता तो सारी उदधि की संपत्ति के बदले भी मैं अपनी निश्चिन्त और स्वतंत्र दशाको छोड़कर गृहस्थ के बंधन में न पड़ता। पर देखो तो वे उजियाले उधर कैसे आरहेहैं ?

यागो—वे सोतेसे जगाए हुए श्रीमती देशदामिनीके पिता और उसके मित्र हैं। यह बहुत अच्छा होता कि आप भीतर चले जाते।

ओथेलो—मैं भीतर नहीं जाऊँगा। मेरे लिये छिपना ठीक नहीं होगा। मैं अपने तई इस भाँति प्रकट करूँगा जैसे कि मेरे स्वाभाविक गुण, शीलता, उच्चपद और शुद्ध अंतरात्मा के अनुकूल है। क्या वे ही हैं ?

यागो—जेनस*की शपथ, मैं समझताहूँ वे ही हैं।

(मसालों को लिए हुए कुछ राजकर्म्मचारियों के साथ केसियोका प्रवेश।)

ओथेलो—राजसभापतिके सेवक और मेरे सहकारी आये हैं। प्रिय मित्रो ! यह रात्रि आप लोगोंको मंगलमय हो ! क्या समाचार हैं?

केसियो—सेनापति महोदय, राजसभापति महाशयने आपका अभिनन्दन किया है और कहला भेजा है कि आप श्रीमान् अभी उनसे भेंट करें।

ओथेलो—तुम्हारी समझ से क्या कार्य्य है ?

केसियो—जहांतक मैं अनुमान करता हूँ कुछ साइप्रसकी वार्त्ता है। वह अत्यन्त ही आवश्यक काम है। जहाज़ी बेड़ेसे आजही रात

* जेनस=एक दोमुखीदेवी।

धड़ाधड़ बारह दूत एक दूसरे के पीछे यहाँ आपहुँचे हैं। और कईएक राजमंत्री सोतेसे जगाए जाकर राजसभापति के सन्निकट एकत्रित होचुके हैं। आपका बड़ा तुरन्त बुलावा आया है। जबकि आप अपनी कोठीपर न मिले तो राजसभाने तीन अलग २ सिपाहियोंकी टोलियां भिन्न २ दिशाओंमें आपको ढूंढने के लिये भेजीहैं।

ओथेलो—अच्छा हुआ कि आपलोग मुझको मिलगये। मैं थोड़ा घरमें एक बात कह आताहूँ और फिर आप लोगोंके साथ जाऊँगा।

(जाता है।)

केसियो—पताकावाहक ! वे यहां पर क्या कर रहे थे ?

यागो--सचमुच उन्होंने आजरात एक स्थलमें चलने वाली बड़ी भारी नाव पकड़ पाई है। यदि वह न्याययुक्त युद्ध-जित*सिद्ध होगई तो उनके सदाके लिये पौ बारह जुग अट्ठारह होगए हैं ?

केसियो—मैं तुम्हारा कहना नहीं समझता।

यागो—उनका विवाह होगया है।

केसियो—किसके साथ ?

(ओथेलो का पुनः प्रवेश।)

यागो—मरियमकी शपथ + उनका—के साथ ब्याह हुआ है। आइये सेनापति महाशय, क्या आप चलेंगे ?

ओथेलो—मैं तुम्हारे साथ चलने के लिए प्रस्तुत हूँ।

केसियो—यह दूसरी सिपाहियों की टोली आप के ढूँढने के लिए आती है।

यागो—वह ब्रबंशो है। सेनाध्यक्ष महोदय सचेत रहिये। वह बुरे अभिप्रायसे आरहा है।

---

* यह लड़ाई की भाषा है। किसीसमय युद्धमें कोई नाव पकड़ी जाती है और जो वह वैरीकी निकल आवे तो न्याययुक्त युद्धजित होती है नहीं तो नहीं।

+मरियम=ईसाइयों के प्रभु ईसामसीह की माता।

(ब्रबंशो, रौदरिंगो, और राजकर्म्मचारियोंका शस्त्रों और मसालों के साथ प्रवेश ।)

ओथेलो–ग्रहो ! देखना आगे मत बढ़ना !

रौदरिंगो–महाशय ! मूर वो है ।

ब्रबंशो–उसको मारडालो वह चोर है ।

(दोनों पक्षवाले शस्त्र निकालते हैं ।)

यागो–तुम रौदरिंगो हो न? चले आओ महाशय, मैं तुमसे लड़ूँगा।

ओथेलो–अपनी चमकती हुई तलवारोंको म्यानों में बंद करदो नहीं तो ओसके उनपर जंग लग जाएगा । सुजन राजसभासद् ! आपके शस्त्रों की अपेक्षा आपकी वृद्धावस्था अधिकतर आदरणीय है ।

ब्रबंशो–अरे नीच चोर ! मेरी बेटीको कहां बंद करके रख आया है ? दुष्टात्मा जैसा कि तू है तूने जादू टोने से उसका वशीकरण किया है । प्रत्येक बातपर विचार करने से यह प्रत्यक्ष है कि देशदामिनी सरीखी कुमारी ऐसा कार्य्य कदापि नहीं करती जैसा कि उसने किया है, यदि वह किसी बुरे तंत्र मंत्र के पाश में न फाँसी जाती । यह बात ऐसी स्पष्ट है कि इसपर युक्तियुक्त शंका हो नहीं सकती । अन्यथा कहीं यह संभव था कि एक ऐसी कुमारी जो लघुवयस्का सुन्दरी और आनन्दमूर्त्ति थी, जो ब्याहकी ऐसी विपक्षी थी कि अपनी जाति के मनोहर घुंगरीले केशवाले धनी लड़कों से भी अलग रहती थी, कभी ऐसा काम करती जिससे वह संसार में हास्यास्पद होती और अपने पिताकी रक्षा से निकल कर तुझ ऐसे काले भुतनेका गलेका हार बनती जिसकी आकृति रिझाती नहीं बरन खिजाती है । सारे संसारके लोग इस विषय में मेरा न्याय करेंगे कि वास्तव में यह बात विश्वासयोग्य है या नहीं कि तूने उसके लिये निषिद्ध अभिचार*किया है और ऐसी औषधियों या

धातुवोंसे जिनसे मानसिक शक्तियाँ भ्रष्ट होती हैं उसके नवयौवन को बिगाड़ा है। मैं इस विषय पर वाद-विवाद कराऊँगा। यह बात संभव है और विचार करने से स्पष्ट हो जाएगी। इस वास्ते मैं इस अपराधके लिये कि तू जगत्का अहितकारी है और निषिद्ध गारुड़ी-कला*का नीति विरुद्ध चलाने वाला है तुझको पकड़ता हूँ और बंदी बनाताहूं। उसको पकड़लो, और यदि वह रोक टोक करे तो उसको मारपीट करके वश में करो।

ओथेलो—हूँ! हूँ! हूँ! कोई व्यक्ति चाहे वह मेरे पक्षका हो या विपक्षी हो हाथ मत उठाना। यदि मेरा भाग लड़ने का होता तो मैं विना किसी सुझाने वाले के ही लड़ बैठता। आप मुझको इस अभिशाप के प्रतिवाद करने के लिए कहां लेजाना चाहते हैं?

ब्रवंशो—बंदीगृहमें, जबतक कि न्यायविधिके अनुसार इस अभियोगको सुनने के लिए कोई दिन स्थित न हो, और प्रतिवाद के वास्ते तेरे उपस्थित होनेकी आज्ञा न हो।

ओथेलो—मानलीजिए कि मैं आपका कहना करूं तो इसका क्या परिणाम होगा? इससे राजसभापति, जिनके दूत मेरी बगल में खड़े हैं और किसी अभी होनेवाले राजकार्य्य के संबंध में मुझे वुलाने के लिये आरहे हैं, कैसे प्रसन्न होंगे?

पहिला राजकर्म्मचारी (ब्रवंशो से) महामान्य राजसभासद्! यह सच्ची बात है। श्रीयुत राजसभापति राजसभा में सुशोभित हैं। और मुझे निश्चय है कि आप श्रीमान्के लिएभी बुलावा गया है।

ब्रवंशो—हैं! क्या राजसभापति राजसभा में हैं! और ऐसे रातके समय? अच्छा उसको ले आओ। मेरा कार्य्य ऐसा वैसा नहीं है।

---

* गारुड़ीकला=जादूगिरी।

राजसभापति, क्या मेरे कोई सहकारी राजसभासद् भाई भी जो अन्याय कि मेरे लिये हुआ है उसको अपने ही लिये होना अनुभूत करेंगे। क्योंकि यदि ऐसे दुष्टकाम स्वच्छन्दता से होने दिये जायेंगे तो बंधे हुए दास और अन्यमतावलंबी लोग हमारे राजमंत्री होंगे। (जाते हैं)

---

* तीसरा दृश्य। वही *

(एक राजसभाका दालान।)

(राजसभापति और राजसभासद् लोग एक मेजके आस पास बैठे हैं और राजकर्म्मचारी सामने खड़े हैं।)

राजसभापति—ये समाचार ऐसे असंगत हैं कि विश्वासयोग्य नहीं समझे जाते।

पहिला सभासद्—निःसन्देह उनकी विध नहीं मिलती। मेरी चिट्ठियों में एकसौ सात जहाज़ लिखे हैं।

राजसभापति—और मेरी चिट्ठियों में एकसौ चालीस।

दूसरा सभासद्—और मेरी चिट्ठियों में दोसौ। पर यद्यपि गिनती में उनकी टक्कर ठीक नहीं मिलती है (जैसे कि ऐसे अवसरों पर जहां कि खाली अटकल से सूचना दीजाती है बहुधा भेद हो ही जाता है) तथापि इस बातकी सब पुष्टता करते हैं कि तुर्कोंका जहाज़ी बेड़ा आया है और उसका लक्ष्य साइप्रस है।

राजसभापति—हाँ यह ठीक है। इस विषय पर विचार करने से यह संभव प्रतीत होता है। सूचना में संख्या के विषय जो विरोध है उससे मेरा मन निश्चिन्त नहीं होता है, किन्तु मुझे भय है कि यह समाचार मुख्यांश में सच्चा है।

(नेपथ्यमें) मल्लाह-कोई है ! कोई है !! कोई है !!!

पहिला राजकर्म्मचारी-जहाज़ी बेडे से एक दूत आया है।

(मल्लाह का प्रवेश ।)

राजसभापति-अच्छा किस कामके लिये आया है ?

मल्लाह--तुर्कोंके बेड़ेने रोड्स टापू की ओर प्रस्थान किया है इसकी सूचना राजसभाको देनेके लिये राजमन्त्री अनजीलो महाशयने मुझे यहां भेजा है।

राजसभापति--इस परिवर्तन के विषयमें आपकी क्या अनुमति है ?

पहिला सभासद्--विवेचन की कसौटी में रखने पर यह सूचना झूठी ठहरती है । यह एक खाली दिखलावा हमको धोखेमें रखने के लिए किया गया है । जब कि हम इस बातपर विचार करते हैं कि तुर्कों के लिए साइप्रस कितना आवश्यक है, और यह बात भी समझते हैं कि रोड्स की अपेक्षा उनका उससे अधिकतर संबन्ध है और वे विना बड़े प्रयास के उसको जीत सकते हैं, क्योंकि वह लड़ाई के लिये सुसज्जित नहीं है और उसमें उस सब रक्षा की सामग्री की भी न्यूनता है जो रोड्स में है । तो इन बातों पर ध्यान देनेसे तुर्क हमको ऐसे अनाड़ी नहीं सूझते हैं, कि वे अपने उस अर्थ की बातको पीछे को छोड़दें जो उनको पहिले करनी चाहिये और ऐसी लड़ाई छेड़कर कि जिससे उनका लाभ नहीं है एक सहज और साथही लाभकारी काम की उपेक्षा करें।

राजसभापति-हाँ,यह निश्चय है कि उनकी दृष्टि रोड्स पर नहीं है।

पहिला सभासद्--और समाचार आए हैं।

(एक दूतका प्रवेश)

दूत-दयाशील भगवन् ! रोड्स के टापू की ओर सीधे मार्ग से जाकर, तुर्क लोग वहाँ एक पृष्ठ भागके बेड़ेसे मिलगये हैं।

पहिलासभासद्-ठीक है, मैंने ऐसा ही सोचा था। तुम्हारे अनुमान से वे कितने हैं ?

दूत--तीस जहाज़ हैं और अब वे फिर उस मार्ग से जिससे वे आयेथे पीछेको लौटे हैं और उनका लक्ष्य अब प्रकटरूप से साइप्रस है। श्रीमान् के विश्वासपात्र और महान् वीर कर्म्मचारी श्रीयुत मौनतेनो महाशयने विनीत और नम्रभाव से यह संदेशा श्रीमान् के लिये भेजा है और प्रार्थना की है कि महाराज उसकी सत्यता के विषयमें सन्देह न करें।

राजसभापति-तो यह ठीक है कि उनका दांत साइप्रस पर है क्या मारकसल की कोस नगरमें नहीं है ?

पहिला सभासद्--वह इस समय फ्लोरेंस में है।

राजसभापति-अच्छा हमारी ओर से चिट्ठी लिखो और उस को तुरन्त भेजदो।

पहिला सभासद्-वे श्रीमान् ब्रवंशो और शूरवीर मूर आरहे हैं।

(ब्रवंशो, ओथेलो, यागो, रौदरिगो और राजकर्म्मचारियोंका प्रवेश)

राजसभापति--शूरवीर ओथेलो। हम आपका नियोजन सीधे सर्वसाधारण वैरी तुर्क के विरुद्ध करना चाहते हैं। (ब्रवंशो से) श्रीयुत महाशय, मैंने आपको नहीं देखा था। आप अच्छे समय पर आये हैं। हमको आज रात आपके परामर्श और सहायता की बड़ी आवश्यकता थी।

ब्रवंशो-आपकी सम्मति और सहायता की ऐसी ही आवश्यकता मुझको भी थी। दयालु श्रीमान्! मुझे क्षमा कीजिये, न तो मेरे पद के कर्त्तव्य ने और न राजकाज की किसी ऐसी बातने जिसको मैंने सुनाहो, मुझे आजरात शय्यासे उठाया है और न

सर्वसाधारण चिन्ता ही से मैं ग्रसित हूँ, क्योंकि मेरा अपना ही शोक एक प्रचंडधारा के समान अपने ही साथ प्रत्येक वस्तु को बहा लेजाता है और अन्य सब शोकों को इस भाँति अपने में निमग्न करलेता है कि उनके सब चिह्न तक लोप होजाते हैं, और इसपर भी उसका अपना प्रवाह जैसेका तैसा बना रहता है। मानो इस में अन्यत्र से और कोई वस्तु ही सम्मिलित नहीं हुई।

राजसभापति-क्यों ! क्या बात है ?

ब्रवंशो-हा ! मेरी बेटी हा ! मेरी लाड़ली !

राजसभापति और राजसभासद्-क्या स्वर्गलोक को पधार गई ?

ब्रवंशो-हाँ मेरे लिये वह मृतवत् है। वह तंत्र मंत्रों से और छद्म वैद्यों से मोल लीहुई औषधियों से बिगाड़ी जाकर मुझसे चुराई गई है और भ्रष्ट कीगई है। जब कि वह किसी बातमें हीन नहीं थी, अंधी नहीं थी और न मंदबुद्धि ही थी तो बिना जादू टोनेके प्रभाव के वह प्रकृति के विपरीत कदापि ऐसी भूल न करती।

राजसभापति--वह जो कोई हो, जिसने ऐसा कुत्सितव्यवहार करके आपकी लड़कीको अपने आपेसे बाहर किया है और आपसे चुराया है, उसका न्याय आपही न्यायाध्यत्त और वृत्ति-कार बनकर करेंगे और न्यायव्यवस्था की कठोरधारा उसको पढ़कर सुनायेंगे। हाँ चाहे वह व्यक्ति जिसपर आपने अभिशाप लगाया है हमाराही लौता लड़का क्यों न हो।

ब्रवंशो-मैं नम्रभाव से आप श्रीमान् का धन्यवाद करता हूँ। वह व्यक्ति यहाँ है और वह यह मूर है, जो ऐसा विदित होता है कि आपकी आज्ञा विशेष से राजकाज के लिये यहां बुलाया गयाहै।

राजसभापति और सभासद्-हम लोगों को इस बातका बड़ा खेद है।

राजसभापति--(ओथेलोसे) । तुमको इस विषयमें अपने पक्षसमर्थन में क्या कहना है ?

ब्रवंशो--उन बातों के अतिरिक्त जो कि मैंने आपसे कही हैं और वह क्या कह सकता है ?

ओथेलो–महान् शक्तिमान्, धीर गम्भीर और पूज्य राजसभासद्‌गण, मेरे महान् उदार और परीक्षित कृपालु स्वामियो ! मैं इन वृद्ध महाशय की लड़की को लेआयाहूँ, यह बात बहुत सत्य है, सचमुच मैंने उस के साथ विवाह कर लियाहै। बस यही मेरा मुख्य अपराध है और कुछ नहीं है । मेरी वाणी रूक्ष है और उसमें शान्तिरस की मधुर-वाक्यप्रणाली किंचित् ही सम्मिलित है । क्योंकि, जबसे इन बाहुओं ने मेरे सात बरस की अवस्था की शक्ति पाई थी तबसे आजतक बीच में नौ मास छोड़कर उन्होंने तंबुओं से आच्छादित रणभूमि में ही अपना उत्कृष्ट परिश्रम किया है । और लड़ाई भिड़ाई के कामों के अतिरिक्त इस महान् जगत्‌के व्यवसायों के विषय में बहुत थोड़ा ही कह सकता हूँ, और इसलिये अपने संबन्ध में कहने में मैं अपने पक्षका कुछ ही समर्थन कर सकूँगा। तो भी आपके कृपापूर्वक ध्यान लगा कर श्रवण करनेसे मैं आपको अपने प्रेम प्रसंग की सीधी सादी कहानी सुनाऊँगा, जिससे आपको विदित होजायेगा कि मैंने किस तंत्र मंत्रसे, किस प्रबल जादू टोनेका प्रयोग करके जिसका कि अभिशाप मुझ पर लगाया गया है, इनकी कन्याको वशीभूत किया है ।

ब्रवंशो–एक ऐसी कुँवारी, जिसमें ढिठाई का नाम नहीं था, जो ऐसे शान्त और शील स्वभाव की थी कि एक छोटे से छोटे तुच्छ काम करने में भी लजाती थी । वह कभी अपने स्वभाव के, वयस् के, देश के, मानके और प्रत्येक वस्तु के विरुद्ध एक ऐसे व्यक्ति के प्रेममें मुग्ध होती जिसकी सूरत देखकर वह डरती थी ! कदापि नहीं !

यदि कोई यह बात स्वीकार करे कि ऐसी सर्वगुणसम्पन्ना सुन्दरी, प्रकृति के नियमसे विरुद्ध इस भाँति दुराचरण करे तो उस की विचारशक्ति भ्रष्ट और अत्यन्त कच्ची ठहरेगी और उसको विवश होकर मानना पड़ेगा कि इसका कारण धूर्त्त पैशाची लीला ही है। इस लिये मैं फिर भी इस बातकी दुहाई करता हूँ कि किसी ऐसे चूरनसे जिसका रुधिर पर बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है या ऐसे आसवसे जो इसी हेतु मंत्रित किया गया था, इसने उसको वशीभूत किया है।

राजसभापति–इसकी दुहाई करना ही प्रमाण नहीं है, इसके लिये अधिकतर प्रबल और प्रत्यक्ष प्रमाण दीजिये, यह रंग जो आप इस प्रस्ताव पर चढ़ाते हैं और यह थोथी संभावनाएं जो सामान्य कक्षाकी भासित होती हैं काम न देंगी।

पहिला सभासद्–पर ओथेलो! कहो क्या तुमने दूषित और दारुण उपायोंसे इस नवयौवना सुन्दरी के मनको वशीभूत किया और बिगाड़ा है? अथवा यह बात प्रार्थनासे या इस भाँति के परस्पर प्रिय वार्तालापसे कि जिससे एक हृदय दूसरे हृदयसे आकर्षित होता है, हुई है?

ओथेलो–मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप इस कुलबधू को छावनीसे राजसभामें बुला भेजिये और उसको अपने पिताके सन्मुख सब विस्तार कहने दीजिये। यदि उसके कथन से आपको यह विदित हो कि मैंने छल कपट किया है तो वह विश्वासपात्रता और वह पद जो आपने मुझको दे रक्खे हैं मुझसे छीन लीजिये, वरन मुझे प्राणदंडकी आज्ञा भी देदीजिये।

राजसभापति–देशदामिनी को यहां बुलालाओ।

ओथेलो–पताकावाहक! उसको मार्ग दरसावो, तुम उस स्थान

को ठीक जानते हो (यागो और अनुचरलोग जाते हैं)। और जब तक कि वह आती है मैं आप महानुभावों के सामने उन उपायोंको जिनसे कि मैं उस कुलाङ्गना का प्रेमभाजन बनाहूँ और वह मेरी बनी है; इस भाँति स्पष्टरूपसे स्वीकार करना चाहता हूँ, जैसा कि मैं परमेश्वरके समीप अपने पापों को स्वीकार करता।

राजसभापति—अच्छा ओथेलो उनका वर्णन करो।

ओथेलो—उसके पिता मुझे प्यार करते थे, मुझे बहुधा अपने घर बुलाया करते थे और मुझसे निरन्तर मेरे जीवनकी वर्ष प्रति-वर्ष की कहानियाँ तथा जिनमें मैं रहा था उन लड़ाइयों,परिवेष्टनों* और विजयोंका वर्णन पूछा करते थे। मैं सब कथा अपने बचपनके समयसे और ठीक उस घड़ीतक की, जब कि वे मुझसे पूछते थे, कहदेता था। उसमें मैं बड़ी भारी दुर्घटनाओं का, जल और स्थल के उद्दीपक संयोगोंका, दुर्ग को तोड़कर वहाँ प्रवेश करने में मृत्यु के मुँहसे बाल २ बचनेका, उद्धत बैरियोंसे पकड़े जाने और दासत्व में बेचेजानेका, वहाँ से छुटकारा पानेका और यात्राओं में अपने आचरणका इतिहास उनको सुनाता था। इस इतिहासमें भारी कंदराओं का,उजाड़ मरुभूमिका,कठोर पत्थर की खानों,चट्टानों और उन पर्वतों का जो आकाश से बातें करते हैं,वर्णन मुझे करना होताथा। कथा-क्रम ऐसाही था। और उसमें उन मनुष्यभक्षकों का जो एक दूसरे का खाते हैं, उनके राक्षसी व्यापारों का और उन मनुष्यों की चर्चा भी कि जिनके सिर उनके कंधेके नीचे होते हैं; होती थी। इसको सुननेके लिये देशदामिनी बड़े चाव से आतीथी।पर घरके धंधोंके कारण उसको सदैव वहांसे चलाजाना पड़ता था, जिनको चटपट पूरा करके वह फिर वहाँ आजाती थी,और एकटक होकर मेरा वार्त्तालाप

* परिवेष्टन=घेरा, मुहासरा।

बड़ी श्रद्धासे सुनती थी । इस बातको ताड़कर मैंने एक अच्छा अवसर ढूँढा,जब उसको इसके सुननेका सुअवसर मिला और इस अच्छे उपाय से उसको अपनी गहरी हार्दिक प्रार्थना को मुझसे कहने का साहस हुआ कि मैं अपनी यात्राका आद्योपान्त वृत्तान्त उसको भलीभाँति सुनाऊँ, जिसका कि कोई २ अंश उसने सुन रक्खा था, पर पूरा ध्यान लगाकर नहीं सुनाथा । मैंने इस बातको स्वीकार किया । जब मैं किसी बड़ी भारी उस विपत्ति का जो मेरी यौवनावस्था में मुझपर पड़ी थी,वर्णन करता था तो उसको सुनकर बहुधा उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगजाती थी । जब मेरी कथा पूरी होगई तो मैंने उसके कहने में जो कष्ट उठाया था उसका पारितोषिक उसने वारंवार दीर्घ निश्वास लेकर दिया । उसने उत्साह से प्रकट किया कि "सचमुच यह विचित्र कथा है, महान् आश्चर्यजनक है, यह करुणायोग्य है, कुतूहलभरी करुणायोग्य है, इसको न सुनती तो अच्छा था । मैं चाहती हूँ कि विधाता मुझ को स्त्रीका जन्म न देकर ऐसा पुरुषसिंह बनाता । मैं आपका धन्य-वाद करती हूँ" । उसने मुझसे फिर आग्रह करके कहा कि "यदि आपका कोई ऐसा मित्र हो जो मुझसे प्रेम रखता हो तो बस आप उसको अपना उपाख्यान सुनाना सिखला दीजिये, मैं इससे उसके प्रेमबंधन में पड़ जाऊँगी" । इस संकेत को पाकर मैंने उससे अपने मनकी अभिलाषा प्रकट करदी । वह मुझको उन आपत्तियों के कारण जो मैंने झेली थीं प्यार करने लगी और मैं उस करुणा के लिये जो उसने उनपर प्रकट की उसको प्यार करने लगा । यही तंत्र मंत्र है जिसका प्रयोग मैंने किया है । लीजिये, वह कुलवधू आरही है, वह अपने आप इसकी साक्षी देगी ।

(देशदामिनी, यागो और अनुचरों का प्रवेश ।)

राजसभापति—मैं सोचता हूं कि मेरी कन्या भी इस आख्यायिका को सुनकर वशीभूत होजाती । सुजन ब्रवंशो ! भागते भूतकी लँगोटी हाथ करो । तुम्हारी कन्या लौटकर नहीं आसकती । उसके चले जानेका शोक न करो किसी हथियार से न लड़ने की अपेक्षा टूटे हुए हथियार से लड़ना अच्छा होता है ।

ब्रवंशो—मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप उसका कथन सुनलें । यदि मूरके कथनानुसार मेरी कन्या स्वीकार करले कि वह अपनी ओरसे विवाह की अभिलाषिणी हुई थी तो मैं उसपर कोई दोषारोपण नहीं करूँगा और जो ऐसा करूँगा तो मेरा सत्यानाश होजावे। (देशदामिनी से) अच्छा गुणशील कुमारी ! यहां आवो, तुम इस महासभा में देखती हो कि किसकी आज्ञापालन करना तुम्हारा परम धर्म्म है ?

देशदामिनी—पूज्य पिताजी ! मैं देखती हूँ कि यहाँ मेरा कर्त्तव्य-कर्म्मविभक्त है । मैं जीवन और शिक्षाके लिये आपकी कृतज्ञ हूँ । मेरे जीवन और शिक्षा दोनोंने मुझे सिखलाया है कि आप कितने आदरणीय हैं । पिताका जितना आज्ञापालन होना चाहिये उसके आप भागी हैं । इस सीमा तक मैं आपकी लड़की हूँ । किन्तु यहाँ मेरे भर्त्ता मूर महाशय उपस्थित हैं और अपने पिताकी अपेक्षा जितना आज्ञापालन आपका मेरी माताजी करती थीं ठीक उतना ही इनका आज्ञापालन करना मेरा धर्म्म है, कि जो मेरे प्राणपति हैं ।

ब्रवंशो—परमेश्वर तेरा भला करे, मेरा काम पूरा होगया । माननीय राजसभापतिजी कृपया राजसम्बन्धी कामकाजों की ओर ध्यान दीजिये । क्या अच्छा होता यदि मेरी कोई सन्तान ही न होती और न किसी को गोद लेलेता । अच्छा मूर इधर आवो, मैं इस कन्याको

जिसे मैं सर्वात्मना तुझसे अलग रखता, सर्वथा तुझको अर्पण करता हूँ, क्योंकि वह तेरी होचुकी है। (देशदामिनी से) सुशीले! तेरे निमित्त मैं इस बातको देखकर अपने अन्तःकरण से प्रसन्न हूँ कि मेरी और कोई संतान नहीं है, नहीं तो तेरे इस भांति चले जानेसे मैं उसको निठुरता से ऐसे दृढ़ बंधनमें रखता कि वह तेरा अनुकरण नहीं करसकती। (राज सभापतिसे) श्रीमान् मेरा काम होगया है।

राजसभापति–अच्छा मुझे भी अपनी भांति इस विषयमें अपना निर्णय सुनाने दीजिये और कुछ नीतिके वचनों का उल्लेख करने दीजिये, जिससे इस प्रेमी प्रेमिका की युगल जोड़ी को आपका कृपापात्र बनने में कुछ थोड़ी सहायता मिलसके।

जिस दुखके मिटनेकी आशा हो, पहिले वह मिटता तब।
घोरविपद के आने पर नहिं, औषधि कोई चलती जब॥
उस आपद पर सिरधुनना, जो बीतगई घर चली गई।
सुगम बाट है सिरपर लाने, की फिर आपद नई नई॥
जो नहिं रक्षित रह सकता है, दैव उसे जब हरता है।
धीरज ऐसी दैवमार को, हँसी खेजवत् करता है॥
चोरी होने पर जो हँसता, तस्कर से कुछ लेता छीन।
वह अपनी ही चोरी करता, जो रहता है व्यर्थ मलीन॥

अवंशो–सो तुर्कोंको संप्रसटापू, हम से लेने दीजै छीन।
इसमें नहिं है हानि हमारी, जो हँसने में हों हम लीन॥
नीतिवचन हैं उसे सुहाते, जिसे शोक नहिं खेना है।
श्रवणमात्र का निर्भय सुखही, जिसे उन्हे सुनलेना है॥
पर वह सहता एक साथही, नीति शोक दोनोंका भार।
दुख निपटाने को है लेता, दीन धैर्य्य का जो आधार॥

नीतिवचन ये कहे गये जो, सुख देवें या दुःख महान्।
पुष्ट पक्ष दोनों में होनेसे, दो अर्थी पड़ते जान॥
शब्द शब्द ही होते मैंने, किसी समय यह सुना नहीं।
दग्ध हृदय जो वचन श्रवणसे शान्त हुआ हो कभी कहीं॥

मैं नम्रभाव से विनती करता हूँ कि अब आप राजकाज की ओर लगिये।

राजसभापति–तुर्क लोग युद्धकी बड़ी भारी तय्यारियां करके साइप्रस पर चढ़े हैं। ओथेलो! तुम वहाँ के दुर्ग आदिका व्यौरा सब से अच्छा जानते हो। और यद्यपि वहाँ हमारा एक बड़ा योग्य प्रतिनिधि है जो सब कुछ काम करसकता है तौ भी सर्वसम्मति, जिस के अनुसार हमको ऐसे विषयों में चलना चाहिये, यही कहती है कि तुम्हारे वहाँ भेजने में अधिकतर कुशल है। इसलिये तुमको चाहिये कि विवाह के अनन्तर जो आनँद प्रमोद होते हैं उनमें बाधा पड़ने का कुछ विचार न करके तुम संतोष से इस आवश्यक और कठिन काममें कटिबद्ध होजावो।

ओथेलो–महान् विचारशील सभासद् महोदय! निष्ठुर व्यवहार से युद्धरूपी इस्पात*का कठोर बिछौना मेरे लिये अत्यन्त कोमल रोमों की शय्यासमान होगया है। मैं स्वीकार करता हूँ कि कठिन कार्य्यों को करने के लिये तुरन्त उद्यत होनेकी मेरी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। और मैं तुर्कोंके विरुद्ध इस वर्त्तमान युद्धमें जाऊँगा। इसलिए मैं एक प्रार्थक की भांति निवेदन करता हूँ कि मेरी स्त्री के लिये पुरस्कार, वेतन, निवासस्थान और परिचरों का यथोचित प्रबंध उसकी उच्च पदवी के अनुकूल कियाजाय।

---

* इस्पात=लोहविशेष, जिस पर गर्मी आनेसे अग्नि भवक जाती है।

राजसभापति–क्यों ? वह अपने पिता के भवन में रहसकती है।

ब्रवंशो–मैं उसे अपने यहां नहीं आने दूँगा।

ओथेलो–मैं भी उसे वहाँ रखना नहीं चाहता।

देशदामिनी–मेरी भी यह इच्छा नहीं है। अपने पिता की दृष्टि में रहकर उन्हें विषादपूर्ण बातों की सुध बार २ दिलाने को मैं वहां नहीं रहूँगी। कृपासिन्धु राजसभापति जी, मैं अपनी जो अभिलाषा प्रकट करती हूँ उसको अनुग्रह करके ध्यान लगाकर सुनिये। मैं अशिक्षित और सीधी हूँ तथा अपनी प्रार्थना का प्रभाव आप पर जमाने को असमर्थ हूँ। सो अपनी दयामयी वाणीसे मुझे अभयदान देकर मेरी सहायता कीजिये।

राजसभापति–तुम क्या चाहती हो ?

देशदामिनी–मैंने मूर महाशय से जो प्रेम किया है उनके साथ रहने के लिये किया है। मेरी निपट धूर्त्तता और भाग्यके हेरफेर से संसारमें इस बातकी तुरही बजगई है। अपने भर्त्ताके मानसिक गुणोंही पर मैंने अपना हृदय उनके समर्पण किया है। मैंने मूर महाशयकी मूर्त्ति उनके हृदयरूपी दर्पण में देखी है। उनके महत्त्व और वीरत्व पर मैंने अपनी आत्मा और भाग्य निछावर किये हैं। इसलिये महाराज ! यदि मैं तितली की भांति यहाँ शान्ति में रहनेके लिए पीछे छोड़दी जाऊँ और वे आगे लड़ाई में जावें तो मैं प्रेमकी शास्त्रोक्त विधिको उल्लंघन करूंगी। और अपने प्राणप्यारे की दुखदाई तथा कठोर अनुपस्थिति में यह बीचका समय बिताना मेरे लिए बड़ा कठिन होगा। मुझे उनके साथ जानेकी आज्ञा दीजिये।

ओथेलो–आप इसकी प्रार्थना को स्वीकार कीजिये। मैं परमेश्वर को साक्षी करके कहता हूँ कि मैं इस बात के लिये इस हेतुसे प्रार्थी

नहीं हूँ कि इन्द्रियोंका सुख भोगूं, या उन विषयवासनाओं को तृप्त करूं जो यौवन अवस्था में जागृत रहती हैं जिसको कि मैं बिताचुका हूँ या अपना और कोई विशेष परितोष करूं। परंतु मैं इसको केवल इसलिये चाहता हूं कि इसकी मनोकामना यथेच्छ परिपूर्ण होजावे। और परमेश्वर न करै कि आपके मनमें यह भावना जाग उठे कि इसके मेरे संगमें रहने से मैं आपके उस गुरु और महान् कार्य्य को जो मुझे सौंपा गया है उपेक्षा करूँगा। ऐसा कदापि नहीं होगा। और यदि पक्षधारी कामदेव की चंचल किलोल क्रीडायें मेरी ज्ञान और कर्म्मेन्द्रियों को मदोत्पन्न आलस्य से शिथिल बनादेंगी और मोद प्रमोद द्वारा मेरी कार्य्यपरायणता में विघ्नबाधा डालेंगी तो मेरी धातुमयी सेनापतित्व की टोपी को लौंडियों से बटलोई बनवा दीजियेगा और प्रत्येक बुरीसे बुरी विपत्तियां मेरे सिर मढ़ कर मेरा मान भंग कर दीजियेगा।

राजसभापति-इसमें जैसा तुम अपने आपस में ठहरालो वैसा करना, चाहे इसको यहाँ छोड़ देना चाहे संग लेजाना। यह राजकाज बड़ी शीघ्रता का है और तुरंत होना चाहिए।

पहिला सभासद्-तुमको आज रातही प्रस्थान करना चाहिये।

ओथेलो-मैं सर्वात्मना ऐसाही करूँगा।

राजसभापति-हम कल प्रातःकाल नौबजे यहां आवेंगे। ओथेलो तुम किसी कर्म्मचारी को पीछे छोड़जाना। हम उसके द्वारा अपना आज्ञापत्र ऐसी बिदायगी के साथ जो तुम्हारी पदवीके उपयुक्त होगी तुम्हारे लिए भेजेंगे।

ओथेलो-जैसी महाराज की आज्ञा। मैं अपने पताकावाहक को जो एक सत्यशील और विश्वासनीय पुरुष है छोड़े जाता हूँ वह

मेरी स्त्रीको साथ लेकर आवेगा। और जो कुछ महाराज आवश्यक समझें मेरे पीछे उसके द्वारा भेजने की कृपाकरें।

राजसभापति—ऐसाही करना। अच्छा नमस्ते (अवंशोसे)।

होता धर्म्मी पुरुष मनोहर, शोभासे यदि रहित नहीं।
तोन जमाई कृष्ण तुम्हारा, है गोरा वह अधिक कहीं॥

पहिला राजसभासद्—वीर ओथेलो प्रणाम, देशदामिनी को भली-भांति रखना।

अवंशो—उसपर रखना दृष्टि मूर जो, दीखपड़े कुछ तुझे कहीं,
उसने अपना पिता ठगा है, तुझको भी वह ठगे नहीं॥

(राजसभापति, राजसभासद, और राजकर्म्मचारी जाते हैं।)

ओथेलो—मैं अपने जीवन का पण लगाकर कहसकता हूँ कि मेरी स्त्री साध्वी और पतिव्रता है। सत्यशील यागो, मैं अपनी देशदामिनी को तेरे भरोसे छोड़े जाता हूँ, तेरी स्त्री उसकी सहेली रहेगी। उनको भलीभांति बहुत शीघ्र लेआना। आवो, देशदामिनी तुम्हारे साथ प्रेमालाप और सांसारिक धँधों तथा प्रबन्धों के विषय में बातचीत करनेके लिये एक घंटा मात्र रहगया है। हमपर समय की भीड़ पडी है और हमें उसके अनुकूल चलना चाहिए।

(ओथेलो और देशदामिनी जाते हैं)

रौदरिगो—यागो!

यागो—क्या कहते हो महानुभाव?

रौदरिगो—तेरी समझ से मुझे अब क्या करना चाहिये? मैं क्या करसकता हूँ?।

यागो—क्यों? घरजा और सोजा।

रौदरिगो—मैं अभी जाकर डूब मरूँगा।

यागो—जो तूने ऐसा किया तो तेरे मेरे प्रेमकी इतिश्री यहां पर ही होगई। अरे निर्बुद्धि भलेमानस! तुझको क्या होगया है?
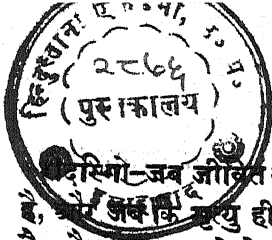
रौदरिगो—जब जीवित रहना दुःखदाई हो, तो जीवित रहना मूर्खता है, और जब कि मृत्यु ही हमारे दुःखों को मिटाने के लिये एकमात्र वैद्य है तो क्या मरने के लिये किसी औषधविधि की आवश्यकता होगी ?

यागो--अरे ! यह बड़ी लज्जा की बात है। मुझे इस संसार को देखते हुए दोयुग* चार वर्ष होगये हैं तथा जबसे मुझको लाभ और हानि में जो भेद है उसका बोध हुआ है। मैंने ऐसा कोई मनुष्य नहीं देखा जो अपनी आत्मा को प्यार न करता हो । मैं तो जब पहिले कहीं मनुष्य से लँगूर बनजाऊँ तब एक छिनालके प्रेमके निमित्त डूब मरने का विचार करूँ।

रौदरिगो—मैं क्या करूँ ? मुझसे कुछ हो नहीं सकता।

मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे ऐसा मूर्ख होनेमें लज्जा आती है। पर मुझमें इतनी धर्म्म की मात्रा नहीं है कि मैं अपनेको सुधारसकूँ।

यागो--फुह ! धर्म की कुछ वस्तु नहीं है। यह हमारे हाथ में है कि हम अपने को जैसा चाहें तैसा बनासकते हैं। हमारा शरीर वाटिका के समान है, और हमारी इच्छा शक्ति उसमें मालीके समान है। यह हमारी इच्छा शक्ति पर निर्धर है कि हम चाहें उसमें बिच्छू‡ बोवें या सलाद+, चाहें औषधि लगावें या इपार× को नेलें, चाहे उसमें एक प्रकार की वनस्पति लगावें या अलग २ क्यारियां बनाकर नानाप्रकार

---

* युग= बारह वर्ष।

‡ बिच्छू एक प्रकारका कोमल कांटेदार पौधा होता है। जिसपर हाथ लगाने से झनझनाहट पड़ती है । गढ़वाली—कंडाली । कुमाउनी—सिसुरारो ।

+ इपार = वनस्पति विशेष ।

×सलाद = तथा ।

की चाहें हम आलस्य से उसको ऊसर रक्खें या उद्योगरूपी खाद डालकर उपजाऊ बनाडालें-इसका सामर्थ्य और सुधारने का अधिकार हमारी इच्छा शक्ति को ही प्राप्त है। यदि हमारे जीवनरूपी तराज़ू में एक पलड़ा विवेचन का, विषयासक्ति के समतोल करनेके लिये न होवे तो, हमारी प्रकृतियों के उद्वेग और दुरावृत्तियाँ हमको कहीं गहरे खड्डों में डाल देवें, परन्तु हममें अपने इन्द्रियों के वेगों को और तीक्ष्ण विषय वासनाओं को और निरंकुश कामातुरताको शान्त करने के लिये विवेचनशक्ति है। और मेरा विचार है कि जिसको लोग प्रेम कहते हैं वह इन्हीं की एक शाखा या प्रशारना* है। यह अनुभूति जिससे तुझे इस समय क्लेश होरहा है केवल रक्त की प्रबल प्रेरणा है, जिसको तेरी इच्छाशक्ति शान्त नहीं कर सकती है। अरे जा! कहता है डूब मरूँगा! बिल्लियों को डुबा, कुत्ते के अन्धे बच्चों को डुबा। मैंने तेरा सखा होना अंगीकार किया है, और मैं स्वीकार करता हूँ कि बड़ी योग्यता का व्यवहार जो तूने मेरे साथ किया है, उसके ऋण से मानो मैं बड़ी मोटी रस्सी से बँधा हुआ हूँ। मैं तेरा काम ऐसा कभी नहीं बना सकता था जैसा अब बना सकता हूँ। अपनी वसनी में रुपये बांध और मेरे साथ इन लड़ाइयों में चल। अपना भेष एक कृत्रिम दाढ़ी लगाकर बदल डाल। मैं तुझसे कहता हूँ कि अपनी वसनी में रुपये बांधले। ऐसा हो नहीं सकता कि देशदामिनी का प्रेम मूर के लिये अधिक समय तक रहे, और न मूर का ही प्रेम उसके लिये रहेगा। अपनी वसनी में रुपये बांध। इसका आरंभ उतावली से हुआ है और तू देखेगा कि ठीक इसीभाँति इनका बिछोह भी होगा—परन्तु तू अपनी वसनी में रुपये बांध। ये मूर लोग स्वभाव ही से चंचल होते हैं—अपनी वसनी में रुपये भरले। यह भोजन जो इस समय

* प्रशारना = कलम।

मूरको अमृतफल के समान स्वादिष्ट लगता है यह इसके लिये शीघ्र ही इन्द्रायण के फल की समान कड़वा होजायगा। जब वह मूर से छक जावेगी तो देशदामिनी किसी युवा पुरुष की ओरको अवश्य ही झुकेगी, उसको अपने स्वयम्बर की चूक विदित होजायगी। उस में अवश्य ही परिवर्त्तन होगा अवश्यही होगा। इसलिये अपनी वसनी में रुपये बांध। यदि तू मरने ही पर उतारू है तो डूब मरने की अपेक्षा देशदामिनी के उड़ाने के प्रयास में मर। जितना रुपया तू बटोर सकता है बटोर। यदि एक रमते राम जंगली और अति-चञ्चल वेनिसवासी रमणी के आपस के बनावटी सद्व्यवहार और थोती प्रतिज्ञायें छिन्न भिन्न करने में मेरी चतुराई और निशाचरी माया चलगई तो तू अवश्य देशदामिनी का भोग करेगा। इस लिये रुपया बटोर। मरे तेरा वैरी—मरने की कोई बात ही नहीं है। डूब मरने से वह तुझको नहीं मिलेगी, इसकी अपेक्षा तू अपनी मनोभिलाषा प्राप्त करने के लिये फांसी पर चढ़ जाने तक का प्रयत्न कर।

रौदरिगो-यदि आत्मघात करनेकी अपेक्षा मैं देशदामिनी के इस परिणय का परिणाम देखने को ठहर जाऊँ तो क्या तुम मेरे पक्के सहायक बने रहोगे?

यागो-हाँ, मेरा पूरा भरोसा रख। जा रुपया इकट्ठा कर, मैंने तुझसे बहुतबार कहा है और फिरभी बार २ कहता हूँ कि मैं मूर से घृणा रखता हूँ इसका कारण मेरे मनपर चुभा हुआ है। तेरी घृणा का हेतु भी कुछ कम नहीं है। उससे बदला लेनेमें हम दोनों को एक मन होजाना चाहिये। यदि तू उसको फटकार देगा तो तुझ को सुख मिलेगा और मेरा विनोद होगा। काल-चक्र के गर्भ में कितनीही घटनायें हैं जो अवश्य पैदा होंगी। जा चलदे, रुपये

का प्रबन्ध कर। हम इस विषय में और बात चीत कलको फिर करेंगे।

रौदरिगो—मैं प्रातःकाल कहाँ मिलूँ?

यागो—मेरे घरपर।

रौदरिगो—मैं तेरे पास भोरही आऊँगा।

यागो—अच्छा, जा, प्रणाम। हाँ रौदरिगो! एक बात और सुनता जा।

रौदरिगो—वह क्या बात है?

यागो—अरे सुन! अब डूब मरने का नाम न लेना।

रौदरिगो—अब मेरा विचार बदलगया है। मैं अपनी सब भूमि बेच डालूँगा।

यागो—अच्छा जा, प्रणाम। अपनी वसनी में खूब रुपये भरलेना।

(रौदरिगो जाता है।)

इस प्रकार मैं अपने भोंदुओं से सदैव रुपये गांठता हूँ। ऐसे अनाड़ीके साथ समय व्यतीत करने में मैं अपने कष्ट से उपार्जित सांसारिक ज्ञानका कुप्रयोग करता हूँ, परन्तु मुझे विनोद और लाभ के लिये ऐसा करना पड़ता है। मैं मूरसे घृणा रखता हूँ। और लोगों का यह विचार है कि उसने मेरे विस्तर पर मेरा काम बजाया है। मैं नहीं जानता हूं कि यह बात कहाँतक सच है? पर इसप्रकार के प्रसंगमें केवल सन्देह होने पर ही मैं ऐसी कार्य्यवाही करूँगा कि मानो वह सच्ची ही बात है। वह मुझको बहुत अच्छा मानता है, इसलिये उसके ऊपर मेरी अच्छी चलेगी। केसियो एक दर्शनीय व्यक्ति है, अब उसकी बात देखनी है। मेरी इच्छा है कि मैं दोहरा छापा मारकर उसका पद प्राप्त करूँ और अपना बदला भी निकालूं। किस भाँति मैं इसमें कृतकार्य्य होऊँगा

हमें*अब यह देखना है। कुछ समय बीत जानेपर मैं ओथेलोके कान में फूँक दूँगा कि केसियो का उसकी पत्नीसे बड़ा परिचय है। केसियो के डीलडौल और चालढाल ऐसे मनोहर हैं कि उसपर संदेह होसकताहै, उसमें कामिनियों के हृदयाकर्षणकी अपूर्व शक्ति है। मूर उदार और खुली प्रकृति का है वह सब मनुष्योंको चाहे वे दिखलावे के ही सत्यशील हों, सत्यशील ही समझता है और वह बैलकी भाँति नाकमें नाथ डालकर जिधर चाहो सुगमतासे फेरा जासकता है। यह मेरे बायें हाथकी बात है, मैंने उसको ठान लिया है, गुप्त राक्षसी लीलासे मेरे इस घोर कपट–प्रबन्धका विकाश होगा।

(जाता है।)

❋ दूसरा अंक ❋

पहला दृश्य। साइप्रसमें एक पोताश्रय।

एक बड़ा चबूतरा। (मौनतेनो और दो भद्रपुरुषों का प्रवेश।)

मौनतेनो—आप इस अंतरीय से समुद्रमें क्या देख सकते हैं?

पहिला भद्रपुरुष—कुछभी नहीं। तूफान ने समुद्र को उथल पुथल करके उसमें बड़ी भारी तरंगें पैदा करदी हैं। स्वर्ग और समुद्र के बीच मुझे कोई भी जहाज नहीं दीख पड़ता।

मौनतेनो—मैं सोचता हूँ स्थल में प्रचंड आंधी चली है। इससे बड़ी प्रचंड आँधी से हमारे दुर्ग पहिले कभी नहीं थर्राये थे। यदि समुद्र में ऐसा ही तूफान उठा है तो पर्वतों के बराबर ऊँची लहरों से टकराकर बेचारे बलूत के लट्ठे× कैसे अपनी चूलों पर

---

* रंग भूमि से दर्शकोंकी ओर देख कर "हमें" शब्दका प्रयोग करना है।

× बलूतके लट्ठे=जहाज़।

स्थिर रह सकते हैं ? इसका हमको न जाने क्या समाचार मिलेगा?

दूसरा भद्रपुरुष–तुर्कोंका बेड़ा छिन्न भिन्न होगया है। क्योंकि फेन से भरे हुये समुद्र तटपर तनिक तो खड़े हूजिये, और देखिये तो पवनके प्रकोप से ग्रसित लहरें बादलों से टकराती हुई सी जान पड़ती हैं, वायु से चलायमान हुई बड़ी २ तरंगें बड़ी ऊँची और भयङ्कर अयाल सी बनकर देदीप्यमान सप्तऋषियों पर पानी उछालती हुई सी भासित होरही हैं, तथा ध्रुव नक्षत्र के रक्षक लघु सप्तऋषियों की ज्योति को बुझाती हुई सी दीख पड़ती हैं । पवन से विलोड़े हुए उदधि में ऐसा उपद्रव मैंने पहिले कभी नहीं देखा।

मौनतेनो–यदि किसी आखात के पोताश्रय में तुर्कों का बेड़ा सुरक्षित नहीं होगा तो समुद्र उसकी समाधि बन गया है। ऐसे तूफान से उसका बच निकलना असम्भव है।

(एक तीसरे भद्रपुरुष का प्रवेश)

तीसरा भद्रपुरुष—अरे भाइयो ! शुभ समाचार है। हमारे संग्राम का अन्त होगया है, तुर्कों को इस भयङ्कर आँधी ने ऐसा खदेड़ा है कि उनका साइप्रस पर चढ़ाई करने का उत्साह भंग हो गया। वेनिस के एक बड़े जहाज ने देखा है कि उनका अधिकांश बेड़ा नष्ट भ्रष्ट और चकनाचूर होगया है।

मौनतेनो—हैं ! क्या यह सत्य वार्त्ता है ?

तीसरा भद्रपुरुष–इस जहाज ने यहां लंगर डाला है। यह वेरोना का बना है। श्रीमान् मैकल केसियो जो महावीर ओथेलो के सहकारी हैं यहाँ उतर गये हैं। ओथेलो महोदय अभी समुद्र में ही हैं। वे साइप्रस के पूर्ण अधिकार का आज्ञापत्र प्राप्त कर उसके शासक बनकर आते हैं।

मौनतेनो—मैं इसबात को सुनकर बड़ा प्रसन्न हूँ। वे एक योग्यशासक हैं।

तीसरा भद्रपुरुष—परन्तु यही केसियो महाशय यद्यपि तुर्कों के बेड़े के नाश होनेका पूरा ढाढस बँधाते हैं, तौभी वे बड़े उदास दीख पड़ते हैं और मूर महाशयकी कुशल के लिये प्रार्थना कर रहे हैं, क्योंकि उनका साथ एक बुरी और प्रचंड आँधी के द्वारा छूटा है।

मौनतेनो-परमेश्वर से प्रार्थना कीजिये कि वे कुशलपूर्वक हों। मैंने उनके नीचे नौकरी की है और वे एक पूर्ण योद्धा के समान शासन करते हैं। अरे भाई! चलो समुद्र के किनारे चलें। वहाँ जाकर उस पोतको भी देखेंगे जो आया है, और वीर ओथेलो के लिये टकटकी लगाकर उससमय तक देखते रहेंगे जब तक कि देखते २ समुद्र और नीलाम्बर आकाश एक समान दीखने लगें।

तीसराभद्रपुरुष--चलो ऐसाही करें, क्योंकि क्षण प्रति क्षण और जहाजों के आने की प्रतीक्षा होरही है।

(केसियोका प्रवेश)

केसियो--मैं इस वीर टापूके उन वीरलोगोंका धन्यवाद करता हूँ, जो श्रीमान् ओथेलो की इस भाँति प्रशंसा कररहे हैं। परमेश्वर से प्रार्थना कीजिये कि वह पंच तत्त्वों के प्रकोपसे उनकी रक्षा करें, क्योंकि उनका मेरा साथ भयंकर समुद्र में छूटा है।

मौनतेनो—उनका जहाज तो अच्छा है ?

केसियो—उनका जहाज बड़ी पक्की लकड़ी का बना है और उसका माँझी प्रवीण तथा परीक्षित योग्यता का है, इसलिये उनके कुशल पूर्वक होने की मेरी आशा मृतप्राय होनेपर भी जीवित है।

(नेपथ्य में—एक जहाज, एक जहाज, एक जहाज !)

(एक दूत का प्रवेश)

केसियो—यह कोलाहल क्या होरहा है ?

दूत—सारी नगरी खाली होगई है और सब लोग समुद्रके तट

पर आकर कतार बाँधे खड़े हैं तथा "जहाज, जहाज" चिल्ला रहे हैं।

केसियो—मैं आशा करता हूँ और सोचता हूँ कि यह ओथेलो महोदय का जहाज होगा। (तोपों की फैर सुनाई देती है।)

दूसरा भद्रपुरुष—वे तोपें अभिवादन कर रही हैं। कोई हमारे मित्र ही आये हैं।

केसियो—महाशय, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप वहां पधारिये और लौटकर हमको ठीक २ सूचना दीजिये कि वे कौन आये हैं।

दूसरा भद्रपुरुष--मैं जाताहूँ।

(जाता है)

मौनतेनो–पर भला सुजन सहकारीजी, यह तो बतलाइयेगा कि क्या आपके सेनापति महाशयका व्याह होगया है ?

केसियो--उनका परिणय बड़ा आनन्दमय हुआ है। उनके हाथ एक ऐसी सुकुमारी लगी है कि जिसका कुछ वर्णन ही नहीं हो-सकता, और न जिसकी उपमा किसी बड़ी नामी से नामी सुन्दर और मनोहारिणी स्त्री से ही दी जासकती है। उसकी प्रशंसा करना कवियोंकी विचित्र लेखनी की शक्ति से वाहर है, उसकी वास्तविक सुन्दरता और छवि ऐसी अलौकिक है कि चित्रकार की विविध भाव दर्शक कूँची भी उसकी तसवीर खींचने में हार मान जाती है।

(दूसरे भद्रपुरुषका फिर प्रवेश।)

कहो अब क्या समाचार है ? कौन आया है ?

दूसरा भद्रपुरुष--वह एक यागो आया है जो सेनापति का पताकावाहक है।

केसियो--उसकी यात्रा अति उत्तम और आनंदमयी हुई है। क्या घनघोर आंधियोंने, क्या उमड़े हुए समुद्रोंने, क्या प्रचंड पवनों

ने, क्या लहरों से घिस २ कर छिपेहुये चट्टानों ने और क्या रेती के ढेरोंने जो पानी की सतह के नीचे भोले भाले जहाजों की गति रोकने के लिये छलपूर्वक ताक लगाये से बैठ रहते हैं, श्रीमती देशदामिनी की सुन्दरता और दिव्यमूर्त्ति से मानो सचेतन होकर अपनी नाशकारिणी प्रकृति को छोड़ दिया है और उनके जहाज को बिना रोक टोक कुशलपूर्वक आने दिया है।

मौनतेनो—वे कौन हैं?

केसियो—वह जिनका कथन मैंने किया है, हमारे महामान्य अध्यक्ष की अध्यक्षा हैं। वे सूरमा यागो की रक्षा में पीछे छोड़ी गई थीं। हमारे अनुमान से एक सप्ताह पहिले उनका यहाँ पदार्पण हुआ है। हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर! श्रीमान् ओथेलो की रक्षाकर, अपने पवन वीरको उनके पालों को इसभांति फुलाने का आदेश कर कि जिससे अपने महास्थूलकाय जहाज़ से इस अखात को सुशोभित करके वह हमको कृतकृत्य करें और श्रीमती देशदामिनी की गलबहियाँ में प्रेमोल्लास करैं, हमारे मुरझाये हुये प्राणों को फिर हरा भरा करैं और साइप्रस को परमसुखी बनावें।

(देशदामिनी, यमिलिया, यागो और अनुचरोंका प्रवेश।)

वो देखिये! जहाज की निधि किनारे पर सुशोभित होगई है। अहो! साइप्रस के निवासियो! उनको दंडवत् करो। (देशदामिनीसे) श्रीमती! आपकी जयहो! परमेश्वरकी अनुकम्पा आपको चहुँ ओरसे सदैव और सर्वत्र परिवेष्टित किये रहै।

देशदामिनी--वीर केसियो मैं तुम्हारा धन्यवाद करती हूँ। तुम मेरे प्राणपतिके विषयमें क्या सन्देश देसकते हो?

केसियो--वह अभी नहीं आ पहुँचे हैं। मैं इतना मात्र जानता हूँ कि वह अच्छे हैं और शीघ्रही यहाँ पधारेंगे।

देशदामिनी--हाँ पर मुझे इस बातसे भय है कि तुम्हारा साथ कैसे छूट गया ?

केसियो–अर्णव और अंतरिक्ष का घोर द्वन्द्व युद्ध होने से हमारा संग बिछुड़ा है।

(नेपथ्य में–जहाज ! जहाज ! तोपोंकी फैर सुनाई देती है ।)

दूसरा भद्रपुरुष–वे हमारे दुर्ग की सलामी करते हैं। यह भी हमारा कोई मित्र ही है।

केसियो–जाइये, समाचार लाइये।

(दूसरा भद्रपुरुष जाता है ।)

प्यारे पताकावाहक ! आपका शुभागमन हो। (यमिलिया से) बाईजी ! आपका शुभागमन हो। प्रिय यागो ! इस बातसे खिन्न न होना कि मैं चालढाल में इतना बढ़कर जाताहूं। यह मेरे अच्छे कुलका शिष्टाचार है और किसी कुटिल इच्छासे मुझे ऐसा करने का साहस नहीं हुआ है।

(यमिलिया का चुम्बन करता है)

यागो–महाशय, यदि वह आपको अपने अधरोंसे इस भाँति प्रहार करती जैसे कि अपनी जिह्वासे वह मेरा प्रहार करती है, तबतो आप छक जाते।

देशदामिनी–शोक ! मेरी समझ में तो उसमें एक त्रुटि यह है कि वह अधिक चुप रहती है।

यागो–सचमुच, वह बहुतही चुप रहती है। मेरी जब सोनेकी इच्छा होती है, तब भी मैं उसको चुपचाप ही पाता हूँ। मरियमकी शपथ, आप श्रीमती के सन्मुख तो मैं इस बातको स्वीकार करताहूँ कि वह अपनी वाग्युद्ध की बानको अपने मनमें छिपाये रखती है वह अपने विचारों को शब्दों में प्रकट नहीं करती।

यमिलिया-आपका ऐसे कहनेका कोई हेतु नहीं है।

यागो-जावो, जावो।

घरसे बाहर जाने पर तुम, चित्रों के सम पड़ती जान,
निज चौकेमें बनविलावसम, बैठक कोयल मृदुल समान,
अनिष्ठ करके साधु बनो तुम,चिढ़ जानेपर भूत समान,
रहो कौतुकी गृहकाजों में, गृहणी बनती शयनस्थान।

देशदामिनी-अरे! निन्दक तुझको धिक्कार है!

यागो-हाँ, है यह सत बात, नहीं तो बदल दीजिये मेरा नाम।
तुम उठती हो कौतुक करने, विस्तरपर जा करती काम॥

यमिलिया--बस अब मेरी प्रशंसा मत करना।

यागो--मैं नहीं करूंगा।

देशदामिनी-यदि तुम मेरी प्रशंसा करनी चाहो तो किस भांति करोगे?।

यागो-अहो सुहृदय श्रीमती! मुझसे ऐसा आग्रह न कीजिये। क्योंकि मुझे बिना निन्दा किये चैन नहीं पड़ता।

देशदामिनी-चलो चलो उद्योग करो क्या कोई समाचार लाने के लिये पोताश्रय गया है?

यागो--हां श्रीमती!

देशदामिनी-मेरा मन प्रफुल्लित नहीं है, परन्तु मैं हँसमुख बन कर अपने दुःख को विसराना चाहती हूँ। अच्छा बोलो तुम मेरी प्रशंसा किस भाँति करोगे?

यागो-मैं इस बातको विचारने का उद्योग कर रहा हूँ कि मैं किसभाँति आपका वर्णन करूँगा, परन्तु मेरे विचार मेरे मस्तिष्क से ऐसी कठिनाई से निकलते हैं जैसे चिड़िया पकड़ने की लेही खुरखुरे मोटे कोट से निकलती है। मैं अपना आविष्कार दरशाने के प्रयत्न

में हूँ, पर इससे मेरा मस्तिष्क फटासा जाताहै। मेरी कल्पना शक्ति उद्यम में लगी है और उसका फल यह है—

यदि वह सुन्दर और चतुर हो, बड़ी कामकी सुघराई,

चतुर कामिनी उससे कितना, लाभ उठाती सुखदाई।

देशदामिनी-क्या ही अच्छी प्रशंसा की ! यदि वह कुरूपा और चतुर हो तो ?

यागो-यदि वह होवे नारि कुरूपा, किन्तु चतुर भी उसके साथ,

इच्छा पूरन करने वाला पालेती वह सुन्दर नाथ।

देशदामिनी-यह और बुरीहै।

यमिलिया-यदि वह सुन्दर और मूर्ख हो तो कैसी हो ?

यागो-जोकि कामिनी होती सुन्दर वह तो मूरख नहीं निदान,

मूरख होनेपर भी उसकी पैदा होजाती सन्तान।

देशदामिनी-यह प्राचीन काल के अनाड़ियों के चुटकले हैं; जो पानागारों में मूर्खोंको हँसाने के लिये कहे जाते थे। जो नारी कि कुरूपा और मूर्खा हो उसके लिये तेरे पास क्या दुखदाई बडाई रक्खी है ?

यागो-मूर्ख कुरूपा नारी कोई ऐसी तो नहिं लख पड़ती,

जो सुन्दर अर चतुर नार की कलोल क्रीड़ा नहिं करती।

देशदामिनी-क्या ही उदासीन अनभिज्ञता है। जो सबसे बुरी है तू उसकी सबसे अच्छी प्रशंसा करता है। अच्छा तू एक ऐसी योग्य स्त्री की प्रशंसा किसभांति करेगा, जो सचमुच योग्य हो, और जिसको अपनी योग्यता और उत्तम आचरण पर इतना भरोसा हो कि वह उस व्यक्ति से भी जो उससे द्रोह रखता हो उनकी पुष्टता करादेने का साहस रखती हो।

यागो-वह जो रहती भली सर्वदा, पर गर्वीली कभी नहीं,

अपने बारे बहुत कह सके, पर बतियाती कभी नहीं,
घटी न धनकी होने परभी, सादा रखती जो व्यवहार
अवसर मिलने परभी जिसको, विषयभोगका नहीं विचार।
क्रुद्ध किये जाने पर आवे बदले का जब अवसर पास,
भूल हानियाँ अपनी जाती, खीझ न करती कभीप्रकाश।
बुद्धिमती जो रहे निरंतर, करती ऐसी चूक नहीं-
पूरी के बदले जो देदे मोटी रोटी रुक्ष कहीं।
किसी बात को विचार सकती, भेद खोलती पर न कहीं।
विवाह-प्रार्थी पीछे आते, देख झांकती उधर नहीं।
वह ऐसी ही जनी एक हो, यदि ऐसी हो जनी कहीं।

देशदामिनी-वह क्या काम आती है ?

यागो-मूढ़ों को दूध पिलाती है, घरके खर्च का हिसाब किताब रखती है।

देशदामिनी-क्या ही असंगत और थोथा परिणाम है ? यमिलिया ! यद्यपि यह तेरा पति है, परन्तु इसकी बातों में न आना। कहो केसियो तुम्हारी क्या अनुमति है ? क्या यह एक बड़ा अश्लील और लम्पट बकवादी मनुष्य नहीं है ?

केसियो-श्रीमती ! उसके शब्द मर्म-स्पर्श हैं, आपको उसकी तर्कविद्या की अपेक्षा उसकी युद्ध कुशलता अधिकतर रुचिकर होगी।

यागो-(आप ही आप) वह देशदामिनी की हथेली पकड़ता है, अच्छा पकड़ ले, वह उसके कान में कुछ कहता है अच्छा ऐसा भी करले। इस छोटे से ही मकड़ीके जाले में मैं एक ऐसी बड़ी केसियो जैसी मक्खी को फँसाऊँगा। हां, फिर उसकी मुँह की ओर देखकर मुस्कुराता रह। मैं तेरे इस शिष्टाचाररूपी पाश में तुझको फांसूंगा। (प्रकट) हां तुम सच कहते हो। वास्तव में ऐसी ही बात है।

(केसियो अपनी अँगुलियों के अग्रभागों को चूमता है* ।)

(अपने आप) यदि ऐसे ही सौजन्य भावों के द्वारा तुम्हारा सहकारी पद छीना जावे तो यह अच्छा होता कि तुम अपनी अँगुलियों के नोकों को देशदामिनी के सन्मुख इस भांति न चूमते जाते, जिससे कि तुम बार बार अपनी कुलीनता प्रकट करने के उत्सुक बन रहे हो । (केसियो फिर इसी भाँति अपनी अंगुली चूमता है।) क्या खूब ! अच्छा चुम्बन किया, यह उत्तम शिष्टाचार है, सचमुच यह उत्कृष्ट है, फिर भी तुम अपनी अंगुलियों को अपने होटों पर लेजाते हो ? देशदामिनी के लिये इन शिष्टाचारों को करने में तुम अपने लिये भारी बुराई कर रहे हो जहांतक तुम अपने लिये कर सकते हो, क्योंकि मैं इन बातों को जो मैंने देखी हैं ऐसा घुमाकर कहूँगा कि मूर तुमपर बड़ा क्रुद्ध होगा ।

(नेपथ्यमें तुरही का शब्द ।)

(प्रकट) यह मूर महाशय पधारे हैं, मैं उनकी तुरही का शब्द पहिचानता हूँ ।

(ओथेलो और अनुचरवर्ग का प्रवेश ।)

ओथेलो–मेरी प्यारी सूरमा !

देशदामिनी–मेरे प्यारे ! प्राणनाथ !

ओथेलो–मैं इस बातको देख कर कि तुम मेरे पीछे चली थीं और मेरे आगे पहुँच गई जितना अचंभे में हूँ उतनाही प्रमुदित भी हूँ । अहो मेरे हृदय की आनन्दमूर्त्ति ! यदि प्रत्येक आँधी के पीछे ऐसीही निश्चलता आती रहै, तो प्रचंड पवन भलेही ऐसे घोर नाद और भयंकर शब्द से बहते रहैं कि वे मृत्यु को भी जागृत करडालैं, लकड़ीके पुतले जहाज भलेही अलकापुरीके पर्वतकी समान

* यह शिष्टाचार का सूचक होता है ।

ऊँची समुद्रकी लहर रूपी पहाड़की चोटियों पर चढ़कर फिर नीचे ऐसे गोते मारते रहें कि मानो आकाश से पातालमें गिरपड़े। यदि मेरे भाग्य में इससमय मरना होता तो मैं अपने को बड़ाही भाग्यवान् समझता, क्योंकि मुझे भय है कि जैसी पूर्ण संतुष्ट मेरी आत्मा इससमय है ऐसा सुख अज्ञात भविष्यमें उसको कदाचित्‌ही मिले।

देशदामिनी–परमेश्वर ऐसा न करें, प्रत्युत प्रेम और आनंद दिन प्रतिदिन जैसी हमारी वय बढ़ती रहे वैसेही बढ़ते रहें।

ओथेलो–एवमस्तु; देवतागण इसमें हमारी सहायता करें! मैं इससमय इतना प्रफुल्ल चित्त होरहाहूँ कि मुझसे उसका पूरा २ वर्णन नहीं होसकता, और मेरा मन भरा चला आताहै। (अपनी छातीपर हाथ रखता है) मुझे परमानंद है और यदि तुम्हारे और मेरे बीच कभी कोई बड़ा भारी झगड़ा बखेडा हो तो बस वह यही यही चुम्बन हो। (चूमता है)

यागो–(आपही आप) अरे, इस समय तुम्हारे मनका तार खूब मिलाहै, पर मैं जैसा ईमानदार हूँ इसको शीघ्रही ढीला करदूँगा।

ओथेलो–अच्छा हमें अब दुर्गको चलना चाहिये। मित्रो! यह शुभ समाचार है कि इस संग्राम का अन्त होगया है। तुर्क लोग डूब कर विध्वस्त होगये हैं। क्या इस टापू में के मेरे सब पुराने मित्र अच्छे हैं? (देशदामिनी से) प्रिये! इस साइप्रस टापूके निवासियोंको तुम मेरे कारणसे अपने साथ मित्रता करने के लिये उत्सुक पावोगी। उन्होंने मेरे संग बड़े प्रेमका व्यवहार कियाहै। हे प्राणप्यारी! मैं बेतुकीसी बातें कररहाहूँ, मैं इतना प्रसन्न और हर्षित होरहा हूँ कि मूर्खों की भाँति बोल रहा हूँ। अच्छा, भले मानस यागो, कृपा करके आखात में जाकर मेरा असबाब उतरवाओ, और पोताध्यक्ष को मेरे पास दुर्ग में ले आओ। वह सज्जन और

योग्य पुरुष आदरणीय है। अच्छा देशदामिनी चलो, तुम साइप्रस में बहुतही अच्छी मिली हो।

(ओथेलो, देशदामिनी और अनुचरवर्ग जाते हैं।)

यागो-(रौदरिगो से) तू मुझे थोड़ी देर में पोताश्रय पर मिलना। यहाँ आ, यदि तू साहसी बन सकता है, जैसा कि लोग कहते हैं कि जब कोई नीचजन भी प्रेम में आसक्त होते हैं तब उन के स्वभाव में, जो प्रकृति से उन्हें मिला है, कुछ महत्त्व आजाता है, तो मेरी बात सुन। आज रातको सहकारी सेनापति की नौकरी कोतलगारद में * है। हाँ, मैं तुझसे पहिले एक बात कहे देता हूँ कि देशदामिनी उसपर लट्टू बन रही है।

रौदरिगो-उसपर! ऐसा संभव नहीं होसकता।

यागो-अपना मुँह बंदकर (रौदरिगो की अंगुली उसके मुँह पर लेजाता है) पहले अपने से बड़े बुद्धिमान् की बात सुनले। इस बातको देख कि मूर के केवल डींग मारने और मिथ्या कल्पित बातें कहने ही से वह किस ढिठाई से उसके प्रेमजाल में फंसी है। यद्यपि उसने अपने गत जीवन काल की गर्वित और मूर्खता भरीं मिथ्या बातें वर्णन करके उसका प्रेम विजय किया है, तौभी तू मूर्खता से इस बात की भावना कदापि मत रख कि वह केवल बकवाद से ही उसका प्रेमभाजन बना रहेगा। उसकी आँखों की तृप्ति होनी चाहिये, और उसको उस भुतने को देखने से क्या आनन्द मिल सकता है? जब कि विषयासक्ति से सहवास की इच्छा कुंठित हो-जाती है, तो उसको फिर जागृत् करने के लिये, तृप्ति के अनंतर पुनः नूतन क्षुधा पैदा करने के लिये रंग रूप में मनोहरता, उमर में रहन सहन और सौन्दर्य में समानता होनी चाहिये। मूर इन सब

---

* कोतलगारद—अब छावनियोंमें प्रचलित शब्द होगया है। कोतलगारद उस स्थान को कहते हैं जहां सेनाके कर्म्मचारी पहरे के लिये इकट्ठा होते हैं।

बातों से शून्य है। सो उसमें इन गुणों का अभाव होने से जो प्रेम को बनाये रखने के लिये उपयोगी और आवश्यक हैं, कोमल और सुकुमार प्रकृति की देशदामिनी स्वभावतः जान जायगी कि उसको धोखा हुआ है, और वह मनोहत होने लगेगी, मूर को देखकर उसे क़ै होने लगेगी, उससे उसको घिन होजायगी और वह उससे उकताने लगेगी। उसकी प्रकृति ही बिना किसी बाहरी कारण के, उसको दूसरा वर ढूँढने के लिये मंत्रणा देगी और विवश करेगी। अच्छा भइया, जब यह बात मानली जावे (और यह युक्ति सत्यता पूर्ण है और किसीप्रकार खंडित नहीं होसकती) तो केसियो के सिवाय और कौन पुरुष है जो इस निधि को प्राप्त करने के लिये सबसे बढ़ा चढ़ा हो ? वह एक बड़ा चंचल लौंड़ा है। अपनी कामेच्छाओं को जिन्हें वह बडी सावधानी से गुप्त रखता है, भली भांति पूरा करने के लिये केवल बाहरी शिष्टाचार और भलमनसीका वाना पहिनने के अतिरिक्त उसमें विवेक का नाम भी नहीं है ऐसा और कोई नहीं है। वह एक छली और कपटी लौंडा है और अपनी दुर्वासनाओं को पूर्ण करने के लिये अवसर ढूंढता रहता है। उसकी आंखें छल फंद रचती हैं जाल बनाती हैं और उसको अपनी मनोवांछा पूर्ण करने के लिये जब अच्छा अवसर अपने आप प्राप्त नहीं होता है तो उसे निलज्जता से प्राप्त करादेती है वह ऐसे अवसर के भरोसे नहीं रहता है जो अकस्मात् आपड़ता है वरन उसको स्वयं पैदा करने का प्रयत्न करता है। वह असुर लौंडा है। इसके सिवाय वह मनोहर और जवान है और उसमें वे सब गुण वर्तमान हैं जिनको मूर्ख और कच्चे मनके लोग बहुत अच्छा मानते हैं। वह एक बड़ा पूरा छंटा हुआ है और वह कामिनी उसको ताड़ गई है।

रौद्रिगो–मैं विश्वास नहीं कर सकता कि देशदामिनी ऐसी है। वह बडी पवित्र और पतिव्रता है।

यागो--वह घंटा पवित्र और पतिव्रता है (उसको अपना अंगूठा दिखाता है) वह तो साधारण स्त्रियों की भाँति मनोविकार और पापेच्छाओं के वशीभूत है। यदि वह पवित्र होती, तो मूरसे प्रेम कदापि न करती। कहीं मालपुए उड़ाने वाली भी पतिव्रता होती हैं? क्या तूने उसको केसियो के साथ सानुराग हाथ मिलाते नहीं देखाथा? क्या तूने इस बातको नहीं ताड़ा?

रौद्रिगो–हाँ मैंने यह देखा है, पर वह केवल शिष्टाचार था।

यागो–तेरे शिर की सौगंध,वह कामाचार था। वह जो कल होने वाला है,उसकी अनुक्रमणिका थी वह कामातुरता और दुर्विचारोंकी कहानी की गुप्त प्रस्तावना थी। बातचीत करते समय उनके अधर एक दूसरेके इतने समीप थे कि उनकी साँसों का पूरा सम्मेलन होता था। रौद्रिगो--यहदुष्ट विचार हैं जब इसभांति का परस्पर संबंध अग्रगामी होता है तो तत्काल मुख्य वास्तविक काम भी बनजाता है पापलीला होही जाती है। धुत! पर भइया! तुम मेरे कहने पर चलो। मैं तुमको बेनिससे इसी कामके लिये लाया हूं। तुम आज रातभर जागते रहना और तुमको जो कुछ करना होगा वहँ मैं पीछे बतलाऊंगा। केसियो तुमको नहीं जानता है। मैं तुमसे दूर नहीं हूंगा। तुम कोई ऐसा ढंग निकालना कि जिससे केसियो क्रुद्ध हो जाय या तो कोलाहल मचा देना या उसकी नियमपालन की व्यवस्था पर कोई दोषारोपण करदेना या कोई दूसरी बात करदेना जिसका करना तुम समयानुकूल समझो जिस प्रकार हो, उसको कुपित कर देना।

रौद्रिगो-अच्छा।

यागो–भइया, वह उतावला है और सहसा क्रुद्ध होजाता है सम्भव है कि वह तुम्हारे साथ मार पीट कर बैठे। उसको खूब

चिढ़ाना जिससे वह ऐसा कर डाले । बस इतनेही से मैं साइप्रस के लोगों में हलचल मचा दूंगा । और उनका क्रोध बिना केसियो के पदच्युत हुए शाँत नहीं होगा । इसप्रकार हमारे मार्गमें जो विघ्न है टल जावेगा और हमारा बड़ा लाभ होगा । तुम्हारी इच्छायें अल्प समय में ही पूर्ण होजावेंगी, क्योंकि उस समय मुझे उनके पटाने का प्रयत्न करनाही शेष रह जायगा । जब तक कि ऐसा नहीं होता, हमारे कृतकार्य्य होने की कुछ आशा नहीं है ।

रौदरिगो—मैं ऐसा अवसर ढूंढूंगा और यदि हाथ लगगया तो इस कामको सिद्ध करूँगा ।

यागो—निःसन्देह तुझे ऐसा अवसर मिल जायगा । दुर्ग में आकर मुझे शीघ्र मिलना । मैं ओथेलो का असबाब जहाज से लेनेको जारहाहूँ । प्रणाम ।

रौदरिगो—दंडवत् । (रौंदरिगो जाता है)

यागो—केसियो देशदामिनी से स्नेह रखता है, मुझे इसका पूर्ण विश्वास है । वह भी उससे स्नेह रखती है, यह बात संभव है और इसका सुगमता से विश्वास होसकता है । मूरको चाहे मैं देख नहीं सकता, परन्तु वह एक स्थिर, प्रिय और उच्च प्रकृतिका पुरुष है । मेरा निश्चित विचार है कि वह देशदामिनीका परम प्रिय पति होगा । मैं भी देशदामिनी का प्रेमी हूँ । इसका कारण केवल कामेच्छा ही नहीं है (कदाचित् मैं ऐसे बड़ेपापका भी भागी हूँ), प्रत्युत किसी अँशमें इसका कारण मेरी बदला लेनेकी प्रबल इच्छा भी है, क्योंकि मुझे सन्देह है कि कामी मूर मेरी शयन-शय्या पर कूद पड़ा है । इसकी चिंता एक रसादि विष के समान मेरे हृदयको काटती रहती है । और मेरी आत्मा तब तक किसी प्रकार शाँत नहीं होसकती है और न होगी जब तक कि मैं या तो स्त्रीका बदला स्त्रीसे न चुकालूँ

था इसमें सफल न होनेपर मूरको देशदामिनी की ओर से इतना संदिग्ध चित्त न बना डालूं कि जिसकी शांति विचारशक्तिके बाहरहो। बेनिसका यह लंडूरा कुत्ता, जिसके तेज शिकारी बनानेका मैं प्रयत्न कर रहाहूं, यदि उस कामको करदिखलाता है कि जिसपर मैंने उसे नियोजित किया है तो मैकलकेसियो सीधा हमारे दांव पेच में फंस जायगा तब मैं मूरसे उसकी भरपेट झूठी निन्दा करूंगा, क्योंकि मुझे शंका है कि उसने भी रात्रिमें मेरे पर्यंक में पांव अड़ाया है। फिर आगे मैं एक ऐसी अनोखी चाल चलूंगा जिससे ओथेलो मेरा गधा बन जायगा, और ऐसा छल प्रपंच रचूंगा कि जिससे उसकी सुख शांति में भारी धक्का लगकर वह विक्षिप्त होजायगा, परन्तु साथ ही वह मेरा धन्यवाद करेगा, मुझे प्यारा मानेगा और मुझे पारितोषिक देगा। जो षड्यंत्र मैं रचना चाहता हूं उसका मोटा विचार मेरे मनमें अंकित होगया है, परन्तु उसको पूरा और परिपक्क करने के लिये समय चाहिये। जबतक कि वंचकता कार्य में परिणत नहीं होती है तब तक उसका पूरा २ ज्ञान नहीं होसकता।

दूसरा दृश्य। एक बाज़ार।

(एक विज्ञापन को लिए हुएएक ढिंढोरिया का प्रवेश।
और लोगोंका उसके पीछे २ जाना)

ढिंढोरिया—हमारे उदार और वीर सेनाधिपति ओथेलो महोदय की यह इच्छा है कि अब तुर्कों के बेड़े के विध्वंस होने के समाचार आपहुँचे हैं, इसके उपलक्ष्य में प्रत्येक मनुष्य को हर्ष मनाना और राग रंग करना चाहिये, कोई नाचे गावे और कोई होली जलावे प्रत्येक पुरुष ऐसे खेल खेले और पानमहोत्सव करे, जैसी कि उस की उमंग हो, क्योंकि इस आनंद-दायक समाचार मिलनेके सिवाय

इस अवसर पर उनके विवाह का भी उत्सव मनाया जायगा। उन की इस इच्छा की घोषणा कीजाय। आज दुर्ग के सब दालान और स्थान खोले गये हैं तथा वहां आनन्दसुखप्रद पदार्थ सबको बर-ताये जाते हैं, जिसका जी चाहे स्वतंत्रतासे इस पाँच बजे से लेकर ग्यारह बजे तक वहाँ जाकर सम्मिलित होसकता है, किसी प्रकार की रोक टोक नहीं है। सर्वशक्तिमान् परमेश्वर इस साइप्रस टापू का और हमारे महानुभाव सेनाधिपति ओथेलो महोदयका मंगल करें।

तीसरा दृश्य

दुर्ग में एक दालान।

(ओथेलो, देशदामिनी, केसियो और अनुचरवर्ग का प्रवेश)

ओथेलो—सुजन मैकल, तुम आजरातको पहरेका निरीक्षण करना। हमको सदैव सावधान रहना उचित है और मोद प्रमोदमें अति नहीं करनी चाहिये। हमको उस संयम का अनुयायी रहना योग्य है कि जिससे हम हर्षोल्लास में विचारशीलता की सीमाका उलंघन न करने पावें।

केसियो—यागो को कि कर्तव्य के विषय में आदेश मिल चुका है, तथापि मैं अपनी आंखसे प्रत्येक बातकी जाँच करूंगा।

ओथेलो—यागो बड़ा सत्यशील है। अच्छा मैकल नमस्ते, कल जितना शीघ्र होसके प्रातःकाल ही मुझसे मिलना मुझे तुम से कुछ बातचीत करनी है। (देशदामिनी से) मेरी प्राणप्यारी, प्रेम का सौदा होचुका है, यह अवश्य फलीभूत होगा और हम दोनों इससे बड़ा लाभ उठावेंगे। अच्छा केसियो, नमस्ते।

(ओथेलो देशदामिनी और अनुचर वर्ग जाते हैं।)

(यागो का प्रवेश)

केसियो—आओ, यागो तुम अच्छे आये हमें पहरे पर जाना चाहिये।

यागो–नहीं सहकारीजी अभी नहीं,अभी दस भी नहीं बजे हैं। हमारे सेनाधिपति ने देशदामिनी के प्रेमके हेतु हमें अभी से धक्के देदिये हैं। इसमें उनका कुछ अपराध नहीं है,उन्होंने अभीतक रात्रि में उसके साथ काम कलोल नहीं किया है। वह तो इन्द्र के रमण योग्य है।

केसियो–वह अत्यन्त विशिष्ठ श्रीमती है।

यागो—और मैं इस बातका बीड़ा उठा सकता हूं कि वह कला कौतुक पूर्ण है।

केसियो—सचमुच उसका खिलता योवन है और वह बड़ी सुकुमार है।

यागो–अहा! उसके क्याही मनोहर नयन हैं मानो शत्रुओं से भी सम्मिलन करने के लिये घोषणा करते हैं।

केसियो–हां! वे लुभाते तो हैं तौभी मैं सोचता हूं कि उनमें यथोचित लज्जा भी है।

यागो–और सचमुच जब वह बोलती है तो मानो कामदेव का आह्वान करती है।

केसियो—निःसन्देह वह सद्गुणों से परिपूर्ण है।

यागो-ठीक है, उनके कामकलोल मंगलमय हों। आइये सहकारीजी मेरे पास एक मटकी मदिरा की है और बाहर साइप्रस के दो वीर खड़े हैं, उनकी इच्छा है कि कृष्ण ओथेलो महाशय की आरोग्यता के लिये एक २ पात्र चढ़ावें।

केसियो–नहीं भाई यागो आज रात नहीं, थोड़े से सुरापान से ही मेरा मस्तिष्क चक्कर खाने लगता है, मेरी तो यह अनुमति है कि शिष्टाचार के लिये सत्कार की कोई और प्रथा निकाली जाय तो अच्छा हो।

यागो—अरे भाई-वे तो हमारे मित्र हैं बस एक प्याली तो पीनी ही होगी, अच्छा तुम्हारे बदले मैं पीलूँगा।

केसियो—मैंने आजरात एकही प्याली पी है और उसमें अपनी जानमें चतुराई से पानी भी मिला लिया था पर देखो तो उससे ही मेरा रंग ढंग कैसा बदल गया है। दुर्भाग्यवश मुझ में यह बडी त्रुटि है और अब मुझमें और पीनेकी सामर्थ्य नहीं है।

यागो--अरे भलेमानस तुझको क्या होगया है? यह रात तो पानगोष्ठियों की है--उन वीरों की ऐसी ही इच्छा है।

केसियो--वे कहाँ हैं?

यागो—वे यहां दरवाज़े पर खड़े हैं, मैं विनती करता हूं कि उनको भीतर बुला लीजिये।

केसियो—मैं उनको बुलातो लूँगा पर यह बात मुझे अच्छी नहीं लगती। (जाता है।)

यागो-यदि मैं उसको एक प्याला और पिला सकूं तो, उसने आज रात एक प्याला पी ही रक्खा है इस एक और प्याले से वह एक नौजवान मेम के पालतू कुत्ते के समान झगड़ा करने और चिढ़ने लगेगा। तथा इस समय मेरे कामरोगी अनगढ़ रौदरिगोकी क्या दशा होरही है? वह देशदामिनी की लगन में विक्षिप्तसा हो रहा है, और उसकी आरोग्यता के लिये बोतल पर बोतल गटका चुका है। वह पहरा देरहा है। मैंने साइप्रस के तीन लौंडों को जो बडे घराने के और बड़े तीव्र स्वभाव के हैं जो ज़रा से अपमान पर मारने मरने को उतारू होजाते हैं और जो इस लड़ाकू टापू के मानो तत्त्वसार हैं, प्याले पर प्याले चढवा कर खूब गरम कर रक्खा है। और वेभी पहरा देरहे हैं। अब इन पियक्कडों की चौकड़ी में मैं केसियो

को किसी बातपर जुझाऊँगा जिससे सारे टापूके लोग चिढ़ उठेंगे। देखो वे यहां आते हैं।

जो वैसी ही बात होपड़े, जैसा मैंने किया विचार।
वरुण पवन मिल सानुकूल हों, मेरा लगता बेड़ा पार।

(केसियो का पुनः प्रवेश, उसके साथ मौनतेनो और कुछ भद्र-
पुरुष आते हैं।)

केसियो—परमेश्वर साक्षी है इन्होंने मुझे एक बड़ा गिलास अभी पिला दिया है।

मौनतेनो--धर्मकी शपथ है वह छोटा था—आधसेर भी न था। सैनिक असत्य भाषण नहीं करते हैं।

यागो--अरे थोड़ा मदिरा लाओ। (गाता है)

प्याली बजाऊं मैं टन टन टन, प्याली बजाऊँ मैं टन टन टन,
सैनिक भी तो है एक जन, चार दिवस का है जीवन।
पीने उसे दो फिर भरमन, प्याली बजाऊँ मैं टन टन टन॥
लड़को कुछ मदिरा लाओ।

(मदिरा लाईजाती है)

केसियो—ईश्वर की शपथ यह अत्युत्तम राग है।

यागो—मैंने इसको इंगलिस्तान में सीखा है जहाँ के लोग निःसन्देह घनघोर पियक्कड़ हैं। आपके जर्मन, डेनमार्क निवासी, आपके बड़ी तोंदवाले हौलेंडी, अंग्रेजों के सामने कुछ चीज़ नहीं हैं, अच्छा पियो।

केसियो—तो क्या अंग्रेज लोग दारू पीनेमें ऐसे धुरंधर हैं?

यागो—अंग्रेज बड़े मजेमें पीता है, डेनमार्क वासी तो नशे में चकनाचूर होजाता है, उसके लिये पीने में जर्मन को हराना कोई बड़ी बात नहीं है, हौलेंडीको तो वह ऐसा मत्त बनादेता है कि दूसरी

मटकी के भरेजाने के ही पहिले वह छर्दकर बैठता है, और अंग्रेज को तबतक कुछ "बोध" नहीं होता ।

केसियो-(मदिरा की प्याली उठाकर) अपने जरनैल महाशय की आरोग्यता के लिये मैं इसका ग्रहण करूंगा ।

मोनतेनो-- सहकारीजी मैं भी उनके ही लिये मदिरा के अपने उचित भागको पीऊंगा ।

यागो-आहा । प्यारे इंगलिस्तान । (गाता है)

राजा ष्टीफन योग्य प्रधान,

सूँथन पर होता था उसके खर्च एकही क्रान+ ।

उसको मँहगा आध शिलिंग*वह पर पड़ता था जान।

दर्जी को इस पर वह कहता झूटा है बेमान ।

वह अति नामी एक जनाथा, तूतो नीच महान ।

नाश देशका घमंड करता, पहन पुराना चोगा मान ।

अरे कुछ दारू और लाओ ।

केसियो-यह तो पहिले के रागसे और भी मनोहर है ।

यागो—क्या तुम उसको फिर सुनना चाहते हो ?

केसियो-(मदोन्मत्त होकर) नहीं मैं उसको अपने पदके अयोग्य समझता हूं, जो ऐसी बातें करता है। हां ! परमेश्वर सर्वोपरि है, कोई लोग तो ऐसे हैं जो स्वर्ग में जावेंगे और कोई ऐसे हैं जो नरक जावेंगे ।

यागो-हां सुजन सहकारी सेनाधिपति जी, यह सत्य है ।

केसियो--इस बातका जनरल साहब या कोई अन्य अधिकारी बुरा न मानें अपने लिये तो मैं कहसकता हूं कि मुझे स्वर्ग मिलने की आशा है ।

+ क्रान=प्रायः चार रुपया ।

* शिलिंग=बारह आना ।

यागो—सुजन सहकारी सेनाधिपति जी, मुझे भी ऐसी ही आशा है।

केसियो—यह ठीक है परन्तु आपकी अनुज्ञा से मैं यह कह सकता हूँ कि आप मुझसे पहिले नहीं जासकते। पताकावाहक के पहिले सहकारी को स्वर्ग में जाना चाहिये। अब हमको यह आलाप प्रलाप बंद कर देना चाहिये और अपने२ काम पर पहुँचना चाहिये। परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करे। महाशयो! अब हमको अपने व्यवसाय में लगना उचित है। महाशयो! आप इस बातका तनिक विचार न करें कि मैं मतवाला होरहा हूं, देखिये यह पताकावाहक है, यह मेरा दाहिना हाथ है और यह वायां हाथ है। मैं इस समय कदापि मदोन्मत्त नहीं मैं भली भाँति खड़ा होसकता हूँ, और भली भाँति बोल सकता हूँ।

सब—हां बहुत अच्छी तरह से।

केसियो। अच्छा तो आप लोगोंको यह नहीं सोचना चाहिये। कि मैं मतवाला हो रहा हूँ। (जाता है।)

मौनतेनो—अच्छा भाइयो अब हमको दुर्गके अलिंद×पर चलना और चौकियों पर पहरा बांट देना चाहिए।

यागो—आपने इस व्यक्ति को जो आगे गया है भाँपा? वह सैनिक है, और लडाई के समय सेना संचालन करने में सीजर+के समान योग्य है, परन्तु उसका दुर्गुण देखिये वह ठीक उसके गुणके बराबर ही है। जितना उसमें गुण है उतना ही दुर्गुण है। वह शोचनीय है कि उसमें ऐसा व्यसन है। जब कि ओथेलो महाशय ने उसको एक ऐसे बड़े विश्वास का पद सौंप रक्खा है। मुझे शंका है

×अलिंद=चबूतरा।

+ सीजर रोमका एक नामी वीर सेनापति जिसने इंगँलिस्तान को जीता था।

कि वह किसी न किसी दिन जब वह वारुणीकी तरग मे आवेगा, तो कोई ऐसा अनर्थ कर बैठेगा कि जिसमें इसद्वीपमें हलचल मच जायगी

मौनतेनो—पर क्या वह बहुधा ऐसाही रहा करता है ?

यागो—उसके सोनेके पहिले सदैव ऐसी ही प्रस्तावना होती है। यदि मदिरारूपी पालने में झूलने से वह निद्रावश न होजाया करे तो वह घड़ी के दो चक्कर लगाने तक पहरा देसकता है।

मौनतेनो—यदि सेनाधिपति महाशय इस बात से सचेत कर दिये जाते तो अच्छा होता। कदाचित् उनको इसकी खबर नहीं है, या उनका ऐसा अच्छा स्वभाव है कि वे केसियो के दृश्यमान गुणों की प्रतिष्ठा करते हैं और उसके दूषणों की ओर झाँकते भी नहीं। क्या यह बात सच्ची नहीं है ?

(रौदरिगो का प्रवेश)

यागो—(अलग होकर) कहो रौदरिगो क्या बात है? मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम सहकारीका पीछा मत छोड़ो-जाओ।

(रौदरिगो जाता है।)

मौनतेनो—यह बड़ा शोचनीय विषय है कि मूर महोदय ने अपना सहकारी पद ऐसे पुरुष के भरोसे छोड़ रक्खा है, जिसकी मदिरापानकी ऐसी बुरी बान है, उनको यह बात जतादेनी बहुत ठीक होगी।

यागो—यदि कोई इस सारे साइप्रस द्वीपकी सम्पत्ति भी मुझको देनी करे, तौभी मैं ऐसा काम कदापि नहीं करूँगा। मैं केसियो को बड़ा प्यारा मानता हूँ और मैं भरशक्य उसकी इस बुरी लतको छुड़ाने का प्रयत्न करूँगा, पर सुनो तो यह कैसा गुल गपाड़ा होरहा है ?

(नेपथ्य में बचाओ बचाओ की चिल्लाहट।)

(रौदरिगो को खदेड़ते हुए केसियो का पुनः प्रवेश।)

केसियो—अरे दुष्ट ! अरे नीच !

मौनतेनो—सहकारी जी ! क्या बात है ?

केसियो-यह बदमाश, मुझे मेरा काम सिखलाता है! मैं इसको ऐसा पीटूँगा कि यह जितना लंबा है उतनाही चौडा होजायगा।

रौदरिगो—अच्छा मारतो !

केसियो—अरे पाजी ! तू फिर बक २ करता है।

(रौदरिगो को मारता है।)

मौनतेनो-- सुजन सहकारी जी ऐसा न कीजिये। (उस को रोकता ह।)मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि आप अपना हाथ रोक लीजिये।

केसियो-महाशय,मुझे जाने दीजिये। नहीं तो मैं आपका कपाल लाल करदूँगा।

मौनतेनो--चुपरहो, चुपरहो, तुम मतवाले होरहे हो।

केसियो--मतवाला ! (वे आपस में मारपीट करते हैं।)

यागो--(रौदरिगो से अलग होकर) अरे ! मैं कहता हूँ कि यहाँ से भाग जा और बाहर जाकर पुकार मचा के गदर होगया है। (रौदरिगो जाता है) नहीं सुजन सहकारी ऐसा न करो। परमेश्वर की दुहाई सज्जनो बस करो। सहकारी महाशय! मौनतेनो महाशय ! बस करो, मेरे राजाओ ! यह पहरा देनेकी भली निराली रीति है ! (भयसूचक घंटी बजती है।) अरे वह पिशाच कौन है जिसने भय सूचक घंटी बजाई है ! इससे सारे नगरके लोग जाग उठेंगे। मैं तुम्हें परमेश्वर की सौगँध देता हूँ सहकारी बस करो, तुमको जन्मभर पछताना पड़ेगा।

(ओथेलो और अनुचर वर्गका पुनः प्रवेश)

ओथेलो--अरे यहाँ क्या मामला है ?

मौनतेनो-ईश्वर की शपथ मैं लोहू लुहान होगया हूँ। मेरे ऐसी

चोट लगी है कि मरजाऊँगा। उसकी मौत आगई है। (मूर्च्छित होता है।)

ओथेलो-तुमको अपनी जान का कुछ प्रेम हो तो बस करो।

यागो-बस करो सहकारी महाशय, मौनतेनो, सज्जनो ! क्या तुम अपने पद और कर्तव्य की सब सुध भूल गये हो ? जरनैल साहब कहते हैं बस करो रुक जाओ, रुक जाओ, बड़ी लज्जा की बात है।

ओथेलो-अब कहो यह कैसे हुआ है ? क्यों हुआ है, कैसे इस की जड़ जमी है, क्या अपने आपसमें ही हम तुर्क बन गयेहैं और अपने आप अपने लिए वह बात करते हैं जो परमेश्वरने उनके हाथ से हमारे लिए नहीं होनेदी है क्या क्रिस्तान होकर तुमको ऐसाकाम करने में लज्जा नहीं आती। इस जंगली मार कूट को बन्द करो। अब जो जरा चूँ करेगा वह अपनी क्रोधाग्नि में आपही आहुति बनेगा वह अपने प्राणको तृणवत् समझेगा, और हिलते ही क्षण मारा जायगा उस भयानक घंटी को बंद करो वह इस द्वीपनिवासियों को आपे से बाहर कर देगी। कहो सेनानायको! यह क्या बात है सत्यशील यागो जो शोक से मृतवत् जान पड़ता है, बोल किसने यह झगड़ा उठाया है तू मुझसे प्रेम रखता है इसलिये सच कहना।

यागो-मैं नहीं जानता हूँ, क्षणभर पहिले ये आपस में परम मित्र थे, अभीतक दालान में इनमें सुखशय्या पर जाने के लिये कपड़े खोलते हुये दुलहा दुलहिन का सा बर्त्ताव था। किन्तु फिर अभी (मानो किसी ग्रह की वक्रगतिने मनुष्यों को विक्षिप्त बना दिया है) अपनी तलवारें म्यान से खींचकर ये एक दूसरे की छातीपर वार करने को परस्पर के जानलेवा बनगये हैं। मैं नहीं कहसकता हूं कि किसने इस निष्कारण झगड़े को उठाया है। परमेश्वर करता

कि यशस्कर रणभूमि में शत्रुके हाथसे मेरी यह दोनों टाँगें टूट-जातीं जो मुझे इस ठौर इस झगड़ेका एक अँश देखने के लिये लाई हैं।

ओथेलो-(केसियोसे) कहो मैकल, यह कैसे हुआ, कि-तुम अपने आपको ऐसे भूलगये ?

केसियो-मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे क्षमा प्रदान करैं-मैं कुछ नहीं कहसता हूँ।

ओथेलो-(मौनतेनोसे)योग्य मौनतेनो,तुम तो बड़े शील स्वभाव थे तुम अपनी युवावस्था में इतने गंभीर और शांत थे कि संसार तुम्हारी प्रशंसा करता था और बुद्धिमान् लोगों के बीच तुम्हारा बड़ा नाम था। यह क्या प्रसंग है कि तुम अपने मानकी धोती को कंधनी की समान ढीली कर रहे हो ? और जो अच्छा नाम तुम ने कमाया है उसके बदले निधड़क होकर "रातका झगड़ालू" इस उपाधिको प्राप्त कर रहे हो मुझे इसका उत्तर दो।

मौनतेनो-श्रीमान् महोदय, मेरे बड़ी भारी चोट आई है, आप का अधिकारी यागो इसका सब ब्यौरा कह सकता है। मैं जो कुछ कि इस विषय में जानता हूँ उसके कहने में मुझे क्लेश होगा, इस लिये मैं कुछ नहीं कहता हूँ यदि आत्मरक्षा करना कभी बुराई न हो और अनुचित प्रबल प्रहार से अपने को बचाना पाप न हो तो अपनी जान मैंने न कोई बुरी बात कही है और न की है।

ओथेलो-अब परमेश्वर की शपथ मेरी निर्भय निर्देशक विवे-चन शक्ति, दूरदर्शिता आदिको क्षोभ दवाने लगा है, मेरी निर्णय शक्तिको दूषित करके मुझे अपनी करवट में लाना चाहता है यदि मैं कुछ कर बैठूँ या केवल अपना हाथ उठाबैठूं तो तुम उस कठोर दंड से जो मैं दूँगा भयभीत हो जाओगे। मुझे बतलादो कि यह निन्दनीय लड़ाई कैसे ठनी है किसने इसको ठाना है और जिसपर

यह अपराध प्रमाणित होजायगा चाहे वह मेरा सहोदर भाई ही क्यों नहो मैं उसको निकाल बाहर करूंगा । कितनी बुरी बात है कि ऐसे नगरमें जो अभी संग्राम के लिये सुसज्जित है, जो अभी उत्तेजित अवस्था में है और जहां के निवासियों के हृदय अभी तक अपने ठिकाने में नहीं आये ऐसे निशासमय में और फिर सेना निवास के पहरे में एक निज और घरेलू मामले में झगड़ा करने का अवसर ढूँढा जाय यह अनोखी बात है। यागो इसका आरंभ किसने किया है?

मौनतेनो—पक्षपातसे या अधिकार के संबन्ध से यदि तू सत्य बातको न्यूनाधिक कहेगा तो सच्चा सिपाही नहीं है।

यागो—मुझसे वह काम न कराइयेगा जिसके करने में मुझे बड़ा दुःख होगा। यद्यपि मैकल केसियो पर दोषारोपण करने की अपेक्षा मैं मुंहमें से अपनी जिह्वा कटाकर फिंकवा देना अच्छी मानता हूं, तौभी मुझे वह सत्य वार्त्ता कहनी ही पड़ती है कि जिससे उसकी कुछ हानि नहीं होगी। सेनाधिपति महाराज, यह गोलमाल इस भाँति हुआ है कि मौनतेनो और मैं बातचीत कररहे थे। इतने में ही वहां एक व्यक्ति "मुझे बचावो२" चिल्लाता हुआ आगया। केसियो अपना बदला चुकाने के हेतु उसको मारने के लिये तलवार उठाये हुए उसके पीछे२ आरहा था। महाराज! यह सज्जन(मौनतेनो) बीचमें पडा और इसने केसियो से रुकजाने की प्रार्थना की,मैं इस विचारसे कि उसके हल्लेगुल्ले से (जैसा कि होपडा है) कहीं नगरनिवासी भयभीत न होजायं,उस चिल्लाते हुये व्यक्ति को पकडनेकेलिये चलागया पर वह मेरे हाथ नहीं आया। और जब मैंने तलवारों की झनकार,चोट की ध्वनि और केसियोको डींग मारते सुना जैसा कि मैंने आजकी मिती तक पहिले कभी नहीं सुनाथा। तो मैं लौट आया। जब मैं वापिस

आया। (इसमें बहुत देर नहीं लगी) तो मैंने इनको आपस में वैसाही जुझा हुआ पाया और ये एक दूसरे पर वैसेही प्रहार और चोट कर रहे थे जैसे कि वे फिर उस समय थे जब कि श्रीमान्‌ने उनको छुड़ाया है। इससे अधिक वर्णन इस विषय का मैं नहीं कर सकता। पर मनुष्य मनुष्यही होते हैं, अच्छेसे अच्छे किसी अवसर पर चूक कर बैठते हैं। केसियो ने मौनतेनो को जो क्षति पहुँचाई है मेरी समझ में वह इसी भाँति की है, जैसी कि मनुष्य किसी समय क्रोध में आकर अपने मित्रों को भी, उनका अभिप्राय न समझकर, पहुँचा बैठते हैं। इसके साथही मेरा यह भी पक्का विश्वास है कि उस व्यक्ति ने जो भाग गया है केसियो का ऐसा असाधारण अपमान किया है कि जो किसी भाँति सह्य नहीं था।

ओथेलो--यागो, मैं जानता हूँ कि तूने केसियो के प्रेम और सद्भाव से इस विषयको ऐसा हल्का बना दिया है कि जैसा अन्यथा तू न करता और तूने इस घटना को इस भाँति वर्णित किया है कि जिससे केसियो बच जाय। अच्छा केसियो, यद्यपि तू मेरा प्रेम-भाजन है तो भी तेरा इतना बड़ा अपराध है कि उसके कारण से मैं तुझको पदच्युत करता हूँ।

(सेवकों के साथ देशदामिनीका पुनः प्रवेश)

देख इस कोलाहल को सुनकर मेरी सुकुमार प्रिया को यहां आना पड़ा है। मैं तुमको ऐसा दण्ड दूँगा कि जिसको देखकर और लोग ऐसा करने से हिचकेंगे।

देशदामिनी—क्या बात है ?

ओथेलो—अब सब ठीक होगया है। प्रिये, सोनेको जाओ। (मौनतेनोसे) महाशय! आपकी चोटोंका शस्त्रचिकित्सक मैं स्वयं

बनूँगा। (अनुचरों से) अच्छा, इसको लेजाओ। (डोली में मौन-तेनो को लेजाते हैं।) (यागो से) यागो, नगरकी रखवाली सचेत होकर करो। और उन लोगोंको जिनमें इस झगडेसे खलबली पड़गई है शान्त करो।

(देशदामिनीसे) आओ, देशदामिनी यह है सैनिकके जीवनका राग,
झगड़े और बखेडों द्वारा सुखनिद्रासे जाना जाग।

(यागो--और केसियो को छोड़कर अन्य सब जाते हैं।)

यागो--सहकारी क्या तुम्हारे कुछ चोट आई है ?

केसियो--हाँ ऐसी चोट आई है कि कोई शस्त्र चिकित्सक उसकी चिकित्सा नहीं कर सकता।

यागो--सचमुच, परमेश्वर ऐसा न करै!

केसियो--मान, मान! मान! हा! मैंने खो दिया है अपना मान। मैंने अपना अमर भाग खोदिया है और जो शेष है वह पशु कैसा है। अपना मान, यागो--अपना मान।

यागो--मुझसे सत्यशील मनुष्यने तो यह समझाथा कि वास्तव तुम्हारे में कोई शारिरिक चोट आई है जिसकी मानहानि की अपेक्षा भी अधिक वेदना होरही है। मान एक असार और निरा असत्य आरोपण है, वह बहुधा बिना योग्यताके मिलजाताहै, और विना अपराध खोया जाता है। यदि तुम अपनेको उसका खोनेवाला न मानो तो तुमको विदित होगा कि तुमने कुछ भी मान नहीं खोया है। अरे भइया तुम कैसे मनुष्य हो ? सेनापति महाशय की कृपा व मित्रता प्राप्त करने की अभी कई युक्तियाँ हैं। वे तुम से इस समय इस कारण से क्रुद्ध हैं कि तुम असावधानी से काम करने के अपराधी पाये गये हो और इस ही वास्ते उन्होंने तुम को पदच्युत

करना अत्यावश्यक समझा है, परन्तु इसके साथही उनका तुम्हारे साथ कोई द्वेषभाव नहींहै। जैसे कोई अपने निरपराध कुत्ते को उग्र तेजस्वी सिंह के शाँत करने को पीटता है वैसाही व्यवहार उन्होंने तुम्हारे साथ किया है। उनसे फिर विनय प्रार्थना करो तो वे अपने हो जायंगे।

केसियो--मैं एक ऐसे अच्छे सेनानायक को, एक अयोग्य पियक्कड और विचारशून्य कर्म्मचारी को फिर भरती करने के लिये धोखा देनेकी अपेक्षा उनसे तिरस्कृत होने की प्रार्थना करना भद्र तर समझता हूं। मतवाला होना? व्यर्थ बकवाद करना? रार मचाना डींगमारना? सौगंध खाना? और अपनी छायाके ही साथ ऊँचे स्वरसे अनर्गल बक बैठना? हे! अदृश्य मादिराकी शक्ति यह सब तेरी महिमा है। यदि तुझे पुकारनेके लिए तेरा और कोई नाम नहीं तो तेरा पिशाचनी नाम रखता हूँ।

यागो--वह कौन था जिसके पीछे तुम तलवार लिये भागे फिर रहेथे? उसने तुम्हारा क्या बिगाडा था?

केसियो-मुझे कुछ सुध नहीं है।

यागो—क्या यह संभव होसकता है?

केसियो—मुझे ढेरकी ढेर चीज़ें स्मरण आती हैं,परन्तु ठीकर याद एक की भी नहीं है। कुछ झगड़ा हुआ था पर यह ध्यान नहीं कि क्यों हुआ था। हे परमेश्वर! मनुष्य अपनी ज्ञानशक्ति को चुरवाने के लिये एक वैरी को अपने मुँहमें रखते हैं और हम हर्षोल्लाससे पानगोष्ठी से और श्लाघा से अपने को पशु बना डालते हैं। यह कैसा अंधेर है!

यागो--ऐसा क्यों कहते हो? अब तो तुम खासे अच्छे हो,

इतनी शीघ्र चेतमें कैसे आगये ?

केसियो। पानासक्तिरूपी पिशाचिनीकी ऐसी इच्छा हुई है कि क्रोधरूपी पिशाच को अपना स्थानापन्न करदूँ, इससे मेरा एक दूषण क्रोध, दूसरे दूषण पानासक्ति से मुझे इसभाँति अभिज्ञ कररहा है कि मैं अपने आपे से पूर्ण घृणा करने लगगया हूं।

यागो। अहो ! अब तो तुम बड़े कड़े नीतिशास्त्रकार बनगये हो। काल, देश और इस भूमि की वर्त्तमान अवस्था का विचार करके मैंभी अन्तःकरण से यही चाहता हूं कि ऐसी दुर्घटना न होती परन्तु जब होपड़ी है तो अपनी भलाई के लिये उसके सुधार का प्रयत्न करना चाहिये।

केसियो। यदि मैं उनसे फिर पदारूढ़ करने की प्रार्थना करूंतो निश्चय वे मुझसे यह कहेंगे कि तुम पियक्कड़ हो। उस उत्तरसे यदि मेरे शेषनाग*केसे सहस्र मुँह भी हों तो वेभी बंद होजायंगे। मदिरा के पीने से विचारशील मनुष्य भी उसी क्षण मूर्ख और फिर पशुवत् होजाता है, यह कैसा आश्चर्य है। मदिरा का प्याला और उसका अंग पिशाचतुल्य होता है।

यागो। बहुत बातें न बनाओ। उसका सुरीति से सेवन करना चाहिये, अच्छी सुरा भली स्निग्ध प्रिय वस्तु होती है। उसकी अधिक निन्दा करके अपना गला मत फाड़ो और सुजन सहकारीजी मैं समझता हूँ कि तुमको इसबात का ध्यान है कि मैं तुमसे प्रेम रखता हूँ।

केसियो। हां महाशय, मैंने अपने मतवाला होने के विचार की अच्छी परीक्षा करली है।

---

* मूलमें हिद्राह। वह एक सर्प था जिसके नो मुख थे। वह ठैफन और इच्दिना से पैदा हुआ था और वीर हरक्युलीज़ ने उसका वध कियाथा।

यागो। तुमतो क्या, संसारमें कोई भी ऐसा जीवित मनुष्य नहीं मिलेगा, जो अपने जीवनमें किसी न किसी समय मतवाला न हुआ हो। अब तुमको जो कुछ करना चाहिये मैं बतलाये देता हूं। हमारे सेनापति की पत्नी इस समय उन की अधीश्वरी है। मैं यह बात इस विषय में भी कह सकता हूँ क्योंकि वे अपनी पत्नी की गुणराशि और सौंदर्य के ध्यान, आलोचन और निरीक्षण में ही अनुरक्त और आसक्त रहते हैं। श्रीमती के पास जाकर मुक्त कंठसे अपना अपराध स्वीकार करतेहुए गिड़ गिड़ाकर प्रार्थना करो। उन की सहायता से तुमको फिर अपना पद मिलजायगा। वह ऐसी उदार, दयालु, योग्य, और परोपकारी प्रकृति की हैं कि जितनी भलाई करने के लिये उनसे प्रार्थना की जाती है उससे कम भलाई करना वह दूषण समझती हैं। यह गाँठ जो तुम्हारे औरउनके पति के बीचमें पड़ गई है, उसके खोलने के लिये तुम श्रीमतीसे प्रार्थना करो। अपनी सारी संपत्तिकी बाजी लगाकर मैं यह कह सकता हूं कि इस से तुम्हारा जो यह प्रेमका तार ढीला होगया है फिर ऐसा सुन्दर मिलजायगा कि जैसा पहिले भी कभी नहीं मिलाहोगा।

केसियो। तुम मुझे यह अच्छा परामर्श देरहे हो।

यागो। हां है निष्कपट प्रेम और सच्चरित्र दयाभावसे मैं तुमसे ऐसा करने का आग्रह करता हूं।

केसियो। मेराभी ऐसाही विचार है। मैं कलभोरही धर्म्मशील देशदामिनी जीसे अपने विषयमें ओथेलो महाशय से हितवाद करने की प्रार्थना करूँगा। यदि मेरे दुर्भाग्य से इस में भी कुछ रुकावट हुई तो फिर मेरा कहीं ठिकाना नहीं है।

यागो। अब तुम ठीक मार्ग पर आगये हो। अच्छा, सहकारी प्रणाम। मुझे अब अवश्य ही पहरे के निरीक्षण को जाना चाहिये।

केसियो। सत्यशील यागो। प्रणाम (जाताहै)।

यागो। यह सम्मति जो मैंने दीहै ऐसी है जैसीकि कोई निष्कपट या श्रेयाभिलाषी व्यक्ति देता है और वह विचार से संभव विदित होती है और वास्तव में मूरको फिर वश में लाने की यह एकही युक्ति हैं, तो कहिये इस व्यक्तिको क्या कहियेगा, जो मुझ पर यह दोषारोपण करे कि मैं दुष्टता कर रहा हूं? क्योंकि किसी सच्ची प्रार्थनाको पूरा करने के लिये देशदामिनी को वशीभूत करना जो सदैव सहायता करने के लिये प्रस्तुत रहती है, बड़ी ही सुगम बात है, वह पंच तत्त्वों के समान उदार और दानशील है, और फिर मूरको अपने अधिकार में लाना तो उसके लिये बायें हाथका खेल है। यदि वह उससे कहे कि तुम अपना धर्म्म छोड़दो तथा अन्तरात्मा शुद्धिके सब बाहरी और दृश्य चिन्हों का परित्याग कर दो तो उसका हृदय उसके प्रेम बंधन मे ऐसा जकड़ा हुआ है कि वह अपनी इच्छानुसार जो ओथेलो के ऊपर इष्टदेवता के समान प्रभुत्व रखती है उससे जो चाहे जैसा चाहे करा सकती है। सुधरी को बिगड़वा सकती है, बिगड़ों को सुधरवा सकती है। जब कि मैंने केसियों की भलाई के लिये सीधा और सुगम मार्ग बतला दिया है तो किस प्रमाण से सिद्ध हो सकता है कि मैं दुष्टात्मा हूँ। यह पिशाचों का धर्म्मशास्त्र है! जब कि पिशाच मनुष्यों को घोर पाप करने के लिये भड़काते हैं तो वे पहिले ऐसाही संतोका भेष बनाकर लालच देते हैं जैसा कि लालच मैं देरहा हूँ। जब कि वह "सत्यशील मूर्ख" देशदामिनी से अपने पदोद्धारकी सटपट लगावेगा और उसके लिये वह मूरसे प्रबल हितवाद करेगी तो मैं उस के कानमें यह विषभरी भनक डालदूँगा कि देशदामिनी उसको फिर बुलाने और पदस्थ करने के लिये इतनी उत्सुक केवल इसलिये होरही है कि उसको अपनी कामेच्छा के पूर्ण करने का अवसर

मिल जाय और जितना २ वह केसियो की भलाई के लिये प्रयत्न करेगी उतना २ ही मूरका विश्वास उसके सतीत्वके विषय में घटता जायगा। इस भाँति मैं उसकी साधुताको पराकाष्ठा तक पहुंचादूंगा और उसकी भलाई से ही ऐसा जाल रचूँगा कि सब के सब उसमें फँस जायँगे। (रौदरिगो का प्रवेश) कहो रौदरिगो कैसे आये?

रौदरिगो। मैं यहां शिकार में शिकार नहीं खेल रहा हूँ प्रत्युत मूर्खों की भाँति गल फिर रहा हूँ। मेरा प्रायः सब रुपया खर्च हो चुका है। आजरात मुझपर खूब डंडे बजे और मैं समझता हूँ कि इसका परिणाम यही होगा कि जो इतने क्लेश उठाकर मुझे अनुभव हुआ है उसके अनुसार मैं यहाँ से नंगे पांव परन्तु कुछ शिक्षा ग्रहण कर के सीधा वेनिस को वापिस हो जाऊंगा।

यागो। वे हैं कैसे मूरख जिनमें, धीरज का कुछ नाम नहीं।
कौन घाव है ऐसा क्रमशः जो होता आराम नहीं।
काम बुद्धि से होता जादू से नहिं इसका तुझ को ज्ञान।
और काल की मंद चालपर, निर्भर रहतीबुद्धि निदान।

क्या सब काम ठीक नहीं होरहा है? अवश्य केसियो ने तुझकोपीटा है, पर तूने इस छोटी सी चोट को खाकर उसका मुख काला करादिया है। यद्यपि सूरज की धूपमें और वस्तुएं भी बढ़ती हैं, परन्तु वेही फल जिस में फूल पहिले लगते हैं पहिले पकते हैं। ओहो! धर्म्म की शपथ, प्रातः काल होगया है। हर्ष और काम काजमें समय जाता हुआ नहीं मालूम पड़ता। यहां से चला जा और जहां ठहरा हुआ है वहां जाके ठहर, यहां रुकने का कुछ काम नहीं है। शेष वृत्तान्त तुझसे मैं पीछे कहूँगा। जा चला जा। (रौदरिगो जाता है) अब दो बातें करनी हैं। एकतो मेरी स्त्री

को अपनी स्वामिनी से केसियो की सिफारिश करने का आग्रह करना चाहिये। मैं अभी उसको इस कामपर लगाऊँगा। दूसरे मुझे अपने आप मूरको कुछ समय के लिये अलग लेजाकर ठीक उस समय लाना चाहिये जब कि केसियो उसे अपनी स्त्रीसे अभ्यर्थना करताहुआ मिलजाय। हाँ, बस यही चाल है। अब मुझे शीघ्रता करनी चाहिये और इस अवसर को हाथ से नहीं जाने देना चाहिये। ताल चूका, अवसर बीता। (जाता है।)

तीसरा अंक।

पहिला दृश्य दुर्ग के सामने।

(केसियो और गवैयों का प्रवेश).

केसियो। गायनाचार्य्यो ! यहां गाओ। मैं आपको यथोचित पारितोषिक दूँगा। काई छोटी चीज छेड़ो जैसे सेनापति को सुखद प्रभात * (गाना होता है)

(विदूषक का प्रवेश)

विदूषक। क्यों गायनाचार्य्यो क्या तुम्हारे बाजे नेपल के बने हैं जो वे इस भांति गुन गुन करते हैं ? +

१ गवैया। क्यों महाशय ! कैसे ?

विदूषक। कृपापूर्वक बतलाइये, क्या इनको बीन बाजा कहते हैं ?

१ गवैया। हाँ मरियमकी शपथ, महाशय इनको यही कहतेहैं

विदूषक। हाँ मरियम की शपथ, महाशय उनपर पुंछल्ला लगा है।

---

* ब्याह के पीछे नवविवाहित स्त्री पुरुष को गाना गाकर जगाने की रीति थी।

+ नेपल वासी गुन गुना कर बोलते हैं।

१ गवैया। क्या पुंछल्ला लगा है? महाशय!

विदूषक। हाँ, महाशय मैं मरियम की शपथ खाकर कहता हूँ कि बहुत से बीन बाजोंपर जिन्हें मैं जानता हूँ पुंछल्ला लगारहता है। परन्तु गायनाचार्य्यो! लो यह तुम्हारा पारितोषिक है। और सेनापति महाशयने आपका गाना ऐसा अच्छा पसंद किया है कि अपनी प्रियाके कारण से उन्होंने यह आज्ञा दी है कि अब आप और गाकर कोलाहल न करें।

गवैया। अच्छा महाशय, अब हम गाना बंद किये देते हैं।

विदूषक। यदि तुम कोई ऐसा गाना जानतेहो ओ जो सुनाई न दे तो उसको गाओ, परन्तु, लोग कहते हैं कि सेनापति महाशय गाना सुनने की अधिक अपेक्षा नहीं रखते हैं।

गवैया। महाशय ऐसा गाना तो हम नहीं जानते।

विदूषक। तो अपनी बीनोंको झोलियोंमें डाललो और लो मैं यह गया। तुम भी हवामें कपूर बनजाओ। दूर होजाओ। (गवैये जाते हैं)

केसियो। मेरे सत्यशील सखा, क्या तू सुनता है।

विदूषक। नहीं मैं तुम्हारे सत्यशील सखाको नहीं सुनताहूं तुम्हें सूनताहूं।

केसियो। मैं तुझसे विज्ञप्ति करताहूं कि अपनी व्यंगोक्तियों को रहने दें। लो यह तुम्हारे लिये एक छोटा स्वर्ण मुद्राहै। यदि वह भलीमानस स्त्री जो सेनापति महाशय की पत्नी की सहेली है उठ बैठी हो तो, उससे कहदो कि केसिओ आया है और कुछ बातचीत करना चाहता है। क्या तुम इस कामको करदोगे?

विदूषक। हाँ महाशय, वह उठबैठी है और यदि वह यहाँ उठकर आगई तो जानलेना कि मैंने तुम्हारी सूचना उसको देदी।

केसियो। मेरे प्यारे सखा जाओ इसकाम को करदो।

(विदूषक जाता है।)

(यागोका प्रवेश ।)

यागो । तुम भले समय आये ।

यागो । तब फिर तुम सोनेको नहीं गये ?

केसियो । हाँ नहीं गया, जब तुम्हारा हमारा साथ छूटा था तब उजियाला होगया था । यागो मैंने तुम्हारी स्त्रीको बुलवानेका साहस किया है । मेरी उससे यह विज्ञप्ति है कि वह मुझे सती देशदामिनी का दर्शन करादे ।

यागो । मैं उसको तुम्हारेपास अभी भेजता हूँ और एसी युक्ति निकालूंगा कि जिससे मूर यहां से टल जाय और तुम स्वतंत्रतासे वार्त्तालाप करके अपना कार्य्य साधन करसको ।

केसियो । मै इसकेलिये नम्र भावसे तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ । (यागोजाता है ।) इससे बड़ा दयालु और सच्चरित्र मैंने कोई अपना स्वदेशी फ्लोरेन्स निवासी भी नहीं देखाहै ।

(यमिलिया का प्रवेश ।)

यमिलिया । प्रणाम, सुजन सहकारी जी ! मैं आपपर ओथेलो महोदय के अप्रसन्न होनेका समाचार सुनकर दुःखी हूं पर सब बात अवश्य ठीक होजायगी सेनापति जी और उनकी भार्य्या के बीच इस विषय में वार्त्तालाप होरहा है और वह तुम्हारे लिए बड़ा ज़ोरलगा रही हैं ।

मूर महाशय यह उत्तर देरहे हैं कि वह व्यक्ति जिसपर आपने आघात किया है सैप्रस में बड़ा नामी है और उच्चवंशों से उसका संबंध है, इसलिये सब बातोंका आगापीछा सोचकर वे अभी आपकी प्रार्थना स्वीकार नहीं कर सकते है । परन्तु साथही इसबात का अनुरोध भी कर रहे हैं कि वे आपको बडा प्यारा मानते हैं और इसकारण आपके पक्षमें उनको किसी प्रार्थक की आवश्यकता नहीं

है, और ज्योंही उनके हाथ कोई अच्छा अवसर लगेगा वे आपको फिर आपके पदपर नियुक्त करदेंगे।

केसियो। तथापि मैं तुमसे विनती करता हूं कि यदि तुम उचित समझो या इसबात को करसको तो ऐसा प्रयत्न करदो कि जिससे मुझे श्रीमती देशदामिनी जी से एकान्तमें एकआध बातचीत करने का अवकाश मिलजाय।

यमिलिया। अच्छा आप भीतर चलें आपको ऐसे निर्बाध स्थानपर रखदूंगी कि जहां आपको जी खोल कर बात चीत करने का अवसर मिल जायेगा।

केसियो। मैं तुम्हारा बड़ा कृतज्ञ हूँ। (दोनों जाते हैं)

—०—

दूसरा दृश्य। दुर्ग में एक दालान।

(ओथेलो, यागो, और भद्र पुरुषों का प्रवेश)

ओथेलो। यागो, ये चिट्ठियां मांझीं को देदो और उसके द्वारा राजसभा को मेरा दंडवत प्रणाम विनयपूर्वक पहुंचादो। जब तुम इस काम को कर चुको मैं तुम को दुर्गके परकोटों पर घूमता हुआ मिलूंगा तुम वहां मुझ से मिलना।

यागो। बहुत अच्छा श्रीमान् मैं ऐसाही करूंगा।

ओथेलो। चलिये सज्जनों इसगढ़बंदीको देखने के लिये चलियेगा।

भद्रपुरुष। श्रीमान्, आपकी जो आज्ञा, हम आपके सेवक हैं (जाते हैं)।

—·—

तीसरा दृश्य दुर्गकी वाटिका।

(देशदामिनी, केसियो, और यमिलिया का प्रवेश।)

देशदामिनी। सुजन केसियो, तुम इस बात से निश्चित रहो कि मैं तुम्हारे लिये यथा—शक्ति प्रयत्न करूंगी।

यमिलिया। सुशील श्रीमती, अवश्य ऐसा कीजिये। मैं बीड़ा उठाकर कह सकती हूँ कि मेरे स्वामी को इस बातका इतना शोक है कि मानो यह आपत्ति उन्हीं पर पड़ी है।

देशदामिनी। हाँ वह एक सच्चरित्र व्यक्ति है। केसियो। तुम इसबात से निःशंक रहो कि मैं तुम्हारे और अपने स्वामी के बीच में फिर ऐसी मैत्री करा दूँगी कि जैसी पहिले थी।

केसियो। उदार श्रीमती जी, चाहे मैकल केसियोकी कुछ भी दशाहो, वह सर्वदा आपका सच्चा सेवक बना रहेगा।

देशदामिनी। मैं इस बातको जानती हूं और इसके लिये तुम्हारा धन्यवाद करती हूं। तुम मेरे प्राणपति को प्यार करते हो, तुम उनको बहुत दिनों से जानते हो, इसलिये तुम इसबात को निश्चय समझो कि मैं ऐसा यत्न करूंगी कि जिससे जितना राज नीतिके विचारों से उचित है उससे अधिक कालतक वह तुम्हारे साथ विदेशीभाव नहीं रक्खेंगे।

केसियो। श्रीमतीजी, यह बात ठीक है: पर कौन जानता है कि वह राजनीति के विचार उनके मनमें इतने दीर्घकाल तक खटकते रहें या किन्हीं एसी काल्पनिक और असार घटनाओं से वे ऐसे पुष्ट हो जायँ या आवश्यकता से इतना अधिक बढ़जायं कि मेरी अनुपस्थि-ति में जब मेरे पदपर कोई अन्यव्यक्ति नियुक्त होजायगा तो सेना पति महाशय मेरे प्रेम और सेवाको भूल जायँगे।

देशदामिनी। इसकी शंका मतकरो, मैं यहां यमिलिया के सामने तुमको वचन देती हूं कि तुम्हारा पद तुमको मिल जायगा। इस बातको निश्चय समझो कि जब मैं मैत्रीका प्रण करती हूं, तो उसको साँगोपांग पूरा निभाये विना नहीं रहसकती। मैं अपने स्वामी को चैन नहीं लेने दूँगी, उनको तब तक सोने नहीं दूँगी

जबतक कि वे मेरी बात नहीं मान जायंगे। मैं उनसे तबतक वार्ता लाप करती रहूंगी जबतक कि वे शांत नहो जायंगे मैं उनकी शयन शय्याको पाठशाला की समान बनादूँगी और उन्हें भोजन करना चान्द्रायण व्रतकी समान फीका लगेगा। मैं प्रत्येक बात में जो वे करेंगे तुम्हारी विज्ञप्ति को मिश्रित करती रहूँगी। इस लिये केसियो प्रमुदित होजाओ। तुम्हारा अभियोग हार जानेकी अपेक्षा तुम्हारी उत्तर बादिनी अपना मरजाना पसंद करेगी।

(ओथेलो और यागोका कुछ दूरीपर प्रवेश।)

यमिलिया। महाशय, श्रीमान् आते हैं।

केसियो। श्रीमती, मैं अब विदा होना चाहता हूं।

देशदामिनी। नहीं ठहरजाओ और मेरी बात सुनलो।

केसियो। महाशय, इस समय नहीं, मैं अभी बहुत व्याकुल हो रहा हूं। और मेरी मनोवृत्ति ऐसी नहीं है कि अपना अर्थसिद्ध करसकूँ।

देशदामिनी। अच्छा जैसा तुम ठीक समझो वैसा करो।

(केसियो जाताहै)

यागो। ह! ह! मुझे यह बात अच्छी नहीं लगती।

ओथेलो। तू क्या कहता है?

यागो। कुछ नहीं श्रीमान्, मैं कुछ नहीं जानता।

ओथेलो। क्या वह केसियो नहीं था? जो मेरी स्त्री से विदा हुआ है?

यागो। क्या वह केसियो था? महाराज! निःसन्देह मैं ऐसा विचार नहीं कर सकता हूँ कि वह एक अपराधी की समान आपको आते देखकर इसभाँति छिपकर जाता।

ओथेलो। मैं विश्वास करता हूं कि वह वही था।

देशदामिनी । आइये प्राणनाथ, मैं इस समय एक प्रार्थक स बात चीत कर रही थी वह एक व्यक्ति था जो आपके अप्रसन्न होने से महान दुःखी है

ओथेलो । तुम्हारा अभिप्राय किससे है ?

देशदामिनी । आपनहीं जानते ! वह आपका सहकारी केसियो था। मेरे सुहृद स्वामी यदि मुझपर आपका कुछ अनुग्रह है या आप मेरी बात को कुछ भी मानते हैं तो उसका अपराध अभी क्षमा कर दीजिये। मै समझती हूँ कि यातो वह आपको सत्य भावसे प्यार करता है और यदि कुछ उसने किया है तो अनजान में किया है, जान बूझ कर नहीं किया या मुझे सच्चरित्र पुरुषकी पहिचान करनीही नहीं आती। मैं हाथ जोड़ती हूँ कि आप उसको फिर बुलालीजिये।

ओथेलो । क्या वह अभी यहाँ से गया है ?

देशदामिनी। हाँ और यथार्थ में वह यहाँसे इतना विनम्र होकर गया है कि मुझको भी अपने दुःख से किसी अंश में दुःखी बना गया। प्रेमाधार ! उसे फिर बुला लीजिये।

ओथेलो । नहीं प्रिये अभी नहीं किसी और समय।

देशदामिनी । तो क्या आप उसे शीघ्र बुला लेंगे ?

ओथेलो । प्यारी, जितना शीघ्र तुम कहोगी उतनाही शीघ्र मैं उसे बुला लूँगा।

देशदामिनी । तो क्या आप उसको आजरात के व्यालू के लिये बुलावेंगे ?

ओथेलो। नहीं आजरात को नहीं।

देशदामिनी । तो क्या आप उसको कल भोजन के लिये बुलावेंगे ?

ओथेलो । मैं कलको घरमें भोजन नहीं करूँगा । मुझे दुर्ग में सेनानायकों से मिलना है ।

देशदामिनी । तो क्या आप उसको कलरात को बुलावेंगे या मंगल के प्रभात में या मंगल के दोपहर या साँझ या बुध के प्रभात में । मैंपाँव पड़तीहूं ऐसा समय बतला दीजिये जो तीन दिनसे अधिक नहो । निःसन्देह वह अबबड़ा पश्चात्ताप कररहाहै । और साधारण रीति से विचार करने पर उसका अपराध ऐसा नहीं है कि (इस लोकोक्ति को छोड़कर कि सेना में आज्ञा को टालने के कारण से उत्तमों को भी नहीं छोड़ना चाहिये कि जिससे उनका दंड पाना औरों के लिये उदाहरण होजाय) जिससे वह हमारे आपसी व्यवहारों से भी वंचित रक्खा जाय । नाथ ! कहिये आप उसको कब बुलावेंगे ? मेरे मनमें इस बातका आश्चर्य होता है कि ऐसी कौन वस्तु है जिसे आप मुझसे माँगें और मैं आप को न दूं या देनेमें संकोच करूं ? तोफिर यह क्या बात हुई कि मैकल केसियोके पुनःपदस्थ करने के लिये , जो आपके साथ, जब कि आप मेरे विवाहप्रार्थी थे वार २ आया जाया करता था, और जब मैं आपके विषय में उलटी सीधी बातें करती थी तो वह आपका पक्ष पुष्ट करता था, मुझे आपके आगे इतना प्रयास उठाना पड़ रहा है ! मैं विश्वास करती हूं कि मैं इससे बड़ी अभ्यर्थना आपसे कर सकती हूं ।

ओथेलो । मैं तुझ से विनती करता हूं कि अब अधिक कहने की आवश्यकता नहीं, वह जब चाहे आसकता है । मैं तेरी कोई बात अस्वीकृत नहीं करूँगा ।

देशदामिनी । यह मैं कोई बड़ा अनुग्रह आप से नहीं चाहती हूँ । यह तो एक ऐसी साधारण बात है कि जैसे मैं आपके ही भले के लिये आप से नम्र भाव से कहूं कि आप अपने दस्ताने पहिन

कीजिये, या अच्छे पुष्ट पदार्थ भोजन कीजिये, या गरम कपड़े पहिनिये या और कोई बात कीजिये जो आप की ही विशेष भलाई के लिये हो हां, जब कभी मुझे ऐसी अभ्यर्थना करनी होगी जिस से मुझे वास्तव में आप के प्रेम की परीक्षा करनी होगी तो वह कोई ऐसी भारी मांग होगी जिस को पूरा करने में आप हिच किचायेंगे।

ओथेलो। मैं तुझ से किसी बात के लिये ना नहीं कहूंगा और इस के प्रत्युपकार में मेरी तुझ से यह विज्ञप्ति है कि तू थोड़ी देर को कुछ विचार करने के लिये मुझे यहां अकेला छोड़दे।

देशदामिनी। क्या मैं इस बात से इनकार करसकती हूं? कभी नहीं। अच्छा प्राणनाथ, प्रणाम।

ओथेलो। नमस्ते,देशदामिनी मैं अभी सीधा तेरे पास आऊंगा।

देशदामिनी। जैसी आपकी रुचि हो आप वैसा कीजिये, आप चाहें जैसे भी हों मैं आप की आज्ञानुवर्तिनी सेविका हूँ। आओ यमिलिया।

(यमिलिया के साथ जाती है।)

ओथेलो। (अपनेआप) मेरी बांकी छबीली चाहे मेरी आत्मा का नाश होजाय तो भी मैं तुझे विना प्यार किये नहीं रहूँगा, और जब मैं तुझे प्यार करना छोड़ दूँगा तो प्रलय होजायगी।

यागो। महानुभाव श्रीमान्।

ओथेलो। क्या कहता है यागो?

यागो। जब आप श्रीमती जी के विवाहार्थी थे तो क्या आप की प्रिया से मैकल केसियो परिचित था?

ओथेलो। हां आरम्भ से लेकर अन्त तक। तू ऐसा प्रश्न क्यों करता है?

यागो । मुझे ऐसा विचार नहीं था कि केसियो उनसे परिचित था।

ओथेलो । हां हां और वह बहुधा हमारे सन्देश लाया और लेजाया करता था।

यागो । सचमुच ?

ओथेलो । हां सचमुच, सचमुच, क्या तुझे इस में कुछ बात खटकती है ? क्या वह सच्चरित्र नहीं है ?

यागो । सच्चरित्र श्रीमान् ?

ओथेलो । हां, हां, सच्चरित्र ।

यागो । हां महाराज, जहां तक मैं सोचता हूँ सच्चरित्र ही है।

ओथेलो । तू क्या सोचता है ?

यागो । "सोचता हूं" श्रीमान् !

ओथेलो । (अपने आप) सोचता है श्रीमान् ! स्वर्गकी शपथ यह मेरी प्रतिध्वनि करता है, मानो उस के विचार में कोई अपूर्व विषय है जो ऐसा भयङ्कर है कि वह उसको प्रकट नहीं कर सकता है। (प्रकट) इस में तेरा कुछ अभिप्राय अवश्य है । अभी जब केसियो मेरी पत्नी से विदा हुआ था मैंने तुझे यह कहते सुना था कि मुझे यह बात अच्छी नहीं लगती । वह क्या बात थी जो तेरे पसन्द नहीं आई और जब मैंने तुझ से कहा था कि वह हमारे विवाह के पूर्व समस्त प्रेमालाप में मेरा मन्त्री था तो तूने अपने भौं सिकोड़ और मरोड़ कर चिल्ला के कहा था "सचमुच श्रीमान्" मानो उस समय तेरे मस्तिक में कोई भयङ्कर भावना थी । यदि तू मुझे प्यार करता है तो मुझ से अपने मन का भेद खोल दे।

यागो । महाराज आप इस बातको जानते है कि मैं आपको प्यार करता हूं।

ओथेलो । मैं सोचता हूं कि तू मुझे प्यार करता है और जहां तक मुझे विदितहैं तू प्रेम और सच्चरित्रता से पूर्ण है और मुखसे

निकालने के पहिले अपने प्रत्येक शब्दको तोल लेता है इसलिए यह तेरा बार २ विश्राम के साथ बोलना मुझे और भी भयभीत करता है। एक झूठे और स्वामिद्रोही व्यक्तिका इसभाँति बोलना उसकी व्यावहारिक छलविद्या होती है परन्तु एकन्याय शील मनुष्य के ऐसे बहुत ठिठक ठिठककर बोलने से यह पाया जाता है कि वह अपने हृदयोद्गारको इसलिए रोक रहा हैं कि कहीं आवेग से कोई अनुचित्त बार्ता मुँह से न निकल पड़े।

यागो। मैं शपथ खाकर सोचताहूं कि मैकल केसियो एक सच्चरित्र व्यक्ति है।

ओथेलो। मैं भी ऐसा ही सोचता हूं।

यागो। मनुष्यों को वास्तव में जैसे कि वे दिखलाई पड़ते हैं ऐसा ही होना चाहिये। और जो सच्चरित्र न हों, उन्हें मनुष्य जाति को ठगने के लिये अपने तईं ऐसा दिखलाना उचित नहीं है।

ओथेलो। ऐसेही होना चाहिये जैसे कि दिखलाई पड़ते हैं।

यागो। तबतो मैं सोचताहूं कि केसियो एक सत्यशील मनुष्यहै।

ओथेलो। नहीं इस में कुछ दाल में काला है। मैं तुझसे विनती करता हूं कि तू अपने पेट का पाप खोलदे जो तेरे मनमें विचर रहा है, किसी बातको विना छिपाये स्पष्ट कहदे।

यागो। सुजन स्वामी मुझे क्षमा कीजिये। यद्यपि मैं अपना प्रत्येक कर्तव्य कर्म्म करने के लिये वाध्य हूं; परन्तु मैं उस बातको करने के लिये वाध्य नहीं हूं, कि जिस को करने के लिये क्रीतदास भी वाध्य नहीं होते हैं। क्या आप सचमुच यह चाहते हैं कि मैं अपने मनका का भेद खोल दूं? कहीं मेरे मनमें कोई अधम और असत्य बात समागई होतो इसमें कोई अचंभा नहींहै, क्योंकि ऐसा कौनसा राजप्रासाद है कि जहां कभी भी कोई न कोई दुष्ट व्यवहार न घुस पड़े? ऐसा शुद्ध हृदय कौन है जिसके हृदय में कभी दूषित भावना

या खोटे विचार बिना बुलाये प्रवेश न करते हों, और मानो हृदय रूपी न्यायालय में अपने सहवर्ती नियम शील और उचित विचारों के साथ एक न्यायासन पर बैठकर कचहरी न करते हों ?

ओथेलो । यदि तू यह बात सोचता है कि मेरे साथ दूषित व्यवहार कियागया है और फिर तू अपने इस विचार को मौन साधकर मुझसे प्रकट नहीं करता है तो यागो तू मेरा मित्र होकर मेरे साथ कपटलीला रचता है ।

यागो । तो मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि यदि कहीं मेरा अनुभव खोटा निकले (क्योंकि मैं इसबातको स्वीकार करता हूँ कि मेरे स्वभाव में यह दुष्टता हैं कि मैं दूसरों की काल्पनिक बुराई में भी अनुसंधान लगा बैठता हूं और मेरी संशयशील कल्पनायें कभी २ ऐसी बुराइयाँ गढ बैठती है कि जिनका कहीं सिर पैर नहीं होता तो बुद्धिमान् जैसे कि आप हैं आप मुझ जैसे व्यक्ति की बातों की जिसकी कल्पनाशक्ति अधूरी है कुछ अपेक्षा नहीं करेंगे और मेरे अनिश्चित निरीक्षण के ऊपर जिसका आधार ऐसा कच्चा है, अपने लिये कोई विपत्ति खड़ी नहीं करेंगे । आपपर अपना विचार प्रकट करना मानों आपके मनमें खलवली डालनी और आपकी बुराई करनी है तथा अपने मनुष्यत्व, सच्चरित्रता और बुद्धिमत्ता में भी बट्टा लगाना है ।

ओथेलो । तेरा क्या आशय है ? ।

यागो । मेरे प्यारे स्वामी सुनिए नरनारी का अच्छा नाम ,
उनकी आत्माओं का होताहै सबसे प्रियमणि अभिराम ।
धन जो चोरे क्या वह चोरे ? है वह कुछ नहिं कुछ भी बात,
वह मेरा था उसका होता रहा हजारों के वह हाथ ।
पर जो मुझसे मेरा अच्छा नाम कहीं लेता हैं छीन ,
धनी नहीं वह उससे बनता मुझे बनाता सचमुच दीन ।

ओथेलो—ईश्वर शपथ मैं तेरे विचार जानना चाहता हूँ।

यागो—यदि मैं अपना हृदय निकालकर आपके सामने रखदूँ तब भी इस विषय में आप मेरा विचार नहीं जान सकते। और जबकि वह मेरे वक्षस्थल के नीचे छिपा हुआ है तो आपके लिये ऐसा करना और भी संभव नहीं है।

ओथेलो-ह! ह!

यागो-अहो! प्रभो, स्त्रीसंदेह से सावधान रहिये। वह हरी आंख वाले जंतु ÷ के सदृश होता है, जो अपने भक्ष्यको दुर्गति करके मार डालता है।जो यह जानता है कि मेरी स्त्री व्यभिचारिणी है जिसकी कि वह कुछ अपेक्षा नहीं करता है उस पुरुष की अपेक्षा आनंद में रहता है जो अपनी स्त्री के दुश्चारिणी होने का संदेह करके भी उसपर लट्टू बना रहता है, उसपर संशय करते रहने पर भी उसे प्यारी मानता है। परन्तु उसके पाप का निश्चय नहीं कर सकता। पर हा! उसकी प्रत्येक घड़ी गिन २ कर दुःख में कटती है।

ओथेलो-आहो! यह तो घोर विपत्ति है।

यागो-संतोषी अरु दीन पुरुष जो है धनवान बड़ा धनवान,
अनंत धनके होने पर भी परन्तु वह है दीन महान।
जो सदैव डरता है रहता होजाऊँगा मैं तो दीन,
ईश्वर मेरे बन्धुवर्ग को स्त्रीसंशय में रखे कभीन।

ओथेलो-क्यों यह क्यों? क्या तू यह सोचता है कि मैं स्त्री-संदेहमें पड़कर अपना जीवन समाप्त करडालूँगा। और जैसे चंद्रमा दिन प्रतिदिन बदलता रहता है तैसे नये २ संशयोंमें पड़ता रहूँगा? कदापि नहीं। मेरे लिये एकबार संदेह में पड़ना उसीसमय उससे

÷ हरी आंख वाला जंतु बिल्ली इत्यादि।

मुक्त होजाना है। मेरी स्त्री के आचरण देखकर तूने जो अनुमान निकाले हैं उनके अनुसार यदि मेरा मन निःसार और थोथी आशंकाओं में उलझ जाय तो मुझे मनुष्य नहीं बकरा समझना। यदि कोई मुझ से यह बात कहे कि आपकी स्त्री विचित्र व्यंजन प्रिय है, वह जनसमूह में रहना पसंद करती है, स्वतंत्रता से बात चीत करती है, गाना बजाना और नाचना अच्छा जानती है, इससे मैं संदेही नहीं होसकता। जो स्त्री पतिव्रता है उसमें यह गुण उसकी और शोभा बढाते हैं। और अपने आप में मनोहरता का अभाव होने पर भी मुझे इस बात की रत्ती भर भी शंका या भय नहीं है कि वह व्यभिचारिणी होसकती है। क्योंकि जब उसने मुझको वरा था उसकी आँखें फूटी हुई नहीं थीं। नहीं यागो, शंका करने के पहिले मैं देखलूँगा, शंका होने पर परीक्षा करूँगा। और ज्योंही यथोचित प्रमाणसे मुझे निश्चय होजायगा कि वह पतिव्रता है या कुलटा है त्योंही मैं संदेह को या स्नेह को तिलांजलि देदूँगा।

यागो—मैं इस बात से प्रसन्न हूं। अब मुझे और भी खुले मन से आपको अपना प्रेम और कर्त्तव्य दिखलाने का उत्साह होगा। इसलिये जैसा भक्तिभाव मेरा आपके लिये है उसको उसी भावसे ग्रहण कीजियेगा। मैं अभी प्रमाण के विषयमें कुछ नहीं कह सकता हूं। आप अपनी पत्नीपर दृष्टि रखिये, केसियो के साथ उसका बर्ताव भलीभांति निरीक्षण कीजिये, ऐसी चाल चलिये कि जिस से न तो यह विदित हो कि आप सन्देह कर रहे हैं और न जो कोई बात हो पड़े, उससे आप अचेतही रहें। उसपर दृष्टि रखिये, पर इस बात का भेद उसपर प्रकट न होने पावे कि आप ऐसा कर रहे हैं मैं इसबात को नहीं चाहता हूं कि आपकी उदार और महान् प्रकृति अपनी उदारता की सीमा को उल्लङ्घन करे। इस बातका विचार रखिये। मैं अपनी स्वदेशी ललनाओं की प्रकृति को भली-

भाँति जानता हूँ। वेनिस में वे गुप्तरीति से ऐसी लीलाएं करती हैं कि जिनको वे अपने स्वामियों को दिखला नहीं सकतीं। उनका नैतिक सिद्धान्त यह है कि—

विना किये कुछ भी नहिं रखना, प्रकट उसे पर कभी न करना।

ओथेलो-क्या ऐसा होता है?

यागो-उसने अपने पिता की आंखों में धूल डालकर आप के साथ व्याह किया है। और जब वह बाहर से आपकी प्रकृति को देखकर थर २ काँपती और डरती थी तब भीतर से वह आप पर आसक्त थी।

ओथेलो—हां, वह ऐसा ही करती थी।

यागो-तो फिर क्या आप ऐसे भोले हैं कि कुछ नहीं समझते? उसने बाल्यावस्था ही में ऐसा रूप भरा है कि मानो अपने बाप की आँखों पर पट्टी बांधकर उसे इस भांति अंधा बना दिया कि उसको आपके जादू टोना करने की सूझी, परन्तु मैं समझता हूँ कि मैं भारी भूल कर रहा हूँ। मैं सविनय प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे अपने तईं अत्यन्त प्यार करने के लिये क्षमा करेंगे।

ओथेलो-मैं तेरा सदैव कृतज्ञ रहूँगा।

यागो- मैं देखता हूँ कि इस वार्त्तालाप से आपका कुछ रंग-ढंग बदल गया है।

ओथेलो-कुछ नहीं, कुछ नहीं।

यागो-ठीक समझिये, मुझे शंका है कि ऐसा होगया है, मैं आशा करता हूँ कि आप इस बातपर विचार करेंगे कि-मैंने जो कुछ कहा है, वह आपके प्रेमसे कहा है। पर मैं देखता हूँ कि आप विचलित होगये हैं। इससे मैं यह प्रार्थना करने को बाध्य हूँ कि आप मेरे कहने का अधिक विचार न करैं, उससे संशयमात्र करले

के अतिरिक्त लंबे चौड़े और विस्तीर्ण परिणाम न निकालें।

ओथेलो—मैं ऐसा नहीं करूँगा।

यागो—श्रीमान् यदि आप ऐसा करेंगे तो मेरे कहने का ऐसा बुरा फल होगा कि जैसा कभी मेरे विचार में भी नहीं आया है। केसियो मेरा योग्य मित्र है। भगवन्! मैं देखता हूं कि आप विचलित होगये हैं।

ओथेलो—नहीं मैं बहुत विचलित नहीं हुआ हूँ। मैं इसके अतिरिक्त और कोई बात नहीं सोचता हूँ कि देशदामिनी सच्चरित्रा है।

यागो—वह ऐसी ही चिरंजीव रहें, और आप ऐसेही विचार करते हुए चिरंजीव रहें।

ओथेलो—तथापि उसका प्राकृतिक स्वभाव अपने यथोचित मार्ग को कैसे भूलसकता है?

यागो—हाँ यही तो विचारणीय बात है। यदि मैं आपको विना क्लेश दिये स्पष्टरूपसे कुछ कह सकूँ तो इसके विरुद्ध कहा जासकता है। मैं देखता हूँ कि प्रकृति की प्रवृत्ति प्रत्येक विषय में समानताही की ओर झुकती है, किन्तु उसने अपनी बराबरी के कई विवाह-प्रार्थकों को जो उसके स्वदेश, वर्ण और पद के थे नहीं वराहै। छी! उसके ऐसे आचरणों से कोई व्यक्ति यह संभावना करसकता है कि वह अत्यन्त कामातुर है, उसमें दुष्ट वैषम्य* है और उसके विचार प्रकृति विरुद्ध हैं। परन्तु आप मुझे क्षमा करें, यह उदाहरण जो मैंने दिया है, इसमें मेरा वादानुवाद सर्वसाधारण है और उसका लक्ष्य श्रीमती देशदामिनी जी ही पर नहीं है, तो भी मेरा यह भय संभव है कि उनकी आकांक्षा जब अपनी निर्णय शक्ति के अनुसार चलेगी तब

* वैषम्य=असमानता।

वह आपके और अपने स्वदेशियों के बीच तुलना करने लगेंगी और कदाचित् अपने इस स्वयम्वर से पछतावेंगी ।

ओथेलो-अच्छा प्रणाम, यदि तुझको कुछ और बात विदित हो तो उसकी सूचना मुझे देना । अपनी स्त्रीको उसका निरीक्षण करने में नियोजित करदेना । यागो तू अब यहाँ से जासकता है ।

यागो-श्रीमन् मैं अब जानेकी अनुमति चाहता हूँ । (जाता है।)

ओथेलो-हाय ! मैंने व्याह क्यों किया ! यह सच्चरित्र व्यक्ति निःसन्देह जितना कि मुझसे कहता है उससे कहीं अधिक देखने वाला जानकार विदित होता है ।

यागो—(वापिस आकर) श्रीमन् ! मैं प्रार्थना करता हूं कि आप इस विषयपर अधिक सोच न कीजिये, इसे समयके ऊपर छोड़ दीजिए । यद्यपि यह उचित है कि केसियो पुनः पदस्थ किया जाय (क्योंकि निःसन्देह वह अपना काम बड़ी योग्यतासे करताहै) तो भी यदि आपकी इसमें प्रसन्नता हो तो, कुछ काल पर्यन्त उसे टालते ही रहिये, इससे आप उसकी चाल ढाल और पुनः पदस्थ होने के साधन ताड़ जायँगे । इस बात पर ध्यान दीजिये कि आप की श्रीमती कितने बल और उग्रता से बड़ी याचना करके आप पर केसियो के पुनः पदस्थ करने के लिये दबाव डालती है । इसमें बहुत कुछ पाया जायगा । इस विषय म आप इस बात का निश्चय समझियेगा कि मैं बहुत भयाकुल रहूँगा और मैं अवश्य ऐसा ही होगया हूँ (क्योंकि वास्तव में मैंने भयभीत होने का काम ही किया है) और आप श्रीमती देशदामिनी को निष्कलंक विचारिये । श्रीमान् से मेरी यही प्रार्थना है ।

ओथेलो—तुम इस बातका भय मत मानो कि मुझ में आत्मनिग्रहकी न्यूनता होगी ।

यागो—मैं एकबार और जाने की अनुज्ञा चाहता हूँ। (जाता है।)

ओथेलो—यह बहुत ही बड़ा सत्यशील व्यक्ति है और इसको सब मानवीय आचरणों के लक्षणों का गहरा ज्ञान है। यदि देशदामिनी मुझे वनैली और दुर्दांतबाजनी* की समान चंचलदृष्टि पड़ी तो, चाहे उसके बन्धन मेरी हृदय की नाड़ियां ही क्यों न हों मैं उनको काटकर जिस ओर बयार बहेगी उस ओर फू करके उड़ादूँगा, और वह अपने भाग्यानुसार आखेट खेलेगी। कदाचित् इसकारणसे कि मैं काला हूँ और मुझमें वह ठसक मसक और चटक मटक नहीं है कि जो रंगीले छबीले लोगोंमें ही हुआ करती है, या इसकारण से कि मैं अब जवानी से उतरगया हूँ (यद्यपि मेरी बहुत अधिक अवस्था नहीं हुई है) वह बिगड़ गई है और मुझपर कलंक लगगया है। अब मेरे लिये उससे घृणा करने के अतिरिक्त और दुःख शांतिका कोई उपाय नहीं है। हा! यह व्याह करने का झमेला है। यह हमारा भ्रम है कि हम इन सुकुमार प्राणियों की कामेच्छाओं को नहीं, प्रत्युत इनको ही अपना समझते हैं। जिसके कि प्रेमभागी अन्यजन हैं, ऐसी स्त्रीको रखने की अपेक्षा यदि मैं कारागार का दूषित पवनसेवी मेंढक हुआ होता तो अच्छा होता। किन्तु क्या किया जाय! यह बड़े होनेकी उपाधि है। बड़े लोग छोटे लोगों की अपेक्षा ऐसी बुराइयों से कम बचे रहते हैं। यह भवितव्यता मृत्यु के समान अटल है। गर्भमें प्रवेश करने की घड़ी से ही हमारे भाग्यमें यह लिखाजाता है कि हमको व्यभिचारिणी पत्नी मिलेगी। देखो वह वो आती है। यदि वह कुलटा हो तो विधाता संसार में अपनी प्रतिमूर्त्ति उत्पन्न करके अपना हास्य कराता है। मैं इसका कदापि विश्वास नहीं करूँगा।

(देशदामिनी और यमिलिया का पुन: प्रवेश।)

देशदामिनी—प्यारे प्राणनाथ! आप इस समय तक क्या

---

* बाजनी=बाज का स्त्रीलिङ्ग।

करते रहे ? आपका भोजन तय्यार है और इस द्वीपके निवासी आपके कुलीन पाहुने आपकी वाट जोह रहे हैं।

ओथेलो—इसमें मेरा अपराध है।

देशदामिनी—आप ऐसे फीके होकर क्यों बोल रहे हैं? क्या आप कुछ अस्वस्थ हैं?

ओथेलो—यहां मेरा माथा दुख रहा है। (बतलाता है)

देशदामिनी-निःसंदेह यह जागने से हुआ है, यह शीघ्र दूर होजायगा। लाइए मैं इससे बाँध दूं यह अभी अच्छा होजायगा। (रूमाल निकालती है।)

ओथेलो—तुम्हारा रूमाल बहुत ही छोटा है, रहने दो चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूं।

देशदामिनी-मुझे इस बातका बड़ा शोक है कि आपकी शरीरा-वस्था अच्छी नहीं है। (रूमाल गिरपड़ता है, ओथेलो और देशदा-मिनी जाते हैं।)

यमिलिया—मुझे इस बातका हर्ष है कि मैंने इस रूमाल को पालिया है। मूर महाशयने देशदामिनी जी को यह प्रणयस्मृति का प्रथम उपहार दिया था। मेरे चलचित्त पतिने मुझसे सौबार सहस्र बार इसके चुरालने को कहा था। पर वह इस प्रेमचिन्ह को इतना प्यारा मानती है कि (क्योंकि मूर महाशयने उसको इस बातकी शपथ दे रक्खी है कि वह सदैव उसको अपने पास रक्खे) सर्वदा इसको बड़ी रक्षासे अपने पास रखकर चूमती है और इससे बातचीत करती हुई सी विदित होती है। मैं इसी नमूने का एक दूसरा रूमाल काढ़ दूँगी और वह अपने पति को देदूँगी। परमेश्वर जाने वह इसका क्या करेगा। मैं इस विषय में कुछ नहीं जानती। मैं इस बात से केवल उसके मनका चापल्य पूरा करती हूँ।

(यागोका प्रवेश)

यागो-क्या होरहा है ? तुम यहां अकेली क्या कर रही हो ?

यमिलिया-तुम मुझको धमकाओ मत, मेरे पास तुम्हारे लिये कुछ चीज़ है ?

यागो-मेरे लिये कुछ चीज़ ? वह साधारण वस्तु होगी।

यमिलिया-वाह ?

यागो-क्योंकि तुम मूर्ख स्त्री हो।

यमिलिया-वाह ! बस क्या यही बात है ? अच्छा अब बतलाओ तुम मुझे उस रूमाल के लिये क्या दोगे ?

यागो-कौनसा रूमाल ?

यमिलिया-कौनसा रूमाल ! वही रूमाल। जो मूर महाशयने पहिले पहिल देशदामिनीको दिया था और जिसके चुराने के लिये तुम वार २ मुझसे कहते थे।

यागो—क्या उससे चुरालिया है ?

यमिलिया—नहीं, ईश्वरशपथ मैंने उसे चुराया नहीं है। उसने असावधानी से उसको छोड़ दिया था, भाग्यवशात मैं वहाँपर थी और मैंने उसको उठालिया। देखो वो यह है।

यागो—तब तो तू अच्छी स्त्री है। ला यह मुझे देदे।

यमिलिया—जोकि मुझसे इसके चुरवाने के लिये तुम इतने उत्सुक रहे हो तो पहिले यह बतलाओ कि तुम इस का क्या करोगे ?

यागो—क्यों ? इससे तुम्हें क्या ?

(रूमाल छीनता है।)

यमिलिया-यदि यह किसी बड़े प्रयोजन काम हो तो यह फिर मुझे देदेना, अन्यथा इसके बिना वह बिचारी विक्षिप्त होजायगी।

यागो—ऐसा मिष करना कि तू उसके विषय में कुछ जानती ही नहीं है। यह मेरे बड़े काम का है। जा यहाँ से चली जा।

(यमिलिया जाती है।)

मैं इस रूमाल को केसियो के डेरेमें छोड़ आऊँगा और वह उसे मिलजायगा। ऐसी थोथी बातें जो पवन से भी हलकी होती हैं, सन्देही जनों के चित्तोंको ऐसे निश्चय कराने वाली और पूर्ण विश्वास दिलाने वाली होती हैं कि जैसे धर्म्मशास्त्र के प्रमाण। इससे कुछ काम बनेगा। मेरी विषली सूचना का प्रभाव ओथेलो पर पड़चुका है। भयानक भावनायें स्वभावतः उन विषोंके समान होती हैं जो पहिले कुछ अस्वादु लगते हैं, पर थोड़ी ही देर में उनका असर रुधिर पर होजाता है और वे गंधक की खानों के सदृश जलने लगती हैं। मेरा कहना ठीक हुआ है, वो देखो वह आरहा है। (अपने-आप)

(ओथेलो का पुनः प्रवेश।)

न तो अफीम से, न किसी निद्राजनक औषधि से, और न संसार भरके किन्ही निद्रावाही शर्बतों से ही तुझ अब वैसी नींद आवेगी जैसी तू कल सोया था।

ओथेलो—हाय! हाय! व्यभिचारिणी?

यागो—क्यों सेनापति महाशय, यह आप क्या कह रहे हैं? इस बातका विचारही छोड़ दीजिये।

ओथेलो-निकलजा, यहाँसे चलाजा, तूने मुझे सिकंजे में रखदिया है। मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि इस विषयमें थोड़ा जानने की अपेक्षा बहुत कलंकित होजाना अच्छा है।

यागो—श्रीमन्! आप यह क्या कह रहे हैं?

ओथेलो—उसका किसी के साथ गुप्तरीति से कामक्रीड़ा

करने का मुझे क्या बोध था ? मैंने उसे कभी देखा नहीं था, सोचा नहीं था, उससे मेरी कुछ हानि नहीं थी । मैं कल रात आनंद से सोयाथा, मैंने भलीभांति खाना खाया था, मैं निश्चिन्त और प्रफुल्ल था । मैं यह नहीं जानता था कि उसके अधर केसियो से चुँवित होरहे हैं। यदि किसी की कोई वस्तु चोरी गई हो और उसका अभाव न जाने पड़े तो उससे कुछ मत कहो, तो वह समझेगा कि मेरा कुछ नहीं खोया गया है ।

यागो–यह सुनकर मुझे बड़ा खेद होता है ।

ओथेलो--यदि मेरे संपूर्ण सैनिक सफरमैना इत्यादि मेरी स्त्री का उपभोग करते और मुझे इस बातका ज्ञान नहीं होता, तबभी मैं सानंद रहता । परन्तु हा ! अब हे शान्ति ! हे संतोष ! सर्वदा के लिये मेरे हृदय स्थानको छोड़दो ! मैंने तुमको तिलाँजलि दी ! पंखसे विभूषित सनाओ ! घोर संग्रामो ! जो अभ्युदयेच्छाको धर्म्म बनाडालते हो, तुमभी विदा होजाओ। हिनहिनाता हुआ युद्ध का अश्व, कर्कश तुरही, वीररस उत्पादक रामढोल, कर्णभेदक भेरी, विजय पताका, और अभिमान, ऐश्वर्य्यादि सब गुणों, और कीर्त्ति-शाली संग्रामकी सामग्री, और हे नाशकारिणी तोपो ! जिनके कठोर मुखोंसे अमर इन्द्र के भयंकर गर्जन की सी ध्वनि निकलती है तुमको भी दंडवत् है ! प्रणाम है ! ओथेलो न घरका रहा न घाट का रहा !

यागो--महाराज ! क्या ऐसा होना कभी संभव है ?

ओथेलो–अरे अधम ! इसबातका निश्चय करले कि तू मेरी प्यारी का वेश्या होना प्रमाणित कर सके । इसबातका निश्चयकरले मुझे इसका चाक्षुष प्रमाण दे नहीं तो मैं अपनी पूज्य अमर आत्मा की शपथ खाकर कहता हूँ कि मेरे उभाड़े हुए क्रोध का परिणाम

सहने की अपेक्षा तेरे लिये यह अच्छा होता कि तेरा जन्म कुत्तेका होता।

यागो-क्या यहांतक नौवत आपहुंची है?

ओथेलो-मुझे यह बात दिखलादे या कमसे कम उसे ऐसे प्रमाण से सिद्ध करदे कि जो ऐसा स्पष्ट और पक्का हो कि उसमें शंका करनेकी कोई ठौर ही न रहे, नहीं तो अपनी जान की कुशल मत समझ।

यागो-महानुभाव श्रीमान्!

ओथेलो—यदि तू उसपर झूठा कलंक लगाकर मुझे यातना देता है तो फिर कभी ईश्वरसे प्रार्थना मतकर और पश्चात्ताप× भी करना छोड़दे। एक त्रासजनक काम के पीछे दूसरा त्रासजनक काम करताजा, ऐसे अनर्थ कर कि स्वर्ग रोने लगे और पृथ्वी कम्पायमान होजाय, क्योंकि तू नरक में पड़ने के लिये इससे बड़ा और कोई पाप नहीं करसकता है।

यागो—हेकरुणानिधान परमेश्वर! मेरा अपराध क्षमा कर। क्या आप मनुष्य हैं? क्या आपमें नैसर्गिक ऋतकारिता+ य सत्यासत्य विवेक की शक्ति है? परमेश्वर आपकी रक्षा करे। मुझे अब अपना कर्म्मचारी न रखिये। अरे! मैं कैसा हतभाग्य मूर्ख हूँ! जो अपनी सच्चरित्रताको दुष्टता बनाने के लिये जीवित हूँ! ओहो विचित्र संसार! हे संसार के लोगो! सचेत होजाओ! सचेत होजाओ! सच्चरित्र और सीधा होनेमें कुशल नहीं है। इस शिक्षा के लिये जो आपने मुझे दी है मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। इससे मेरा लाभ होगा और आजकी इस घड़ीसे मैं किसी मित्रको प्यारा

× ईसाइयोंमें पापसे मुक्त होनेके लिये पश्चात्ताप अथात् तोबा करते हैं।

+ ऋतकारिता=सत्याचरण।

नहीं मानूँगा क्योंकि प्रेम करतेही काँटे लगने लगतेहैं।
(जाना चाहता है ।)

ओथेलो–नहीं, ठहरजा, मैं समझताहूँ तू सत्यशील होगा।

यागो–नहीं, मुझे बुद्धिमान् होना चाहिये, सच्चरित्र होना मूर्खों का काम है, जिसके साथ सच्चरित्रता करो वही धक्के लगाता है।

ओथेलो—मैं संसार की शपथ खाकर सोचता हूँ कि मेरी स्त्री सच्चरित्रा होगी, और यह भी सोचता हूँ कि वह ऐसी नहीं है। मैं सोचता हूं कि तू ठीक कह रहा है, और यह भी सोचता हूं कि तू ठीक नहीं कह रहा है। मैं इसके लिये कुछ प्रमाण चाहता हूँ। उसका नाम जो मुझको चन्द्रविम्बके समान शीतल लगता था अब मुझे अपने मुखके समान मलिन और काला मालूम पड़ताहै। यदि मेरी शंकाका समाधान होजाय तो संसारमें बदला लेनेका चाहे कोई साधन हो, फांसी हो या चाकू हो, विष हो या आग हो चाहे नदी में डुबाना हो, वह विना दंड पाये नहीं रहेगी।

यागो—महाशय मैं देखता हूँ कि क्षोभ आपको खाये डालता है। मुझे इस बातका बड़ा पछतावा है कि मैंने आपको इस भांति की सूचना दी है। आप शंका का समाधान चाहते हैं?

ओथेलो—चाहते क्या? मैं विना उसके नहीं रहूँगा।

यागो—ऐसा होसकता है? पर किस भाँति? श्रीमान्! आप कैसा समाधान माँगते हैं? क्या आप यह चाहते हैं कि आप इसके उपद्रष्टा बनें। स्पष्टरूप से सब कुछ देखलें, और उसका उपभोग निहार लें?

ओथेलो—ओह! मृत्यु और नरकपात!

यागो–मैं समझता हूँ कि यह तो एक बड़ी भारी कठिन समस्या

है कि उनका ऐसा सम्मिलन दृष्टि में पड़सके। वे जानते हैं कि यदि उनकी आँखों के अतिरिक्त अन्य किसी मनुष्यकी आँख उनको तकिया गद्दी लगाये हुए देख बैठे तो उसीसमय उनका सर्वनाश होजायगा। तब क्या किया जाय ? कैसा किया जाय ? मैं क्या कह सकता हूँ ? कहाँ समाधान होसकता है ? जबतक कि वे ऐसे अति-कामी न हों जैसे कि बकरे होते हैं या बंदरों के समान न गरमावें, या ऐसे चरपरे न हों जैसे कि भेडियों के पट्ठे होते हैं और ऐसे निपट मूर्ख न हों जैसे कि मूढ़लोग मद्यके मद में होते हैं, तब तक यह असंभव है कि आप इस बातको देख सकें। पर तो भी मैं यह कह सकता हूँ कि ऐसे दोषारोप से जो प्रबल अप्रत्यक्ष प्रमाण* पर निर्भर हो, जो मानो सीधा सत्यता के दरवाजे पर रख देता हो यदि आपका समाधान होसके तो ऐसा होसकता है।

ओथेलो—मुझे उसके कुलटा होने का कोई अखंडनीय प्रमाण दे।

यागो—मैं इस कामको पसंद नहीं करता, पर जब कि मैं इस पथ में यहांतक पहुँच चुका हूँ और अपनी मूर्खभरी सच्चरित्रता और प्रेमके कारण ऐसा करनेको दबाया जारहा हूँ तो मैं और आगे बढ़ता हूँ सुनिये। थोड़े दिन हुए मैं केसियो के साथ सोरहा था और दाँतों में अत्यन्त पीड़ा होने के कारण मुझे उस रात नींद नहीं आई। कितने ही लोग अपने विचारों का निग्रह करने में ऐसे अश-क्त होते हैं कि वे नींदमें अपनी सब बातों को बड़बड़ा बैठते हैं। केसियो भी इसी कक्षा के लोगों में का एक है। नींद में मैंने उसे यह कहते हुए सुना—"प्यारी देशदामिनी ! हमें सचेत रहना चाहिये, हमें अपना प्रेम गुप्त रखना चाहिये।" और तब महाशय

---

* अप्रत्यक्ष प्रमाण = हालाती शहादत।

वह मेरे हाथको बलपूर्बक पकड़ और मरोड़कर यह चिल्ला उठा " हा मनोहर प्राणी " और फिर वह वरवस इसभाँति मेरा चुम्बन करने लगा कि मानो वह उन चुम्मों को उखाड़ता था कि जो मेरे होठों पर जमे हुए थे। फिर उसने अपनी टाँग मेरी जंघा पर रक्खी, आह भरी, चुम्बन किया और फिर इसप्रकार चिल्लाया कि-"तेरा कर्म्म फूटा, जिसने तुझे मूरके पल्ले डाला" !

ओथेलो—ओह ! अंधेर ! अंधेर !

यागो—नहीं यह तो केवल स्वप्नमात्र था।

ओथेलो—पर इससे यह पाया जाता है कि ऐसी घटनायें पहिले हुई थीं। यद्यपि यह स्वप्नमात्र है तथापि इससे उसके अपराधी होने का पक्का संशय होता है।

यागो—और ये संशयभरी घटनायें शेष रही हुई साक्षी को जहाँ वह कच्ची हो दृढ़ करेंगी।

ओथेलो-मैं देशदामिनी के टुकड़े २ कर डालूँगा।

यागो-नहीं ऐसा न कीजिये, धीर बनिये । अभीतक हमने आँखों से कुछ नहीं देखा है। कौन जानता है कि वह अबतक सती ही हो । हां मुझ एक बात तो बताइये । क्या आपने कभी अपनी स्त्रीके हाथ में एक रूमाल देखाहै जिसमें चित्र विचित्र इष्टवेर के बूँटे कढ़े हैं ?

ओथेलो—मैंने उसे एक ऐसा रूमाल दियाथा। वह मेरा प्रथम प्रेम-उपहार था।

यागो—मैं इस बातको तो नहीं जानता हूँ,पर एक ऐसे रूमालसे (मुझे निश्चय है कि वह आपकी ही स्त्री का था) मैंने आज केसियो को अपनी दाढ़ी पोंछते देखाहै।

ओथेलो–यदि वह, वही रूमाल हो।

यागो—चाहे वही हो या आपकी भार्या का कोई और रूमाल हो अन्य प्रमाणों के साथ उसका संयोग करने से यह बात उसके विरुद्ध जाती है।

ओथेलो—आह! कैसा अच्छा होता कि उस नीच(केसियो) के चालीस सहस्र प्राण होते। मेरे उससे बदला लेने के लिये उसका एकही प्राण होना अलम् * नहीं है। हाँ, अब मैं देखता हूँ कि यह बात सत्य है। यागो! इधर देख। मैं अपनी प्रेमाशक्ति को यों फू करके आकाश में उड़ाये देता हूँ।

(हथेली मुँहपर लेजाकर फूँकता है।)

वह फूः उड़गई। अब हे अन्धकारमय प्रतीकार! नरक के अत्यन्त गहरे गढ़े से निकलकर जागृत हो! अब हे प्रेम! अन्याय मचाने वाली निठुर घृणा के लिये अपना मुकुट उतार डाल और अपनी हृदयरूपी राजगद्दी को छोड़दे! और हेहिये! अब तुम फूल जाओ क्योंकि तुम कालीनागन की विषैली जिह्वाओं से आकीर्ण होगये हो!

यागो—अभी संतोष रखिये।

ओथेलो–नहीं, अब मैं लोहू का प्यासा और मांस का भूखा होगया हू।

यागो–मैं कहता हूँ कि आप धीरज धरिये, कौन जानता है कि आपका मन फिर लौट जावे।

---

* अलम् = काफी।

ओथेलो—यागो ऐसा कभी नहीं होगा। पोनटिक समुद्र के समान जिसकी हिमदेशीय धारा और प्रबल प्रभाव कभी घटकर पीछे नहीं लौटते हैं वरन बराबर प्रोपोंटिक और हेलिसपोंट की ओर बढ़ते चले जाते हैं, ठीक इसीभांति मेरे रुधिर-लोलुप विचार प्रबल वेग से आगे को बढ़ते रहेंगे पीछे को कदापि नहीं लौटेंगे और कभी दीन हीन प्रेमकी नमता नहीं दिखावेंगे, जबतक कि वे बहु विस्तीर्ण और विशाल प्रतीकार में निमग्न न होजायँ। (प्रार्थना के लिये घुटने टिकाकर) इस बात को पूरी करने के लिये मैं तेजोमय स्वर्ग की शपथ खाकर यथाविधि संकल्प करके प्रतिज्ञा करता हूं।

यागो—अभी आप खड़े न हूजिये (प्रार्थना के लिये घुटने टिकाकर) हे आकाश की अनंत प्रकाशमयज्योतियों! हे पंचतत्त्वों! जो चारों ओर से सदैव हमें घेरे रहते हो! मैं आपको साक्षी बनाकर कहता हूं कि मैं अपना तन मन धन ओथेलो महाशय को अर्पण करता हूँ, जिनके साथ ऐसा अधर्म किया गया है। उनकी आज्ञा के अनुसार मुझे क्रूर हत्यारा काम भी क्यों न करना पड़े, मैं उसका करना अपना परमधर्म्म समझूँगा।

ओथेलो--मैं तेरा यह भक्तिभाव केवल शुष्क साधुवाद देकर ही अँगीकार नहीं करता। वरन तुझे अपनी प्रतिज्ञा के सत्य सिद्ध करने का अच्छा अवसर देकर अभी कार्य्य में नियोजित करता हूँ। इन तीन दिनके भीतर ही मुझे यह समाचार सुनादे कि केसियो जीवित नहीं है।

यागो—यद्यपि केसियो मेरा मित्र है तो भी आपके निमित्त मैं इस कामके करने को प्रस्तुत हूं और जबकि मैंने यह काम करना

ठान लिया है तो समझ लीजिये कि केसियो मर चुका। पर देश-दामिनी जी को जीवित रहने दीजिये।

ओथेलो-उस चुडल रंडी का नाम न ले, उसे चूल्हे भाड़ में डाल! आ मेरे साथ एकान्त में चल। मैं अलग जाकर उस गोरी राक्षसी के शीघ्र वध करनेका कोई उपाय सोचूँगा। अब तू मेरा स्थायी सहकारी है।

यागो-मैं आपके उस प्रेमबन्धन से बंधा हुआ हूँ, जो कभी टूट नहीं सकता। (दोनों जाते हैं)

—०—

चौथा दृश्य। दुर्ग के सामने।

(देशदामिनी, यमिलिया, और विदूषकका प्रवेश।)

देशदामिनी-कहोजी, तुम जानते हो कि सहकारी केसियो कहां पड़ा है?

विदूषक--मैं यह नहीं कहसकता कि वह कहां पड़ा है।

देशदामिनी-क्यों भइया?

विदूषक—वह सिपाही है और उसके लिये यह कहने में कि वह कहीं पड़ा है, कोंचने का दण्ड होता है।

देशदामिनी—जा बातें बनाता है। वह कहाँ रहता है?

विदूषक-आपसे यह कहना कि वह कहां रहता है यह कहनेके बराबर है कि जहाँ मैं रहता हूँ।

देशदामिनी-इस बातका कुछ सिर पैर भी है?

विदूषक--मैं नहीं जानता कि वह कहाँ रहता है? और मेरे लिये उसके रहने के स्थान की अटकल लगाना कि वह यहाँ रहता है या वहां रहता है, सरासर झूठ बोलना है।

देशदामिनी-क्या तुम उसका पता लगा सकते हो और पतेसे जानकार होसकते हो?

विदूषक-मैं उसके विषयमें संसार के लोगों से प्रश्नोत्तर करूँगा अर्थात् पहिले प्रश्न बनाऊँगा और फिर उनसे सीखूंगा कि आपको क्या उत्तर देना चाहिये।

देशदामिनी-उसको ढूँडो और उससे कहो कि वह सीधा यहां चला आवे। उससे यह कहना कि मैंने अपने पति से उसके लिये बहुत कुछ कहाहै और आशाहै कि सब बात ठीक होजायगी।

विदूषक-ऐसा काम कोई साधारण बुद्धिवाला व्यक्ति कर सकता है और इसलिये मैं ऐसा करनेका उद्योग करूँगा। (जाता है)

देशदामिनी—यमिलिया बतलातो मैंने वह रूमाल कहां छोड़ा होगा?

यमिलिया-महाशया, मैं नहीं जानती।

देशदामिनी-तू इसबातको सत्य समझ कि यदि मेरी अशर्फियों की थैली खोई जाती तो मुझको इतनी चिन्ता न होती जितनी कि मुझे इस रूमाल के खोये जाने से हुई है। किन्तु इतनी बात अच्छी है कि मेरे महानुभाव निष्कपट हैं, और उनके ऐसे नीच विचार नहीं हैं जैसे कि सन्देही जनों के हुआ करते हैं नहीं तो इससे ही उनको मेरे विषय में बड़ा संशय होजाता।

यमिलिया—क्या वह संदेही नहीं हैं?

देशदामिनी-कौन? वे! मैं समझती हूँ कि उनकी उष्ण जन्म-भूमि के प्रचंड सूर्य्यने उनके ऐसे पंकिल विचार शुष्क कर रक्खे हैं।

यमिलिया—देखिये वे यहां आरहे हैं।

देशदामि[illegible] अब जबतक कि वे केसियो को नहीं बुलावेंगे मैं उनका पीछा न छोड़ूँगी।

(ओथेलो का प्रवेश।)

देशदा[illegible]ी—प्राणप्यारे! आप अच्छे तो हैं?

ओथेलो--हां प्यारी श्रीमती ! (अपने आप) हा ! उससे यथार्थ बात छिपानी मेरे लिये कैसी कठिन होरही है ? (प्रकट) देशदामिनी तुम अच्छी हो ?

देशदामिनी--अच्छी हूँ, प्राणनाथ ।

ओथेलो--मुझसे अपना हाथ तो मिलाओ । (देशदामिनी हाथ मिलाती है) श्रीमती तुम्हारा हाथ पसीजा हुआ है ।

देशदामिनी--न अभी इसपर बुढ़ापे का प्रभाव पड़ा है और न इसने कोई दुःखही झेला है ।

ओथेलो--इस ओदेपन से यह पाया जाता है कि तुम अत्यन्त दानशील और उदार हो । वह उसी क्षण बड़ा तत्ता होजाता है और उसीक्षण पसीजने लगजाता है। तुम्हारे इस हाथको स्वाधीनता से बंधन में पड़ने की, उपवास और उपासना की, बड़े निग्रह की और जप तपकी आवश्यकता है, क्योंकि इसपर एक ऐसा प्रबल और उत्कट भूत चिपट गया है कि जो दुष्कर्म्म करने की प्रेरणा करता है । यह एक अच्छा खुला हुआ हाथ है ।

देशदामिनी--आप निःसन्देह ऐसा कह सकते हैं, क्योंकि यह वही हाथ है जिसने मेरा हृदय आपके अर्पण करडाला है ।

ओथेलो–यह एक उदार हाथ है । प्राचीन समय में परिणय के पहिले हृदय मिलते थे तब हाथ मिलते थे, वर्त्तमान समय की संप्रदाय में हाथ मिलते हैं हृदय नहीं मिलते हैं ।

देशदामिनी–मैं इस विषय में कुछ नहीं जानती । अच्छा अब अपनी प्रतिज्ञा पूरी कीजिये ।

ओथेलो—कौनसी प्रतिज्ञा प्यारी ?

देशदामिनी–मैंने केसियो को आपके साथ बातचीत करने को बुलाया है ।

ओथेलो—मेरी आँखें काट रही हैं और उनमें से मैल निकल रहा है, मुझे अपना रूमाल दो।

देशदामिनी—लीजिये नाथ।

ओथेलो—नहीं, मुझे वह रूमाल चाहिये जो मैंने तुमको दिया था।

देशदामिनी-वह इस समय मेरे पास नहीं है।

ओथेलो—पास नहीं है ?

देशदामिनी—सचमुच प्राणपति मेरे पास नहीं है।

ओथेलो—तो इसमें तुम्हारा बड़ा अपराध है। वह रूमाल मिश्रदेशकी एक नारी ने मेरी माताको दिया था। वह गारुड़ी थी। वह मनुष्य के मन की बात बता देती थी। उसने मेरी माता से यह कहा था कि जबतक यह रूमाल तुम्हारे पास रहेगा तबतक तुम पति के मन की प्रिय रहोगी और तुम्हारा स्वामी तुम्हारे वशीभूत रहकर तुमसे परम प्रेम रक्खेगा, परन्तु यदि तुम इसको खोदोगी या किसी को देदोगी तो वह तुमसे अत्यन्त घृणा करने लगेगा' और उसका मन अन्य रमणीय वस्तुओं पर लग जायगा। मेरी माता ने मरते समय वह रूमाल मुझे दिया था और मुझसे कहा था कि जब तेरा व्याह होगा तब यह अपनी भार्य्या को देदेना। इसीलिये मैंने तुम्हें दिया था और कहा था कि इसको चौकस होकर रखना और इसको इतना प्यारा और अमूल्य समझना कि जैसे तुम अपनी आंख की पुतली को समझती हो। उसको खोदेने या किसी को देदेने से तुमपर बड़ी भारी आपत्ति आवेगी कि जिसकी समता नहीं होसकती।

देशदामिनी—क्या ऐसा होना संभव है ?

ओथेलो—यह सच्ची बात है। उसकी बुनावट में मंत्रयोग

भरा था। वह सिद्ध स्त्री सूर्य्यनारायण के पूरे दोसौ परिक्रमण देख कर मरी थी। जिस समय उसपर कोई देवता उतरता था और वह भावी कथन करने लगती थी उसी समय वह उस रूमाल को काढ़ती थी। वे कीड़े जिनके रेशम से वह बनाया गया था मंत्रों से शुद्ध किये गये थे। और वह उस सुगन्धित द्रव्य से रँगा गया था कि जो औषधि और अभिचार के काम में आता है और जो इस कृत्य के लिये कुँवारियों के शवों से * जिनमें विलक्षणता से उनके हृदय संरक्षित रक्खे गये थे, बनाया गया था।

देशदामिनी—यथार्थ में क्या यह सच्ची बात है?

ओथेलो—अत्यन्त सत्य है, इसलिये उसको अच्छीतरह ढूँढो।

देशदामिनी—यदि ऐसी बात थी तो परमेश्वर करता वह मेरी दृष्टि में ही न पड़ता।

ओथेलो—ह! ह! क्यों?

देशदामिनी—आप ऐसे उत्ताप और तीक्ष्णता से क्यों बोल रहे हैं?

ओथेलो—बता क्या वह खोया गया है? या कहीं ऐसी जगह चला गया है कि जहां से मिल ही नहीं सकता है?

देशदामिनी—परमेश्वर हमारा कल्याण करे।

ओथेलो-तुम क्या कहती हो?

देशदामिनी— वह खोया नहीं गया है, पर मान लीजिये कि वह खोया गया है तो?

ओथेलो-कैसे?

---

* मिश्रदेश में प्राचीनकाल में यह प्रथा थी कि मृत्यु होनेपर पुरुष और स्त्रियों के शव कुछ विशेष औषधियों के द्वारा संरक्षित रक्खे जाते थे। इसके ममी कहते हैं।

देशदामिनी—मैं कहती हूँ कि वह खोया नहीं गया है ।

ओथेलो—अच्छा तो फिर उसको लाओ और मुझे देखने दो।

देशदामिनी—अजी मैं उसे लासकतीहूँ और दिखला सकती हूँ पर इस समय नहीं लाऊँगी और न दिखलाऊँगी । यह मेरी विज्ञप्ति को टालने की एक अच्छी चाल है । मैं प्रार्थना करती हूँ कि केसियो को बुला लीजिये ।

ओथेलो-उस रूमाल को अभी लाओ ।

देशदामिनी—मैं विनती करती हूँ कि इस प्रसंगको जाने दीजिये और केसियो के विषय में बातचीत कीजिये ।

ओथेलो—उस रूमाल को अभी लाओ ।

देशदामिनी-वह एक ऐसा व्यक्ति है कि जो आपका परमभक्त है और उसने जीवनकाल में अपने हित और उन्नति के लिये सदैव आप की ही आशा रक्खी है, और आपके संग अनेकों संकट झेलेहैं।

ओथेलो—उस रूमाल को अभी लाओ ।

देशदामिनी-निःसंदेह अपराध आपका ही है ।

ओथेलो—अपना मुँह काला कर । (जाता है)

यमिलिया-क्या वह मनुष्य संदेही नहीं है ?

देशदामिनी-मैंने ऐसी बात पहिले कभी नहीं देखी थी।अवश्य उस रूमाल में कुछ चमत्कार है । मैं बड़ी मंदभागिनी हूँ कि मैंने उसे खोदिया है ।

यमिलिया-हमको दोचार दिन में किसी पुरुष के स्वभावकी पहिचान नहीं होसकती । इसमें कुछ समय लगता है । वे जठराग्नि के सदृश होते हैं और हम भोजन के समान, जो उसमें जाकर स्वाहा होजाते हैं । वे पहिले हमारा बड़ा लाड़ प्यार करते हैं, परन्तु शीघ्र ही हमसे ऊब जाते हैं और हमको त्याग देते हैं । देखिये मेरे स्वामी और केसियो आरहे हैं ।

(यागो और केसियो का प्रवेश ।)

यागो–और कोई राह नहीं है,बस वही इस कामको करसकती है। और देखो! वह आनन्दमूर्त्ति वहाँ विराजती है। जाओ और उसको घेरो।

देशदामिनी–कहो सुजन केसियो तुम कैसे हो ? कैसे आयेहो ?

केसियो–महाशया! मैं अपनी पूर्व प्रार्थना करनेको आयाहूं। मेरी आपसे यह विनती है कि मैं आपकी प्रबल सहायतासे ही फिर जीवित होसकताहूं, और उनका प्रेम पात्र बनसकताहूं जिनको कि अन्तःकरणसे मैं परम पूज्य समझताहूं। देरी होनेकी अपेक्षा मैं अपना निकृष्ट अंतिम परिणाम जान लेनाही उचित समझताहूं। यदि मेरा अपराध ऐसा घोर हो कि मेरी पुरानी सेवा या वर्तमान शोकावस्था या भविष्य में योग्यताके साथ काम करनेकी आशा, उसका छुटकारा करके फिर मुझे उनका प्रियपात्र नहीं बना सकती हैं, तो इसका ज्ञान लेनाही मेरे लिये श्रेयस्कर होगा। मैं विवश होकर संतोष धारण करलूंगा और भवितव्यता की शरण लेकर अपनी उपजीविका का कोई दूसरा मार्ग निकालूंगा और जो कुछ भिक्षा मेरा कर्म्म मुझे श्रद्धासे देगा उसीको स्वीकार करके संतुष्ट रहूँगा

देशदामिनी–परम सुजन केसियो, अत्यन्त शोक है कि मेरे लिये तुम्हारी सिफारिश करनेका यह समय अच्छा नहीं है। मेरे पति अब पहिले कैसे पति नहीं रहे हैं, उनमें बड़ा अंतर होगया है। उनकी आकृति और स्वभाव दोनों बदल गये हैं। सो प्रत्येक पवित्र आत्मा मेरी रक्षा करे। जहाँतक मुझसे होसकता था मैंने तुम्हारे लिये बहुत कहा सुनाहै और तुम्हारे विषयमें अनुरोध करनेका यह फल हुआ है कि मैं उनके क्रोधरूपी तीरोंका लक्ष्य बनगई हूं। तो भी मुझसे जो कुछ बन पड़ेगा मैं भरशक प्रयत्न करूँगी और अपनी जी जान लड़ा दूंगी। इससमय तुम्हारे लिये इतनाही कहना पर्याप्त है।

यागो–क्या हमारे स्वामी क्रुद्ध होरहे हैं ?

यमिलिया–वे अभी यहाँसे गये हैं और निःसन्देह बड़े बिगड़े हुए हैं।

यागो–क्या वे क्रुद्ध होसकते हैं ? मैंने ऐसे तोपके गोले छूटते देखे हैं जिनसे उनके सिपाहियोंकी कतारें की कतारें उड़गईं, जो यमराजकी भाँति, बगलमें खड़े हुए उनके सहोदर भाईको भी उड़ा लेगये परन्तु मैंने उनकी शाँति भंग होते नहीं देखी, तो क्या वे कुपित होसकते हैं ? यदि ऐसी बात है तो इसमें कुछ गूढ़ाशय है। मैं अभी उनसे जाकर मिलताहूँ। यदि वे सचमुच क्रुद्ध हैं तो निः-सन्देह इसमें कुछ दालमें काला है।

देशदामिनी–कृपा करके जाओ और इसका भेद निकालो।

(यागो का गमन।)

इसमें निश्चय कुछ राजकाज संबंधी रहस्य है, यातो वेनिस से कुछ बुरा संवाद आयाहै, या साइप्रसमें किसी षड़यंत्र रचना की सूचना मिली है, जो अभी कार्य्य में परिणत नहीं हुई है, जिससे उनका प्रशांतमन इतना उद्विग्न होगया है। और जबकि ऐसी भारी घट-नाओंसे चित्त व्याकुल होजाता है, तो मनुष्य ऐसी तुच्छ बातों पर भी झगड़ा कर बैठते हैं कि जिनका और किसी समय वे कुछ भी विचार नहीं करते और जो कि उनके क्रुद्ध होने का यथार्थ कारण नहीं होती है। ऐसा होताही है, यदि हमारी एक अँगुली दुखजाती है तो हमारे और स्वस्थ अवयव भी उसके कारण दुखने लगते हैं। हाँ, हमें इस बातका भी ध्यान रखना चाहिये कि मनुष्य देवता नहीं होते हैं और उनसे यह प्रत्याशा नहीं रखनी चाहिये कि वे हमारे साथ सदैव ऐसाही मधुर बर्ताव रखते रहेंगे जैसाकि नवविवाहित पतिपत्नी के बीच होताहै।

यमिलिया ! मेरा बुराहो, मैं अन्यायी, आक्रामक हूँ। मैंने उन्हें अपनी आत्माके सन्मुख प्रस्तुत होने को इसलिये बुला भेजाथा कि वे उन अपवादोंका प्रतिवाद करें जो उसने उनपर लगायेथे, परन्तु मुझे अब विदित होताहै कि मैंने अपने विचारोंको उनपर झूँठी साक्षी देने के लिये बहका दियाथा, और यह दोषारोपण झूँठाथा।

यमिलिया-परमेश्वर करे उनके क्रुद्ध होने का कारण कोई राजकीय व्यवसाय ही हो जैसाकि आपका विचार है। और इसका हेतु आप के विषयमें कोई निरर्थक सन्देहजनक भावना या कल्पना न हो।

देशदामिनी--ऐसा दुर्दिन न आवे। उनके ऐसा सन्देह करने का कोई कारण नहीं है।

यमिलिया-परन्तु रिसाड़+पुरुषोंके मनों का समाधान इस भांति नहीं होताहै। वे कभी किसी कारण से सन्देही नहीं होते हैं, वरन इसलिये सन्देही होतेहैं कि उनकी प्रकृतिही सन्देही होने की रहती है। जार-सन्देहरूपी पिशाच का कोई बाहर से उत्पन्न हुआ कारण नहीं होता, किन्तु वह स्वयं उद्भूत होता है।

देशदामिनी--परमेश्वर मेरे पति के हृदयको उस पिशाच से बचावे।

यमिलिया--महाशया! एवमस्तु।

देशदामिनी--मैं उनको जाकर ढूँढूँगी। केसियो तुम इधर टहलते रहना। यदि मैंने उनको अनुकूल पाया तो मैं तुम्हारी विज्ञप्ति को छेड़ूँगी और यथाशक्ति उसको स्वीकृत कराने का प्रयत्न करूँगी।

केसियो--मैं नम्रतापूर्वक श्रीमती का धन्यवाद करता हूं।

(देशदामिनी और यमिलिया का गमन।)

(वियंका का प्रवेश।)

वियंका--प्यारे केसियो, नमस्ते।

+ रिसाड़=जारशंकित, जो अपनी स्त्रीपर पुंश्चली होनेका झूँठा संदेह करता है।

केसियो--तुम घरसे कैसे चली आई ? मेरी परम सुन्दरी वियंका तुम कुशलपूर्वक हो ? धर्मकी शपथ प्राणप्यारी मैं तुम्हारे ही घर आता था।

विथंका---और मैं तुम्हारे डेरेपर जारही थी। एक सप्ताह तक अलग रहना, वाह ! वाह ! यह क्या बात हुई ? सातदिन और सात रात ? आठ बीसी और आठ घंटे और इसपर भी विरह के घंटे जो प्रेमासक्तों के लिये घड़ी के बतलाये हुये घंटों से कितने ही लंबे मालूम पड़ते हैं। पलपल गिनकर समय बिताना बड़ाही भारी होताहै।

केसियो--वियंका मुझे क्षमाकर मैं इसबीच बड़ी चिन्ता में निमग्न था पर जब मुझे कुछ अवकाश मिलेगा तो मैं इस अनुपस्थिति की सब कसर एक साथही निकाल दूँगा। प्यारी वियंका ! (उसे देशदामिनीका रूमाल देता है।) मुझे इसी नमूने का एक दूसरा रूमाल बनादेना।

वियंका--केसियो ! बतला यह कहाँ से आया ? अवश्य यह किसी नई सखीका प्रेमचिन्ह है। अब मुझे तुम्हारी अनुपस्थिति का यथार्थ कारण जान पड़ा है। क्या ऐसी नौबत आपहुँची है ? अच्छा देखा जायगा।

केसियो--अरी जा, बातें बनाती है, ऐसी पापी भावनाओंको शैतान के शिर डाले, जिसने वे तेरे मस्तिष्क में ठोंसी हैं। अब तू सन्देही होगई है जो ऐसी बात कहती है कि यह किसी नायिका का प्रेमस्मारक है। सच कहताहूँ वियंका ऐसी कोई बात नहीं है।

वियंका-अच्छा फिर यह किसका है आपके पास कहां से आया ?

केसियो-मैं इन दोनों में से एक बातभी नहीं जानता हूँ। मैंने उसे अपने कमरेमें पड़ा हुआ पाया है। मुझे इसका काम बड़ा पसंदहै।

इसके वापिस मांगे जाने के पहिले (ऐसा होना संभव है) मैं यह चाहता हूँ कि इसी नमूने का और दूसरा तय्यार होजाय। अच्छा इसको लेले और दूसरा तय्यार करदे तथा अब मुझे यहां ही छोड़दे

वियंका-मैं आपको क्यों छोड़दूँ ?

केसियो-मुझे यहां सेनापति महाशयसे मिलना है, मैं इस बात में अपनी नामवरी नहीं समझता और न मैं इस बातको चाहताही हूँ कि वे किसी स्त्री के साथ मुझे देखपावें।

वियंका-क्यों, कृपाकरके इसका कारण तो बतलाइये।

केसियो-इसका कारण यह नहीं है कि मैं तुमको प्यारा नहीं मानता।

वियंका--हां यही कारण है कि तुम मुझे प्यारी नहीं मानते। अच्छा तो कुछ दूरतक मेरे साथ चलो और कहो कि तुम मुझे आज सांझ को ही मिलोगे या नहीं ?

केसियो--मैं तुम्हारे साथ थोड़ी ही दूरतक चल सकता हूं। क्योंकि मुझे यहाँ उपस्थित रहना चाहिये। परन्तु मैं तुम से शीघ्र मिलूँगा।

वियंका--अच्छा देखा जायगा मुझे सामयिक स्थिति के अनुसार चलना चाहिये। (जाती है)

चौथा अंक

पहला दृश्य-दुर्ग के सामने।

यागो-क्या आप ऐसा सोच सकते हैं ?

ओथेलो-क्या सोच सकते हैं ? यागो !

यागो-क्या रहस्यमें* चुम्बन करना अच्छा है ?

---

* रहस्य=एकान्त।

ओथेलो–ऐसा चुम्बन नीतिक विरुद्ध है।

यागो–या कोई स्त्री अपने सखा के साथ एक घंटा भर या इस से अधिक शयन सेजपर नंगी रहे तो क्या इसमें कुछ हानि है?

ओथेलो–शयन सेजपर नंगी रहे और इसमें कुछ हानि न हो? यागो यह तो मानो शैतानके ठगने के लिये पाखंड रचना है ÷। जो लोग अंतःकरण शुद्ध होने पर भी ऐसा करते हैं, शैतान उनके धर्म्म की परीक्षा, उनकी कामाग्नि को प्रज्वलित करके करता है और वे अपनेको ऐसी अवस्था में इस विचार से डाल कर कि हम कामेच्छा पूरी किये विना रहजायेंगे, जोकि होना असम्भव है, अपने आप मानो परमेश्वर की परीक्षा करना चाहते हैं। यह व्यर्थ विडम्बना है।

यागो-यदि वे एसी अवस्था में कुछ न करें तो उनका इस भांति परमेश्वरकी परीक्षा करना एक ऐसी चूकहै जो क्षमा योग्य है। पर यदि मैं अपनी पत्नी को एक रूमाल दूँ।

ओथेलो–फिर क्या?

यागो–फिर क्या! वह उसकी संपत्ति होजाती है और जब उसकी संपत्ति होगई तो वह उसे जिस पुरुषको चाहे देसकती है।

ओथेलो–पर इसमें उसको अपनी मान प्रतिष्ठा का भी विचार करना पड़ेगा। क्या वह उसे देसकती है?

यागो—उसकी मान प्रतिष्ठा एक ऐसा तत्व है जोकि देखा नहीं

÷ ईसाइयों का विचार है कि मनुष्यों से शैतान पाप कराता है। पाखंडी लोग भीतर पापी और बाहर पुण्यात्मा बनकर लोगों को बहुधा ठगते हैं। इस वाक्य का अर्थ यह है कि जो लोग ऐसा करते हैं वे मानो शैतान से तो पाप कर्म्म करने के लिये उत्तेजित होकर उसको झूँठी आशाओं में रखते हैं कि हम पापकर्म्म करेंगे किन्तु अन्त में करते नहीं। ऐसा होना असम्भव है।

जासकता, बहुधा उनलोगों में वह भासित होती है जिनमें यथार्थ में वह होती ही नहीं है । वह एक दिखलावटी बात है । परन्तु रूमाल से उनका भेद खुलजाता है ।

ओथेलो—ईश्वर की शपथ, मुझे बड़ी प्रसन्नता होती यदि मैं उसको भूल जाता । किन्तु शोक ! तेरे कहने से जैसे किसी घरकी छत में जहां कोई रोगी हो, गिद्ध का आना अमंगलसूचक होता है वैसेही मेरी स्मृति में वह आगया है । क्या उसके पास मेरा रूमाल था ।

यागो—हाँ, पर इसकी क्या चिन्ता है ।

ओथेलो—अब यह अच्छी बात नहीं है ।

यागो—यदि मैं यह कहता कि मैंने उसको कुकर्म करते देखा है या मैंने उससे ऐसी बात कहते सुना है, तो क्या होता ? ऐसे भी कितने ही धूर्त जहां तहां पड़े हैं जिन्होंने मानो अपनी ही अति याचना से किसी नायिका को वशीभूत किया है या विना अपनी ही अति याचना के किसी नायिका के अपने आप ही उन पर आसक्त होजाने से उसकी मनोभिलाषा पूर्ण की है, और जो इन बातों को छिपा नहीं सकते और विना बके हुए नहीं रह सकते हैं ।

ओथेलो—तो क्या उसने कोई बात कही है ?

यागो—श्रीमान्, उसने मुझ से यह बात कही है, पर आप निश्चय समझिये इससे अधिक नहीं कही है कि जिससे वह सौगंद देनेपर अस्वीकार न करसके ।

ओथेलो—उसने क्या कहा है ।

यागो—धर्म्मकी शपथ, उसने यह कहा है कि उसने करलिया है, पर मैं नहीं कहसकता हूँ कि उसने क्या किया है ।

ओथेलो—क्या ? क्या ?

यागो—शयन।

ओथेलो-उसके साथ ?

यागो—उसके साथ, उसके ऊपर जो कुछ आप समझें।

ओथेलो--उसके साथ शयन करना! उसके ऊपर शयन करना! हम ऊपर से शयन करना सत बिगाड़ने को कहते हैं। उसके साथ शयन करना, यह बात घृणास्पद है। रूमाल का देना पाप स्वीकार करना है। रूमाल! यह पहिले पाप स्वीकार करना और फिर अपने किये कुकर्म के लिए फांसीपर लटकना है, पहिले फांसीपर चढ़ना और तब पाप स्वीकार करना है। मैं इस बातको सुनकर कंपायमान होरहा हूं, केवल शब्दों से ही इसभांति मेरा कलेजा नहीं टूट रहा है इस प्रसंग में बिना कुछ सत्यता हुए, मेरी अनुभूतियां इसभांति क्षोभसे कदापि सर्वग्रास नहीं होतीं। यह सत्यकी छाया ही से पैदा हुआ है। केवल शब्दों से ही मैं इतना कंपायमान नहीं होरहा हूँ। अनर्थ! नासिका से नासिका, अधरसे अधर, कर्ण से कर्ण सम्मिलन! क्या यह संभव है! पाप स्वीकार! रूमाल! अरे शैतान! (मूर्च्छा खाकर गिरता है।)

यागो--मेरी बूटी! अपना काम करती चल। अति विश्वासशील मूर्ख ऐसे ही फाँसे जाते हैं, और कई योग्य और सती ललनायें जो सर्वथा निर्दोष होती हैं इसी भांति कलंकित होती हैं। हे मेरे श्रीमान्! आप को क्या हुआ है। श्रीमान् मैं कहता हूं! श्रीमान् ओथेलो!

(केसियो का प्रवेश)

कहो केसियो कैसे आये ?

केसियो-क्या वृत्त है ?

यागो-मेरे स्वामीको मृगी रोग होगया है। यह दूसरा दौरा है एक दौरा उनको कल हुआ था।

केसियो—उनकी अँखपट्टियों को मलो। (मलना चाहता है)

यागो—नहीं ऐसा मतकरो। इस तन्द्राको विना छेड़े अपनी गति पूरी करलेने देना चाहिये। यदि ऐसा न किया जाय तो उनका मुँह गाज से भर आता है और धीरे २ वह भयंकर उन्माद में पलट जाता है। देखो ये कुछ हिलने लगे हैं, तुम थोड़ीदेर के लिये अलग होजाओ, वह अभी चंगे होजायँगे, जब ये चले जायँगे तो मुझे एक बड़े आवश्यक विषयमें तुमसे बातचीत करनी है।

(केसियो का गमन)

सेनापति महाशय! आप कैसे हैं आपके सिरपर तो कोई चोट नहीं आई है।

ओथेलो—क्या तू मेरा ठट्ठा करता है?

यागो—नहीं, ईश्वर की शपथ, मैं आपका ठट्ठा नहीं करता हूँ। परमेश्वर करता कि आप एक धीर पुरुष की भांति अपने भाग्य के फेरको सहलेते।

ओथेलो—जो मनुष्य जारणी-पति ÷ होता है वह राक्षस होता है, पशु होता है।

यागो—तब तो किसी जनाकीर्ण नगर में कई एक पशु और बहुतेरे नागरिक राक्षस मिलेंगे।

ओथेलो—क्या उसने अपना पाप स्वीकार किया है!

यागो-भद्र महाशय! मनुष्य बनिए, इसबातका विचार कीजिये कि आपकी दशा कुछ विलक्षण नहीं है। प्रत्येक जन जो विवाह

÷ मूल में "जारिणीपति" के स्थलपर "जिस मनुष्यके सींग होते हैं" पुराने समय में अंग्रेजों में यह विश्वास था कि जिस मनुष्यकी स्त्री पुंश्चली होतीहै उसके माथेपर सींग जमजाते हैं। हिन्दीवाक्यशैली (महावरा) में इसका उलटा अर्थ मनुष्यमें कोई विलक्षणता होती है उसके सिरमें सींग जमना कहते हैं।

बंधन में बंधा है आपका जोड़ा है। करोड़ों ऐसे मनुष्य इस समय वर्त्तमान हैं जो अपनी दुश्चारिणी स्त्रियों के साथ रात्रिमें शयन करते हैं, जिनको कि वे निःसन्देह पतिव्रता समझते हैं। आपकी अवस्था उनसे अच्छी है। हा! किसी पुरुष का शयन सेज में किसी ऐसी पत्नी का चुंबन करना जो वास्तव में कुलटा है किन्तु जिसे वह निःशंक होकर सती समझता है नरक भोगता है। यह अत्यन्त असह्य दुःख है जिसको शैतान पहुँचा सकता है। यदि मेरी स्त्री मुझसे विरक्त हो और मुझे इसका पता लगजाय तो जिस समय मैं इस बातको जान जाऊँगा कि उसने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया है उसी समय मुझे यह भी सूझ जायगा कि उसके साथ कैसा वर्त्ताव करना चाहिए।

ओथेलो—तू ज्ञानवान् है और जो बात तू कहता है ठीक है।

यागो--आप थोड़ी देर अलग खड़े रहें और धीरजकी सीमाको उल्लंघन न करें। जब कि आप यहां अपने शोकसे ग्रसित होकर पड़े थे (आपके पदके पुरुषको ऐसा क्षोभ करना रत्तीभर भी शोभा नहीं देता) कैसियो यहां आया था मैंने उसको टालदिया और आपके अचेत होनेका एक अच्छा हेतु बतला दिया। मैंने उससे कहा है कि थोड़ी देरमें आवे और मुझसे वार्तालाप करे। वह मुझसे इसकी प्रतिज्ञा करे गया है। आप किसी वस्तु के पीछे छिपजाइये और उसका मुँह बनाना, ठट्ठा करना और बेधड़क तिरस्कार करना, जो उस की प्रत्येक आकृति से प्रकट होंगे, ध्यान लगाकर देखिये। क्योंकि मैं उससे इस कथा की पुनरावृत्ति कराऊँगा कि उसने कहाँ, कैसे, कै वार, कितने दिन हुये और कब आपकी स्त्री के साथ सगमम किया था और फिर वह कब करेगा मैं फिर कहता हूँ कि आप उसके

हाव, भाव, कटाक्ष पर भलीभांति दृष्टि रखना, मैं आपको माता मरियमकी* शपथ देताहूँ कि आप धैर्य्य धारण करें, नहीं तो मुझे यही कहना पड़ेगा कि आप केवल बदला लेनेकी अनुभूति से भरे हैं और आपमें मनुष्यत्व कुछभी नहीं है।

ओथेलो—यागो! क्या तू सुनरहा है? निश्चय रख कि तू मुझको धैर्य्य में पारंगत पावेगा, परंतु साथही यहभी सुनले कि मैं रक्त-पिपासु भी बन जाऊँगा।

यागो—यह बात ठीक है, परन्तु हमको किसी बातमें व्यग्रता नहीं करनी चाहिये और सदैव समयानुकूल चलना चाहिये। आप अलग होजाइये। (ओथेलो अलग होजाता है।) (अपने आप) अब मैं केसियोसे वियंका का प्रसंग छेड़ूंगा। वह एक लौंडी है जो अपना यौवन विक्रय करके अपने लिये रोटी कपड़ा पैदा करती है, वह छोकरी केसियोपर लट्टू है और जैसा वेश्याओं में रोग होता है कि वे सैकड़ों को भरमाती हैं पर आप एक के पंजे में पड़ जाती हैं ऐसीही यह भी केसियो पर आसक्त है। जब वह उसकी चर्चा सुनेगा बिना खिलखिलाकर हँसे नहीं रहेगा। वह इधर आरहा है।

(केसियोका पुनः प्रवेश)

जैसेकि वह मुसकरावेगा, ओथेलो बावला बन जायेगा और सन्देही ओथेलो जिसने प्रेमसम्बन्धी कोई पुस्तक नहीं पढ़ी है, बेचारे केसियो के हाव भाव और चुलबुलाहट का उलटा अर्थ लगावेगा।

(प्रकट) कहो सहकारी जी अच्छे हो?

---

* मरियम=ईसाइयों के प्रभु ईसामसीह की माता।

केसियो–आप मुझे सहकारी पुकार कर कांटोंमें घसीटते हैं, कि जिस उपाधि के विना मैं मरा जाताहूँ।

यागो–देशदामिनीको खूब घेरो बस तुम्हारा काम बना बनाया है। (धीमे स्वरसे) यदि वियंका के हाथ यह बात होती तो तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार होने में देर न लगती ?

केसियो-शोक ! वह वेचारी मंदभागिनी है (हँसता है।)

ओथेलो-(अपने आप) देखो वह अभी कैसा हँस रहा है !

यागो –मैंने किसी स्त्रीको किसी पुरुष से ऐसा प्रेम करते नहीं देखा है।

केसियो–शोक ! वेचारी दुष्टा, मैं समझताहूँ मुझे सचमुच प्यार करती है। (हँसताहै।)

ओथेलो–(अपने आप) अब इसबातको अस्वीकार सा करता है और हँसीमें टालता है।

यागो-केसियो सुनोतो ?

ओथेलो—(अपनेआप) अब वह इसबातके फिरसे दुहराने की अतियाचना करताहै, करते जाओ, ठीक है, ठीक है।

यागो–उसने यह बात फैलाई है कि तुम उसके साथ व्याह करने को हो, क्या तुम्हारी ऐसी इच्छा है ?

केसियो-ही ! ही ! ही !

ओथेलो–अरे रूमी तू विजयोत्सव+करताजा ! देखा जायगा !

केसियो–क्या मैं उस पातर के साथ व्याह करूँगा ? क्या मैं ऐसा निपट मूर्ख होगयाहूँ। मैं हाथ जोड़ता हूँ भइया, कुछ तो मेरी मतिका विचार करो, ऐसा मत सोचो कि वह विगड़ गई है। ही ! ही ! ही !

+विजयोत्सव करना रूमियोंका एक त्योहार था, जैसी हमारी विजयादशमी।

ओथेलो-(अपने आप) ऐसाही होता है ! ऐसाही होता है ! ऐसाही होता है ! जो हाथ मारते हैं, वे हँसते हैं।

यागो-सचमुच लोग कहते हैं कि तुम्हारा उसके साथ परिणय होने वालाहै।

केसियो-तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ व्यर्थ बकवाद न करो।

यागो-हाँ, सच कहता हूँ, नहीं तो मुझे पापात्मा समझना।

ओथेलो-(अपने आप) तुमने मेरे अच्छा नीलका टीका लगाया ! भला।

केसियो-यह बात उस बंदरीने अपने आप फैलायी है। उसने अपनेही अँधप्रेम और मायामोहसे यह विश्वास कर लिया है कि मैं उसके साथ व्याह करूँगा, मैंने कोई प्रतिज्ञा नहीं की है।

ओथेलो-(अपने आप) यागो मुझसे सैन से कहता है कि अब वह उस कथा का आरम्भ करता है।

केसियो-वह अभीतक यहांथी। वह जहां मैं जाताहूं मेरा पीछा नहीं छोड़ती है, उस दिन मैं समुद्र के किनारे कुछ वेनिसवासियों के साथ बातचीत कररहाथा। वह खिलौनी वहां आपहुँची और इस हाथ की शपथ, उसने इसभांति मेरे गलबहियां डालदीं।

(यागो के गलेमें हाथ बाँधकर डालता है।)

ओथेलो—(अपने आप) हां, इस समय उसने चिल्लाकर मानो यह कहा होगा "हे प्यारे केसियो !" मुँह के हाव भाव से यह बात झलकती है।

केसियो—वह इसीभांति मेरे पीछे लगी रहती है, लिपटती रहती है और मुझको देखकर रो देती है। कहीं मुझे खींचती है, कहीं घसीटती है। ही ! ही ! ही !

ओथेलो—(अपने आप) देखो अब वह यह कहता है कि

किसभांति वह उसको मेरी कोठरी में लेगई। अरे मैं तेरी नाक देखता हूं, जिसको काटकर मैं उस कुत्तेको देडालूँगा जो पहिले पहल मुझे मिलेगा।

केसियो—मुझे उसकी संगत छोड़ देनी चाहिये।

यागो—(धीरे स्वर से) देखो तो वह तो यह आपहुँची।

केसियो—मरियम की शपथ, वह ठीक ध्रुवदेश की बिल्लीसी है×परन्तु वैसी अप्रिय नहीं है,वह सुंगधित द्रव्यों का सेवन करके सुवासित रहती है।

(वियंका का प्रवेश।)

कहो वियंका—तुम्हारा इसभांति मेरा पीछा करने से क्या अभिप्राय है?

वियंका—परमेश्वर करे तुम्हारा पीछा शैतान और उसकी माता करे! तुम्हारा मुझे उस रूमाल के देने से क्या अभिप्राय है जो तुमने मुझे अभी दिया है मेरी बड़ी भूल हुई है जो मैंने उस को लिया है। हां ठीक है मैं तुम्हारे लिये उसी आदर्श का एक और काढूं। मेरा मन पतियाने के लिये तुमने यह अच्छी कहानी गढी है कि तुमने उसको अपने कमरे में पड़ा हुआ पाया है! और तुम इस बातको नहीं जानते हो कि वह किसका है और कौन उसे वहां छोड़ गया है? यह किसी छिनाल का प्रेमचिह्न है, और मैं उसी नमूने का तुम्हारे लिये एक और बनाऊँ? वाह क्याही सुन्दर बात है! लो यह है, उसे अपनी छैल छबीली को वापिस करदो, जहां से तुमको वह मिला है। मैं इसका काम नहीं काढूंगी।

केसियो-प्यारी वियंका तुझे क्या होगया? तेरी ऐसी मति क्यों मारी गई है?

×ध्रुव देशकी बिल्लीका कामातुर होना कहा जाता है, इसलिये यह शब्द पुँश्चली के अर्थ में काम आता है।

ओथेलो-(अपने आप) ईश्वर की शपथ, वह मेराही रूमाल होगा !

वियंका—हां, और आज रात खाना खाने को आना हो तो आजाना, नहीं तो फिर जब तुम्हारा बुलावाहो तब आना। (जाती है)

यागो-जाओ, उसके पीछे जाओ।

केसियो-धर्म्म की शपथ, मुझे जाना पड़ता है नहीं तो वह बाज़ार में मुझे गालियां दे बैठेगी।

यागो—क्या तुम रातको उसके यहां खाना खाओगे ?

केसियो-सचमुच मेरी इच्छा ऐसी ही है।

यागो-अच्छा यदि अवसर मिला तो मैं भी आऊँगा, और तुम्हारे साथ वार्तालाप का आनँद उठाऊँगा।

केसियो-मेरी प्रार्थना है कि आप अवश्य आना। आओगे न ?

यागो-अच्छा जाओ, अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है।

(केसियो का गमन।)

ओथेलो—(आगे बढ़कर) यागो ! इसका वध मैं कैसे करूँगा?

यागो-आपने देखा है न ? वह अपने पापकर्म्म पर कैसे खिलखिला कर हँसताथा ?

ओथेलो-हाय ! मैंने देखाहै, यागो।

यागो-और आपने रूमाल भी देखा है ?

ओथेलो-क्या वह मेरा था ?

यागो-मेरे सिरकी सौगंध, वह आपका ही था। और आपने इस बात को भी भाँपा कि वह आपकी मूर्ख स्त्रीको किस दृष्टि से देखता है ? आपकी स्त्रीने रूमाल उसे दिया है और उसने वह रूमाल रंडीको देडाला है।

ओथेलो-मैं अब उसको अनंत काल तक अतियातना देकर

मारडालूँ तब मुझे संतोष हो। उसका एकदम मारडालना बड़ा हलका दंड होगा। आहा! वह क्याही दिव्य स्त्री है! क्याही मनोहर स्त्री है!

यागो—नहीं! नहीं! अबतो आपको उसकी सब गुणविशिष्टता भूल जानी चाहिये।

ओथेलो—हाँ, वह गल गल कर मरने योग्य है और आज रात ही वह नरक धामको पधारेगी, जीती नहीं रहेगी। मेरी छाती पत्थर के समान कठोर होगई है। मैं उसे पीटताहूँ तो मेरे हाथमें चोट लग जाती है। हाय! इस जगतमें उससे अधिकतर रमणीय और कोई प्राणी नहीं है, वह एक महाराजाधिराज की महारानी होने योग्य है और जो कुछ कठिन कार्य वह उससे करने को कहेगी वह सहर्ष करेगा।

यागो—अब आपको उसकी मोहिनी मूर्त्तिका विचार छोड़देना चाहिये, नहीं तो आप रहजायँगे।

ओथेलो—वह फाँसी पर चढ़जाय मुझे इसकी चिंता नहीं है। वह वास्तवमें जैसी है मैं वही बात कहता हूँ। वह सुई के काम करनेमें कैसी चपल है। गाना कैसा अद्भुत जानती है। उसका गाना सुनकर जंगली भालू भी अपना जंगलीपन छोड़देगा। उस की बुद्धि कैसी कुशाग्र और कल्पना शक्ति कैसी प्रचुर है?

यागो—यह सब गुण उसके अपराधको औरभी घोर बनाते हैं।

ओथेलो—हां, कई सहस्रगुणा अधिक। और फिर देखो वह कैसे नम्र स्वभाव की है?

यागो—हां, वह अत्यन्त नम्र है, जिसने केसियो के साथ ऐसा व्यवहार किया है।

ओथेलो—निःसन्देह यह सत्य है, पर यागो इस बातको सोचने

से बड़ाही शोक होता है । यागो ! हा ! यागो ! इस बातका अत्यन्त शोक है ।

यागो-यदि आपका उसके दुष्टाचरण पर इतना अनुराग है, तो उसको नियमसे अनुज्ञा देदीजिये कि वह अपराध करती रहे और आप कान नहीं हिलावेंगे । क्योंकि इससे किसी को क्षति पहुँचती है तो आपकोही पहुंचती है और किसीको नहीं ।

ओथेलो-नहीं मैं उसके टुकड़े २ कर डालूँगा उसने मुझे भड़ुआ* बनाया है ।

यागो-हां यही तो उसमें बुराई है ।

ओथेलो-और वह फँसी किसके साथ है ? मेरे कर्म्मचारीके ।

यागो-यह और भी बुरा है ।

ओथेलो-यागो, आजरात को कुछ विष ले आना मैं उसके साथ वाद विवाद नहीं करूँगा, नहीं तो कहीं उसकी छवि और मनोहरता मेरे बदला लेने के संकल्पको शिथिल करदेगी । यागो ! ऐसा होना संभव है ।

यागो—उसको जहर देकर मत मारिये, वरन उस शय्या पर उसका गलाघोंट डालिए जिस शय्या को उसने कलंकित किया है ।

ओथेलो—हां यह बहुत ठीक है । इसके न्याय-युक्त होने से मुझे हर्ष होता है, यह बहुत अच्छा होगा ।

यागो—और अब रहा केसियो,उसका काम तमाम मैं करूँगा। आपको इसका सविस्तर समाचार आज अर्धरात्रि के समय मिल जायगा ।(नेपथ्य में तुरही की ध्वनि)

ओथेलो—अति उत्तम, यह तुरही क्या बजरही है ?

यागो—निस्संदेह वेनिस से कोई आया है । सभापति ने लोदो-

---

* भड़ुआ=जारिणीपति ।

विको यहां भेजा है और देखिये आपकी पत्नी भी उसके साथ आरही है।

(लोदोविका, देशदामिनी और अनुचराकों प्रवेश।)

लोदोविको—योग्य सेनापति, आपका परमेश्वर मंगल करें।

ओथेलो—महाशय, मैं आपके अभिवादन को अन्तः करणस स्वीकार करताहूँ।

लोदोविको—राज सभापति और राजसभासद् महोदयों ने आपको प्रणाम कहा है। (एक पुलिंदा देता है।)

ओथेलो—उनके कृपाकटाक्ष की सामग्री मुझे शिरोधार्य्य है। (पुलिंदे को खोलकर पढ़ता है।)

देशदामिनी—कहो प्यारे भइया लोदोविको क्या समाचार है?

यागो—महाशय, मैं आप का दर्शन मिलने से बड़ा प्रसन्न हुआ हूँ। आप का साइप्रस में शुभागमन हो।

लोदोविको—मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ। सहकारी केसियो कैसा है?

यागो—महाशय वह जीवित है।

देशदामिनी—भइया, मेरे प्राणनाथ और उसके बीच बुरी अनबन होगई है। परन्तु मुझे आशा है कि तुम इसको सब ठीक करदोगे।

ओथेलो—क्या तुम्हें इसका निश्चय है?

देशदामिनी—प्राणनाथ?

ओथेलो-(पढ़ता है)।"अपने भरशक इसको करने में न चूकना"।

लोदोविको-वे तुमसे बातचीत नहीं कर रहेथे। उनका ध्यान पढ़ने पर लगाहै। क्या हमारे श्रीमान् और केसियो के बीच खटपट होगई है?

देशदामिनी-हां, बहुत बुरी खटपट होगई है। मैं केसियो को प्यारी मानतीहूँ और इसलिये बहुत चाहतीहूँ कि इनका मेल जोल होजाता तो अच्छाथा।

ओथेलो-इसपर आग लगे और वज्र पड़े!

देशदामिनी-प्राणनाथ?

ओथेलो-क्या तुम बुद्धिमतीहो?*

देशदामिनी-(लोदोविकोसे) क्या वे क्रुद्ध होगये हैं?

लोदोविको-कदाचित् वे वेनिसकी चिट्ठी से उद्विग्न मन होगये हैं, क्योंकि जहांतक मेरा विचार है राजसभाने उनको वेनिस वापिस बुलाया है और केसियोको उनका पदस्थ किया है।

देशदामिनी-निश्चय समझिये मैं इस बातको सुनकर प्रसन्नहूँ।

ओथेलो-सचमुच?

देशदामिनी—हां, प्राणनाथ!

ओथेलो—तू मेरे वापिस बुलाये जाने से प्रसन्न है और मैं इसलिये प्रसन्न हूँ कि तू ऐसी बावली होगई है कि मेरे वापिस बुलाये जाने से प्रसन्न हुई है।

देशदामिनी—कैसे? प्रिय प्राणनाथ!

ओथेलो—अरी पिशाचनी! (उसको मारता है।)

देशदामिनी—मैं इस दंडके योग्य नहीं हूँ।(रोती है)

लोदोविको—श्रीमान्, यदि मैं सौगंध खाकर भी कहूँ कि

---

*अंग्रेज टीकाकार इस प्रश्नका यागो से किया जाना कहते हैं। मैं इससे सहमत नहींहूं। क्योंकि ओथेलो को सन्देह था कि देशदामिनी का केसियो से बुरा सम्बंध है। इस पर देशदामिनी का यह कहना कि वह केसियोको प्यारा मानती है, ओथेलो को स्वभावतः बुरालगा और तब उसने यह प्रश्न किया।

ऐसी घटना हुई है, तो भी वेनिस में कोई इसबात का विश्वास नहीं करेगा। यह भारी÷बात है। उसको मनाइये।

ओथेलो—हे पिशाचनी, हे डाकिनी! यदि स्त्रियों के आंसू गिर कर जम सकते तो उनके प्रत्येक बूंद में से एक २ घड़ियाल पैदा होता×जा मेरी दृष्टि से दूर होजा।

देशदामिनी—मैं आप को अप्रसन्न करने के लिये यहां नहीं ठहरूँगी। (जाती है।)

लोदोविको—वह सचमुच एक आज्ञाकारिणी श्रीमती है। मैं आप से प्रार्थना करता हूं कि उसको वापिस बुला लीजिये।

ओथेलो—बाईजी ! (देशदामिनी वापिस होती है।)

देशदामिनी—प्राणनाथ ?

ओथेलो-आप उसका क्या करेंगे ?

लोदोविको—मैं, श्रीमान् !

ओथेलो-हाँ, आपने कहा है कि मैं उसको लौटाऊँ। महाशय वह लौट सकती है और लौटती है और इसी भांति घूमती रहसकती है और फिर लौट सकती है। महाशय! वह रोसकती है और रोती है और जैसा आप कहते हैं वह आज्ञाकारिणी है। (देशदामिनी से)अच्छा तुम रोती जाओ-(लोदोविको से) महाशय! वेनिस की आज्ञा के विषय (देशदामिनी से) हे मनोविकार की विचित्रमूर्त्तिः (लोदोविकोसे) जिसके द्वारा मुझे घर वापिस होने

÷ भारी=बड़े अपमान की।

× यूरोपीय लोगों में पूर्व समय से यह विश्वास था कि जब घड़ियाल किसी मनुष्यको निगलता है तो उसका सिर निगलने के पहिले वह रोता है। और फिर उसको खाजाता है। इससे अँग्रेजी में लोकोक्ति है"घड़ियाल के आंसू" अर्थात् बनावटी आंसू। हिन्दी में थूकके आंसू कहते हैं जो ठगने के लिये निकाले जाते हैं।

का आदेश मिला है। (देशदामिनी से) जाओ तुम चली जाओ मैं फिर तुम को अभी बुलाऊँगा। (लोदोविको से) महाशय, मैं इसका पालन करूंगा! और वेनिसको वापिस होजाऊँगा। (देशदामिनीसे) जाओ निकल जाओ! (लोदोविको से) के लियो मेरा पदस्थ होगा, और महाशय मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आज रात आप खाना मेरे साथ खावेंगे आपका साइप्रसमें शुभागमनहो। (अपने आप) बकरे और बंदर!

(जाता है)

लोदोविको-क्या वह यही महानुभाव मूर है जिसको हमारी राजसभा परमयोग्य बतलाती है? क्या उसकी यही प्रकृति है जिसको क्षोभ चलायमान नहीं करसकता है? जिसके सार-गर्भ धर्माचरण को कोई अकस्मात् घटनारूपी गोली या कोई दैव संयोग रूपी तीर न तो वेधसकता है और न छील सकता है।

यागो-उनमें बड़ा परिवर्त्तन होगया है?

लोदोविको-क्या उसकी मति अपने ठिकाने है? क्या उसका मस्तिष्क खाली तो नहीं होगया है?

यागो-वे ऐसेही हैं जैसे हैं मैं अपनी सम्मति प्रकाश नहीं कर सकता हूं। मैं परमेश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि वह ऐसे हों जैसे कि उनको होना चाहिये।*

लोदोविको-अपनी पत्नीको मारना पीटना यह कैसे आश्चर्यकी बात है!

यागो-धर्म्म की शपथ, यह अच्छीबात नहीं है। मैं चाहताहूँ कि यही सबसे बुरा बर्ताव उनका श्रीमती देशदामिनी के साथहो, इससे अधिक और कुछ नहो।

लोदोविको-क्या वह ऐसाही किया करताहै? या वेनिस की चिट्ठियोंका कुछ प्रभाव उसके चित्तपर पड़ाहै? जिससे उससे ऐसा अपराध होगया है?

---

* जैसे उनको होना चाहिये अर्थात् स्वस्थचित्त।

यागो-शोक ! शोक ! मैं इसको श्लाघ्य नहीं समझताहूँ कि मैं उन बातों को प्रकट करूँ जो मैं जानता हूँ । आप स्वयं उनको निरीक्षण करेंगे और विना मेरे कुछ कहे हुए उनकीही चाल ढालसे आपको विदित होजायगा कि वे कैसे हैं । आप उनके पीछे २ जायं और देखें कि वे क्या क्या करते हैं ?

लोदोविको-मुझे उससे धोखा हुआहै, इसका बड़ा खेदहै ।

(जाते हैं ।)

दूसरा दृश्य। दुर्ग में एक कोठड़ी ।

(ओथेलो और यमिलिया का प्रवेश ।)

ओथेलो-तो फिर तुमने कुछ नहीं देखा है ?।

यमिलिया-मैंने कभी कुछ सुनाभी नहीं है । और न मुझे कभी कुछ संशय हुआहै ।

ओथेलो-अच्छा तुमने कभी देशदामिनीको और केसियोको एक साथ देखाहै ?

यमिलिया-हां देखाहै, पर उनके बीच जो वार्तालाप हुआथा उसका मैंने एक२अक्षर सुनाथा और उसमें कुछ बुराईकी बात नहींथी।

ओथेलो-क्या वे कभी कानाफूसी नहीं करतेथे ?

यमिलिया-नहीं श्रीमान्, कभी नहीं ?

ओथेलो-तुम्हें कभी वे टालतो नहीं दिया करतेथे ?

यमिलिया--कभी नहीं।

ओथेलो-क्या पंखा, दस्ताने या मुँहकी जाली या और कोई वस्तु लाने को उन्होंने तुम्हें कभी नहीं भेजा ?

यमिलिया-कभी नहीं श्रीमान् ।

ओथेलो-यह अनोखी बातहै ।

यमिलिया—श्रीमान्, मैं इसबातमें अपनी जानकी ड लगा हो सकतीहूँ कि वह सती है। यदि आपका अन्य विचार है तो उसे दूर कीजिये। वह आपके हृदयमें रखने के योग्य नहीं है। यदि किसी चांडाल के कहनेसे आप के मनमें यह बात समागई है तो, परमेश्वर उस चांडालको इसका बदला उसकी जिह्वा सर्पसे डंसा कर देगा। यदि वह शुद्धाचरण, पतिव्रता और सती नहो तो फिर संसारमें कोई भी मनुष्य सुखी नहीं होसकता, क्योंकि तबतो पवित्र से पवित्र स्त्रियों को भी कोई सा निन्दक जैसा चाहे दुष्टचरित्रा बतला सकता है।

ओथेलो—जाओ देशदामिनी को यहां बुलालाओ।

(यमिलिया जाती है।)

वह बहुत कह रही है, पर इस कक्षा की प्रत्येक कुटनी चाहे वह कितनीही सीधी सादीहो इतनी बात कह सकती है, बिना चातुर्य वह अपनी नियोजिका के पापको छिपा सकतीहै। यह एक चलती हुई छिनालहैजो अपने निर्लज्ज रहस्योंको ऐसे छिपाके रखतीहै जैसे कोई गुप्त चिट्ठियों को सन्दूकचे में ताला चाबी लगाकर रखता है। और ऐसी होने परभी वह घुटने टिकाकर ईश्वर की प्रार्थना करती है मैंने उसको ऐसा करते देखा है।

(देशदामिनी के साथ यमिलिया का पुनः प्रवेश)

देशदामिनी—नाथ, आप की क्या आज्ञा है ?

ओथेलो—प्रिये, कृपा करके टुक इधर तो आओ।

देशदामिनी—आप की क्या इच्छा है ?

ओथेलो—मुझे अपनी आँख देखने दो और तुम मेरे मुँहकी ओर देखो।

देशदामिनी—यह कैसी भयंकर भावना है।

ओथेलो—(यमिलियासे) बाईजी ! अब तुम थोड़ा बस कर्त्तव्य

को करो जो तुम किया करती हो। गुप्त प्रिया प्रेमी को भीतर अकेले में छोड़, किवाड़ बंदकर बाहर चली जाओ और यदि कोई आवे तो खाँस जाना या अहँ, अहँ करदेना, जाओ र न, अपनागुप्त व्यवहार करो।

(यमिलियाका गमन)

देशदामिनी—मैं हाथ जोड़कर आपसे कहती हूं आपके इस कथन का क्या अभिप्राय है? आप के शब्दों से ऐसा सूचित होता है कि आप क्रुद्ध होरहे हैं पर मैं उनका अर्थ नहीं समझती हूं।

ओथेलो—क्या?तू क्या है।

देशदामिनी—आपकी भार्या प्राणनाथ आपकी सती और पतिव्रता अर्द्धांगी।

ओथेलो—इस बातकी सौगंध खा और नरकमें जा। नहीं तो अप्सरा के समान जैसी कि तू है, यमदूत भी तुझे पकड़ लेजाने में डरेंगे। इसलिये जो पाप तूने कियाहै उसको अस्वीकार करके अपने पापकी मात्रा दूनी मत कर, जिससे सीधी नरकमें चली जाय। सौगंध खा कि तू सच्चरित्रा है।

देशदामिनी—मैं परमेश्वरको देखकर कहतीहूँ कि मैं साध्वीहूँ।

ओथेलो—मैं परमेश्वरको देखकर कहताहूँ कि तू दुश्चरित्र नरकगामिनी है।

देशदामिनी—प्राणनाथ ! मैंने किससे दुश्चरित्र कियाहै ? किसके साथ कियाहै ? मैं कैसे खोटीहूं ?

ओथेलो—(रोताहै।) हा ! देशदामिनी, यहांसे निकलजा, दूर होजा, अलग चलीजा।

देशदामिनी—शोक ! यह कैसा दुर्दिन आयाहै ? आप क्यों रोते हैं ? प्राणनाथ ! क्या मैं इन आंसुओंका कारणहूं ? यदि कदाचित् आपको यह सन्देह हो कि मेरे पिता आपके वापिस बुलाये जा

के हेतु हैं तो मेरे मत्थे इस अपराध को मत मढ़िये। जब कि वे आप से अलग होगये हैं तो मुझसे भी अलग होगये हैं। मुझे संसार में आपसे अधिक कोई प्रिय नहीं है।

ओथेलो—यदि परमेश्वर की इच्छा मुझे घोर यातना में ही डालने की थी,तो यह अच्छा होता कि वह सब भांति के क्लेश और कलंकों की मेरे अरक्षित सिरपर बौछाड़ करता, मुझे भोजन और वसन से भी रहितकर नंगा बनाता, और मेरी सब आशाओं को भंग करता। तबभी मेरे हृदयमें धैर्य्य का कुछ लेश रहता। परन्तु हा हंत! उसने मुझको ऐसा निश्चल पुतला बनाया है कि जो तिरस्काररूपी समयकी मंदगामिनी अँगुलीका लक्ष्य है। भला इसको भी मैं सहलेता। किन्तु हाय! उस स्थानसे, जिसे मैंने अपना प्राणनिवास बनाया है और जिसपर मेरा जीवन या मरण निर्भर है, और उस स्रोतसे जिससे मेरी जीवनरूपी धारा या तो बहती है या सूख जाती है, यातो निकाल दिया जाना या उसका ऐसा मलिन कुंड बनाके रखना जिसमें मेढकें जाल बुनकर अंडे देती हैं मेरे लिये असह्य है। यह कैसा भयंकर विचार है कि यातो मैं अपनी प्रिया से विमुक्त होजाऊँ या उसको अत्यन्त घृणास्पद रीतिसे भ्रष्ट होनेदूँ। ऐसी दशामें हे धीरज! तू भी अपना रंग बदल डाल। हे गुलाबी कपोल वाले नवल स्वर्गीय दूत! तू अपनी नर्क के समान भीषण आकृति बनादे!

देशदामिनी—मैं समझती हूँ कि मैं अपने महानुभाव प्राणनाथ की दृष्टि में सती हूं।

ओथेलो-हां ठीकहै,तू एसीही पतिव्रता और जितेन्द्रिय है जैसी ग्रीष्म ऋतु की कामुक मक्खियां होती हैं, जो बूचड़ की दुकान में अण्डे देने के समय ही फिर गर्भिणी होजाती हैं। हे चांडाली! तू ऐसी मनोरम सुन्दर है जैसा एक तीक्ष्ण सुगन्धि युक्त पुष्प होता है,

जिसके सूँघने से सिर भिन्ना जाता है। तू जन्मही न लेती तो अच्छा होता ।

देशदामिनी—शोक ! मैंने अनजाने ऐसा क्या घोर पाप कियाहै?

ओथेलो-क्या यह ऐसा, शुभ्र कोमल कागज़, ऐसी अत्यन्त मनोहर पुस्तक इस लिये बनाये गयेथे कि उनपर 'रंडी' शब्द लिखा जाता। कहती है क्या पाप किया? क्या पाप किया? अरी तू सार्वजनिक गणिका है। जो मैं तेरे कुकर्म्मों की कहानी कहूँ तो मेरे गाल अग्निके समान लाल लाल बनकर लज्जा को भस्मीभूत करडालेंगे। कहती है क्या पाप कियाहै? आकाश उस पापकी गंधको नहीं सह सकताहै, और चन्द्रमा उसको देखकर अपनी आँखें बंद कर लेताहै। अघोरी पवन भी जो, जो कुछ पाता है उसका चुंबन किये बिना नहीं रहता, उस पापको सुनने की अपेक्षा पृथ्वीके गर्भ में छिपजाना पसंद करताहै। क्या पाप किया कहती है? क्या पाप किया? निर्लज्ज वेश्या !

देशदामिनी--ईश्वरकी शपथ, आप मेरे लिये अन्याय कररहेहैं।

ओथेलो--क्या तू पातर नहीं है?

देशदामिनी—मैं प्रभु ईसामसीह की भक्त हूँ, मैं कदापि ऐसी नहीं होसकती। यदि इस शरीररूपी मंदिर को अपने पति के लिये किसी दूसरे पुरुष के शास्त्रविरुद्ध संस्पर्श से सदैव रक्षित रखना, वेश्याधर्म्म नहीं है तो मैं कदापि ऐसी नहीं हूँ?

ओथेलो—क्या तू रंडी नहीं है?

देशदामिनी—नहीं, क्योंकि मुझे नरक नहीं जाना है।

ओथेलो—क्या यह सम्भव है?

देशदामिनी—हां, परमेश्वर हमारे अपराध क्षमा करैं।

ओथेलो—तो फिर मैं तुमसे क्षमा प्रार्थना करताहूँ। मेरी जानतो

तुम वेनिस नगर की एक रंडी हो जिसने ओथेलो के साथ विवाह-सम्बन्ध किया है। (यमिलियासे ।) अच्छा बाई जी! जो बाहरसे महात्मा पीटर के गिर्जे की द्वारपाल बनकर मानो स्वर्गधामकी चाबियां रखती हुई गुप्त भांतिसे नारकीय लीला कराती हो।

(यमिलियाका पुनः प्रवेश।)

तुम, तुम, हां, तुम अब चली आओ। हमने अपना काम कर लिया है। यह लो यह तुम्हारा पारितोषिक है। (यमिलिया को कुछ मुद्रा देता है) अब किवाड़ बंद कर दो और कृपापूर्वक इस रहस्य को कहीं प्रकाश मत करना। (जाता है)

यमिलिया-शोक! इस भद्र पुरुष की कैसी भावना होगई है? श्रीमती आप कैसी हैं? आपकी कैसी अवस्था है? मेरी प्यारी स्वामिनी?

देशदामिनी-सचमुच मैं अधनींदी सी होरही हूं।

यमिलिया-प्रिय श्रीमती! मेरे प्रभु को क्या होगया है?

देशदामिनी-किसको?

यमिलिया-यह क्या? मेरे प्रभु को श्रीमती जी।

देशदामिनी-तेरा प्रभु कौन है?

यमिलिया-प्रिय श्रीमती जी! वही जो आपका है।

देशदामिनी-मेरा तो कोई प्रभु नहीं है।

यमिलिया, इस प्रसंगको मुझ से मत छेड़, मुझे रोने की भी सामर्थ्य नहीं है, अश्रुधारा बहाने के सिवाय मैं और कोई प्रत्युत्तर नहीं देसकती हूं। मैं तुझ से विनती करती हूं कि आज रात मेरे बिस्तर पर मेरे व्याह के कपड़े रखदेना, इसका स्मरण रखना और जा अपने पति को यहां बुला ला।

यमिलिया-निःसन्देह यह तो अनोखा परिवर्तन है।

(यमिलिया जाती है।)

देशदामिनी—क्या यह उचित और योग्य है कि मेरे साथ ऐसा बर्ताव किया जाय ? मेरा ऐसा कौनसा व्यवहार है कि जिससे मेरे किसी छोटे से छोटे काम में उनको रत्ती मात्र भी दूषण मिल सकता था ?

(यागो के साथ यमिलिया का पुनः प्रवेश।)

यागो—महाशया ! आपकी क्या आज्ञा है ? आप कैसी हैं ?

देशदामिनी— मैं कह नहीं सकती हूँ। जो छोटे बच्चों को भी समझाते हैं, वे मृदुल साधन और सुगम कार्य्य भार के द्वारा ऐसा करते हैं। उनको मुझे इसी भांति डांटना चाहिये था, क्योंकि ईश्वर की शपथ, मुझे सुधारने के लिये छोटी से छोटी घुड़की भी बहुत होती। जैसे किसी बच्चे के लिये कटुवचन की आवश्यकता नहीं होती, वैसे ही मेरे लिये भी नहीं हैं।

यागो—क्या बात है श्रीमती ?

यमिलिया—मेरे भर्त्ता! शोक है कि श्रीमान् ने इनके लिय ऐसे कुवाच्य रंडी इत्यादिका प्रयोग किया है और ऐसे घृणायुक्त और कटुवचन उच्चारण किये हैं कि जिनको निर्मल चित्त के लोग सह नहीं सकते हैं।

देशदामिनी—यागो, क्या मैं ऐसे दुर्नाम से पुकारे जाने के योग्य हूँ।

यागो—कैसे सुशील श्रीमती ?

देशदामिनी—जिससे कि यमिलिया कहती है मेरे पति ने मुझ को पुकारा है।

यमिलिया—उन्होंने इन्हें रंडी कहा है, एक मदमत्त भिखमंगा भी अपनी नीचसे नीच वेश्या के लिये ऐसा शब्द प्रयोग न करता।

यागो—क्या उन्होंने ऐसा कहा है ?

देशदामिनी–मैं कुछ नहीं समझती हूं। निश्चय मैं ऐसी नहीं हूं।
(रोती है।)

यागो–रोइये नहीं, रोइये नहीं, हाय ! आज कैसा दुर्दिन है !

यमिलिया–क्या उसने अपनी बराबरी के कुलीन विवाहप्रार्थी युवकों को, अपने पिता को, अपने देश को और अपने मित्रों को इसी लिये त्यागा है कि वह "रंडी" कहलाई जाय ? क्या इससे कोई भी बिना रोये रह सकेगा ?

देशदामिनी—यह मेरा दुर्भाग्य है।

यागो–इस गाली देने का शाप उनपर लगेगा। ऐसा छिछोरपन उनमें कहां से आगया ?

देशदामिनी–ईश्वर जाने कहां से आगया।

यमिलिया—मुझे फांसी दे देना यदि यह कलंक किसी ऐसे परम नीचका, किसी ऐसे निरत निंदक दुष्टका, किसी ऐसे कपटी और छली व्यक्ति का गढ़ा हुआ न निकले, जो किसी पदको प्राप्त करना चाहता है। हां, यदि ऐसा न हो तो मुझे फांसी पर लटका देना।

यागो—छीः कोई ऐसा मनुष्य नहीं है और न ऐसा होना सभव है।

देशदामिनी–यदि कोई ऐसा हो, परमेश्वर उसको क्षमा करे।

यमिलिया–मैं तो उसके लिये यही करुणा दिखलाती कि उस को फाँसी देदेती और यमदूत उसकी हड्डियां चावते ! उसने उनके लिये रंडी क्यों कहा है ? उसका किससे समागम है ? उसने किस स्थानपर ? किससमय?कौन ऐसा कामकिया है? उसका ऐसा करने का क्या आभासमिला है?इसकी क्या संभावना है?मूर महाशय को किसी परम दुष्ट व्यक्ति ने, किसी नीच असाधारण व्यक्ति ने, किसी कोढ़ी ने बिगाड़ दिया है। हे परमेश्वर ! ऐसे दुष्टों की कलई खोल

कर उनका यथार्थ रंगरूप प्रकट कर दीजिये और प्रत्येक सत्यशील मनुष्य के हाथ में कोड़ा देकर ऐसे दुरात्माओं को पूर्व से लेकर पश्चिम तक सारे संसार में नङ्गा करके पिटवाते २ घुमवाइये।

यागो-इतना कोलाहल मत करो, जिससे बाहर के लोग भी तुम्हारा कहना सुनलें।

यमिलिया-ऐसे लोगों पर धिक्कार है! कोई ऐसा ही भला मानुष था, जिसने मेरे विषय में भी आप की बुद्धि भ्रष्ट करदी थी और आप को यह सन्देह होगया था कि मूर महाशय के साथ मेरा कुत्सित संबन्ध है।

यागो-तूतो मूर्ख है,हट,परे हो।

देसदामिनो-हे सुजनयागो! मुझे कोई ऐसा उपाय बतलाओ जिससे मेरे प्राणनाथ मुझपर फिर प्रसन्न होजावें। मेरे प्रियमित्र! उनके पास जाओ और इस विषय में कहो, क्योंकि परमेश्वर की शपथ, मैं इस बात को नहीं जानती हूँ कि वे मुझसे क्यों रूठे हैं? मैं यही प्रार्थना करती हूँ कि, हे परमेश्वर! यदि मैंने कभी उनके प्रेम के विरुद्ध कोई भी पातक मनसा वाचा, कर्मणा किया हो या मेरी आंखों ने या मेरे कानोंने या मेरी किसी अन्य इन्द्रिय ने उनकी मूर्ति को छोड़ अन्य किसी से कभी कोई आनंद लिया हो या यदि मैंने उनको परम प्यार न किया हो या इस समय मैं परम प्यार न करती हूं या चाहे वे मुझको त्याग२ करके भिखमंगी जोगिन भी बना डालें, तब भी मैं उनको परमप्यार न करूंगी, तो मुझे स्वप्न में भी सुख न मिले। निर्दयता बहुत कुछ करसकती है। उनकी निर्दयता से तो मेरा प्राणान्त तक होसकता है, पर उससे मेरे प्रेम में कभी धब्बा नहीं लगेगा। मैं "रंडी" शब्द उच्चारण नहीं कर सकती हूं। मुझे उससे अत्यन्त घृणा है। इस समय वह शब्द मेरे मुँह से निकल पड़ा है। सारे संसार के वैभव और रमणीय दृश्य

भी मुझे कभी ऐसा काम करने के लिये नहीं लुभा सकते जिससे मुझे एसी उपाधि मिले।

यागो-मैं आपसे प्रार्थना करताहूँ कि आप संतोष रखिये, यह उनके मनकी तरंग मात्र है। वे किसी राजकीय धन्धे से चिढ़गये हैं और इस कारण आपसे रार मचा रहे हैं।

देशदामिनी-कोई और बात तो न हो?

यागो—नहीं २ ऐसीही बात है मुझे इसका पूर्ण निश्चय है। (तुरहियें बजती हैं।) देखिये, ये बादित्र भोजन के लिये आह्वान करते हैं। वेनिसके राजदूत भोजन के लिये ठहरेहुए हैं। भीतर जाइये, रोइये मत, सब बात ठीक होजायगी।

(देशदामिनी और यमिलिया जाती हैं)

(रौदरिगोका प्रवेश।)

कहो रौदरिगो अच्छे हो?

रौदरिगो-मैं समझता हूँ कि तू मेरे साथ न्याययुक्त व्यवहार नहीं कर रहा है।

यागो-तुमने मेरा ऐसा कौनसा प्रतिकूल आचरण पायाहै?

रौदरिगो—किसी न किसी मिससे तू मुझे दिन प्रतिदिन टालता रहता है। तुझसे मेरी आशा पूर्ण होनेका भरोसा तो एक ओर रहा मुझे तो अब ऐसा विदित होताहै कि तू मेरी इच्छा पूर्ण होनेका कोई अवसर भी मेरे हाथ नहीं लगने देताहै। तुझसे अपनी आशा पूर्ण होने का मुझे कुछभी भरोसा नहीं है। अब यह मुझे असह्य होगयाहै और जो कुछ कि अबतक मेरे ऊपर अपनी मूर्खता से बीत चुकी है उसके विषयमें भी मैं अब चुप नहीं रहूँगा।

यागो—रौदरिगो! क्या तुम मेरीभी सुनोगे या अपनी ही कहते जाओगे?

रौदरिगो—ईश्वरकी शपथ, सुनते २ मेरे कान दुखनेलगे हैं। तुमजो कहतेहो उसे कभी नहीं करते हो।

यागो—तुम मुझपर ऐसा दोषारोपण करके बड़ा अन्याय करते हो।

रौदरिगो-यह सच्चा दोषारोपण है। मैंने अपना सब रुपया फूँक दिया, जितने गहने कि देशदामिनीके लिये तुमने मुझसे माँगे हैं उनसे तो एक भक्तन का भी सत डिगजाता। तुमने मुझसे कहा था कि उसने उनको स्वीकार करलिया है और मुझे यह आशा और भरोसा दियाथा कि वह तुरन्त मुझसे मिलेगी और मेरी अभिलाषा पूर्ण करेगी, पर यह कुछ भी न हुआ।

यागो-अरे जाओ भी, अपने मन को मत भरमाओ।

रौदरिगो-अरे जाओ भी मन को मत भरमाओ-यह क्या बात हुई? मैं ऐसी बातोंसे अब नहीं टलूँगा, यह कुछ अच्छी बात नहीं है। मैं अपने सिर की शपथ खाताहूँ, यह बड़ी नीचता है और मुझे सूझने लगाहै कि मेरे साथ ठगपना कियागया है।

यागो-अच्छा ऐसाही सही।

रौदरिगो-हाँ, मैं तुमसे कहताहूँ कि यह कुछ अच्छीबात नहीं है। मैं देशदामिनीसे सब भेद खोलदूँगा। यदि उसने मेरे गहने वापस करदिये तो भली बात है। मैं इस धुनको छोड़दूँगा और अपनी अनुचित याचना के लिये पश्चात्ताप करूँगा। यदि उसने मेरे गहने वापिस नहीं किये तो इसबातका निश्चय समझो कि मैं इसका निबटारा तुमसे करूँगा।

यागो-तुम्हें जो कुछ कहना था वह अब तो कह चुके।

रौदरिगो-हाँ, मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही है कि जिसे पूरा करनेका मैंने दृढ़ संकल्प न कियाहो।

यागो–ठीकहै; मुझे अब विदित होताहै कि तुममें कुछ पौरुष है, और इसी घड़ीसे मेरी सम्मति तुम्हारे विषयमें पहिलेकी अपेक्षा अधिकतर अच्छी होगई है। रौदरिगो,आओ हाथ मिलाओ।तुम्हारा उलाहना मेरे विरुद्ध बहुत ठीकहै,पर फिरभी मैं इसबातका अनुरोध करताहूँ कि मैंने तुम्हारे साथ इस विषयमें बहुत सीधा और सच्चा बर्ताव किया है।

रौदरिगो-ऐसा तो दिखलाई नहीं पड़ा।

यागो–मैं भी इसबातको स्वीकार करताहूँ कि ऐसा सचमुच दिखलाई नहीं पड़ाहै और तुम्हारा जो सन्देह है वह बुद्धि और विचारसे शून्य नहीं है। पर, रौदरिगो यदि तुझमें सचमुच कुछ है, जिसके होनेका कि अब मैं पहिलेकी अपेक्षा युक्तिपूर्वक अधिकतर विश्वास करताहूँ अर्थात् संकल्प, साहस और पराक्रम, तो आज रातको उसको दिखलादे फिर यदि कलरातको तू देशदामिनीका भोग नहीं करेगा तो चाहे विश्वासघात करके मुझे इस संसार से बिदा करदेना और मेरा सत्यानाश करनेका षड्यंत्र रच लेना।

रौदरिगो–अच्छा वह क्या बात है? क्या वह युक्तिसंयुक्त और करने योग्य है?

यागो–भइया, वेनिससे एक विशेष आज्ञापत्र आया है जिससे केसियो ओथेलो के पदपर नियुक्त कियागया है।

रौदरिगो–क्या यह सच्ची बातहै? क्यों? तबतो ओथैलो और देशदामिनी दोनों वेनिसको फिर वापिस होजायँगे।

यागो–नहींतो, वह मौरिटेनिया को जाता है यदि उसको किसी घटनासे यहां रुकना न पड़े तो वह और सुन्दरी देशदामिनी भी उसीके साथ जाती है। इसको रोकनेके लिये केसियोको हटा देने के अतिरिक्त और कोई बात कार्य्यसाधक नहीं होसकती।

रौदरिगो—तुम्हारा केसियो को हटादेनेसे क्या अभिप्राय है ?

यागो—क्यों ? उसे ओथेलो के पद के लिये अयोग्य बनादेना अर्थात् उसका सिर तोड़ डालना ।

रौदरिगो-और तुम यह काम मुझसे कराना चाहते हो ?

यागो-हां, यदि तुम में अपने लाभका और अपने स्वत्व प्राप्त करने का पुरुषार्थ हो । आजरात वह एक पातर के साथ खाना खायगा और मैं उसके यहां जाऊँगा । उसको अभी अपने परम सौभाग्य अर्थात् ओथेलो के पदपर स्थित होने की सूचना नहीं मिली है । यदि तुम इसबातकी ताक लगाये रहोगे कि वह वहांसे किससमय निकलता है, मैं ऐसी युक्ति निकालूंगा कि वह वहां से ११ और १ बजे रात के बीच निकलेगा तो वह सुगमता से तुम्हारे हाथ आजायगा । मैं तुम्हारी सहायता करने के लिये समीप ही रहूंगा और यदि तुम उसके आगेसे होओगे तो मैं पीछे से रहूँगा । चलो, इसपर आश्चर्य मत करो, मेरे साथ होजाओ । मैं उसके मार डालने की आवश्यकता तुमको भली भाँति ऐसी दरशा दूँगा कि तुम इसकामको करने के लिये अपनेको बाध्य समझोगे । अब खाने का समय समीप आपहुँचा है, और रात बीती जाती है, चलो इस कामको कर डालें ।

रौदरिगो-मैं अपने समाधान के लिये इस विषय में तुम से और भी प्रमाण माँगूंगा ।

यागो-और सुनकर तुम्हारी संशय निवृत्ति होजायगी ।

(जाते हैं ।)

तीसरा दृश्य । दुर्गमें दूसरी कोठरी ।

(ओथेलो, लोदोविको, देशदामिनी, यमिलिया का अनुचरवर्ग के साथ प्रवेश ।)

लोदोविको-महाशय, मैं आपसे प्रार्थना करताहूँ कि अब इस विषय पर सोच न कीजिये ।

ओथेलो–आह! आप मुझे क्षमाकरेंगे, मुझे टहलनेसे लाभ होगा।

लोदोविको—महाशया प्रणाम, मैं आप श्रीमतीका धन्यवाद करता हूँ।

देशदामिनी–आप श्रीमान्‌का आगमन बड़ा मंगलमय हो।

ओथेलो—क्या महाशय आप टहलेंगे? हे देशदामिनी!

देशदामिनी–हाँ प्राणनाथ!

ओथेलो—तुम इसीघड़ी सोनेको चली जाओ मैं अभी वापिस आऊँगा—अपनी सहेली को विदा करदेना, देखना ठीक ऐसाहीहो।

देशदामिनी—प्राणनाथ मैं ऐसाही करूँगी।

(ओथेलो, लोदोविको और अनुचरवर्ग का गमन)

यमिलिया–कहिये अब कैसा हालचाल है? वे अब पहिले से अधिक नम्र दिखाई देते हैं।

देशदामिनी—उन्होंने मुझसे कहाहै कि वे अभी वापिस आयेंगे और मुझे आज्ञा दी है कि सोने को चलीजाओ और तुम्हें बिदाकर देनेको भी कहा है।

यमिलिया—ऐसा कहा है कि मुझे विदा करदेना?

देशदामिनी–हाँ, उन्होंने ऐसाही कहाहै। सो प्यारी यमिलिया मुझे मेरे सोनेके कपडे देदे और प्रणाम, हमें अब उन्हें अप्रसन्न नहीं करना चाहिये।

यमिलिया–मेरी समझ से तो आप उसका मुँह न देखें तो अच्छा हो।

देशदामिनी—मैं ऐसा कदापि नहीं करसकती, मेरा उनके लिये इतना प्रेमहै कि उनकी निठुराई, उनकी घुड़की और धमकी में भी मुझे अनुग्रह और अनुकम्पा विदित होती है। मैं तुझसे प्रार्थना करती हूँ कि मेरे कपड़े उतार दे।

यमिलिया–मैंने आपके व्याह के दिन की चादरें भी बिस्तर में रखदी हैं जिनके रखने के लिये आपने कहा था।

देशदामिनी–इसकी कुछ चिंता नहीं है। हे परमपिता हमारे मन कैसे चंचल होते हैं! यदि मैं तुझसे पहिले मरजाऊँ तो मुझे इन्हीं चादरों में से एक में लपेट देना।

यमिलिया–चुप भी रहिये, ऐसी बातें न करिये।

देशदामिनी—मेरी मां की एक दासी थी उसका नाम बरबरा था। वह किसी के प्रेम में आसक्त थी। और जिसके प्रेम में वह आसक्त थी वह सिड़ी होगया और उसने उसको त्याग दिया। वह एक "प्रिय परित्याग"की रागिनी गाती थी,वह एक पुरानी रागिनी थी, उससे उसकी अवस्था ठीक प्रकट होती थी। वह उसको गाते २ मरगई। मेरे मन में आज वही रागिनी घूमरही है। मैं उसी की भांति अपने सिरको एक ओर लटका कर, उसके गाये विना नहीं रह सकती हूँ। मैं तुझसे प्रार्थना करती हूँ शीघ्रता कर।

यमिलिया—अच्छा,क्या मैं तुम्हारा रातके पहिनने का लहँगा लेती आऊँ?

देशदामिनी—नहीं मेरे कपड़े यहींपर खोलदे। यह लोदोविको बड़ा सुन्दर पुरुष है।

यमिलिया–वह अत्यन्त मनोहर पुरुष है।

देशदामिनी—उसकी बोलचाल अच्छी है।

यमिलिया—वेनिसमें मेरी समझ से कोईसी कुमारी उसके निचले होटकी चुम्बन प्राप्ति के अर्थ पैलिस टाइनकी × यात्रा को नंगे पाँव दौड़ जाय।

देशदामिनी— (गाती है)

×पैलिस टाइन=ईसाइयोंका तीर्थस्थान, जहां ईसामसीह की जन्मभूमि है।

सब मिल गाओ पिय परित्याग।
केमद्रुम के नीचे बैठी,
आह वियोगिन भरती थी,
सिर घुटने पर रखकर अपना,
हाथ हिये पर धरती थी।
सब मिल गाओ पिय परित्याग॥
निर्मल नदियां ढिग वह उसके,
विलाप में स्वर देती थी,
लोनी आँसूधारा वह कर,
पिघला पत्थर देती थीं,
सबमिल गाओ पियपरित्याग।

मैं तुझसे प्रार्थना करती हूँ शीघ्रता कर वे अभी आपहुँचेंगे।

(गाती है)

सब मिल गाओ मेरा होवे,
त्याग पिया से लगे न वार।
कोई उनपर दोष न लाओ,
मुझे अवज्ञा है स्वीकार।

नहीं यह दूसरा पद नहीं है—सुनो तो वह कौन खटखटा रहा है?

यमिलिया—वह पवन है।

देशदामिनी—(गाती है)

मैं बोली जब 'पिय तुम खोटे',
मुझ से बोले वे बसवार।
सब मिलगाओ पियपरित्याग,
'यदि मैं रमता बहुत रमणियाँ
तुम बहुजन संग करो विहार'

अच्छा अब तू चलीजा। प्रणाम! मेरी आँखें खुजला रहीं हैं, क्या इससे रोने की संभावना होती है?

यमिलिया–इससे कुछ भी संभावना नहीं होती है।

देशदामिनी—लोगों को मैंने ऐसा कहते सुना है। हाय! ऐसे भी पुरुष होते हैं। हाय! ऐसे भी पुरुष होते हैं। यमिलिया, क्या तू सचमुच ऐसा विचार करती है, बोल यमिलिया, क्या ऐसी भी स्त्रियां होती हैं, जो अपने पतियों का ऐसी अनुचित रीति से अनादर करती हैं ?

यमिलिया–इस में सन्देह नहीं है कि कुछ ऐसी होती हैं।

देशदामिनी—यदि सारी संसार की संपत्ति भी तुझको कोई देनी करे तो क्या तू ऐसा आचरण करेगी।

यमिलिया–क्यों, क्या आप नहीं करेंगी।

देशदामिनी—इस स्वर्गीय ज्योति की शपथ, मैं ऐसा कदापि नहीं करूंगी।

यमिलिया—मैं भी खुले ख़ज़ाने ऐसा काम कभी नहीं करूंगी, छिपकर चाहे भले ही ऐसा करलूँ।

देशदामिनी—यदि सारी संसार की संपत्ति भी तुझको कोई देनी करे तो क्या तू ऐसा आचरण करेगी।

यमिलिया—संसार तो बड़ी भारी वस्तु है, ऐसे छोटे कुकर्म के लिये वह बड़ा मोल है।

देशदामिनी—सचमुच मैं समझती हूँ तू कदापि ऐसा न करेगी।

यमिलिया—सच, मैं समझती हूँ मैं अवश्य ऐसा करूँगी और जब मैं ऐसा कर चुकूँगी तो उसका प्रायश्चित्त यह होगा कि उससे मेरा पति जगत् का सम्राट् बन जायेगा। मरियम की शपथ, मैं सुहाग मुद्रिका के लिये, अथवा मलमल के थानों के लिये या लहंगों या अङ्गियों के लिये या ओढनियों के लिये या किसी क्षुद्र उपहार के लिये ऐसा कभी नहीं करूँगी, किन्तु यदि ऐसा करूँगी तो संसार भरकी

संपत्ति के लिये, यदि अपने पतिके भड़ुआ*बनाने से वह संसारका अधिपति होजाय तो कौनसी ऐसी स्त्री है जो ऐसा काम नहीं करेगी। मैं तो निःशङ्क होकर इसके लिये चान्द्रायणकी प्रथा चला डालूँ।

देशदामिनी–मुझे धिक्कार है, यदि मैं सारी संसार की प्राप्ति के हेतु भी ऐसा कुकर्म्म करूँ।

यमिलिया—क्यों, यह तो केवल संसार की दृष्टि में कुकर्म्म है और जब ऐसे काम के लिये आपको सारा संसार मिल जावे, तो वह कुकर्म्म आपकही संसार में तो होगा और आप उसको तुरन्त ठीक ठाक कर सकती हैं।

देशदामिनी–मेरे विचार में तो कहीं कोई ऐसी स्त्री नहीं होगी।

यमिलिया–हां, ऐसी बीबियों हैं, प्रत्युत इनसे कितनीही अधिक हैं जो इस संसार की प्रभुताकी प्राप्ति केहेतु इतना व्यभिचार करनेसे भी नहीं चूकेंगी कि जिससे सारे जगतमें जारपुत्र ही जारपुत्र भर जायँ। मेरी समझ में तो स्त्रियाँ अपने पतियों के दोषों से व्यभिचारिणी होती हैं। उदाहरण के लिये देखिये, कहीं तो वे अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं करते हैं, और कहीं अपनी धनसंपत्ति पर त्रियाओं पर न्योछावर करदेते हैं। या कहीं हमारे विषय में निष्कारण सन्देह में पड़कर हमें बंधन में डाल देते हैं। या कहीं वे हमको मारते पीटते हैं या द्वेष से जो जेबख़र्च हमको देते हैं, उसको कम करदेते हैं। क्यों क्या हममें क्रोध और द्रोह नहीं है ? और हां यद्यपि हमारा कोमल स्वभाव होता है तथापि बदला लेने की इच्छा भी तो होती ही है। अब जो लोग भर्त्ता हैं, उनको यह समझ लेना चाहिये कि उनके समान उनकी स्त्रियों में भी अनुभूतियां होती हैं। वे अपने पतियों की भांति देख सकतीं, सूँघ सकतीं और

---

* भड़ुआ=जारिणीपति।

चख सकती हैं, और मीठे तथा खट्टे का स्वाद जान÷सकती हैं। जब कि वे अपनी स्त्रियों को छोड़ कर औरों से प्रेम करने लगते हैं तो कैसा अंधा धुंध करते हैं? क्या यह खेल है? मैं समझती हूं कि वे हम को खेल ही समझते हैं। क्या कामेच्छा से इसकी उत्पत्ति नहीं होती है? मैं समझती हूं होती है। क्या यह चंचलता नहीं है? जिससे ऐसी बड़ी चूक होती है। अवश्य ऐसी भी बात है। तो फिर क्या हम में पुरुषों के समान कामेच्छा, क्रीड़ा करनेकी रुचि और चंचलता नहीं होती है? सुतरां उनको हमारे साथ अच्छा बर्त्ताव रखना उचित है। नहीं तो उनको भलीभांति जान लेना चाहिये कि उनके ही पापाचारों से हमें पाप करने की शिक्षा मिलती है।

देशदामिनी—अच्छा प्रणाम, प्रणाम, परमेश्वर करे कि मुझसे बुराई के बदले बुराई न होने पावे, वरन यदि मेरे साथ अनुचित बर्त्ताव किया जावे तो मैं उससे अपनी त्रुटियां सुधारनी सीखूं।

(यमिलिया जाती है।)

पाँचवां अंक।

पहिला दृश्य। साइप्रस—एकगली।

(यागो और रौदरिगो का प्रवेश)।

यागो—यहां इस मकान की मोड़ के पीछे खड़ा रह, वह अभी आपहुँचेगा। अपनी बर्छी को नंगी करदे और उससे उसके गहिरा घाव करदेना। शीघ्रता कर, शीघ्रता कर, किसी बात का भय मत मान, मैं तेरी बगल में खड़ा रहूँगा। बस इससे हमारा वार है या पार है, इस बात का ध्यान रख और अपने संकल्प में पूर्णरूप से दृढ़ रह।

÷ भले बुरे का विचार करसकती हैं। दूसरों की स्त्रियां।

रौदरिगो-तू पास ही रहना, कदाचित् मैं चूक जाऊँ।

यागो-मैं पास ही हूँ, वीर बनकर डटा रह (हटजाता है।)

रौदरिगो-सब बातों पर विचार करने से यह काम मेरे लिये बड़े महत्व का नहीं है, तो भी उसने इसके लिये संतोषजनक कारण बतलाये हैं। इससे केवल एक ही मनुष्य तो संसार में कम होगा। बस मेरी तलवार आगे बढ़ी नहीं कि वह पंचत्वको प्राप्त हुआ।

यागो-(आपही आप) मैंने इस नवयुवा गुंडे को खूबही भड़का दिया है और यह क्रोध में भरा हुआ है। अब चाहे यह केसियो का वधकरे या केसियो इसका या इनमें से एक दूसरे का काम कर डाले, प्रत्येक बात में मेरा लाभ ही है। यदि रौदरिगो जीवित रहता है तो वह मुझ से उन बहुमूल्य सुवर्ण के आभूषणों और मणियों को वापिस मांगेगा जो मैंने देशदामिनी को भेंट देने का मिस करके उससे ठगे हैं। ऐसा कदापि नहीं होना चाहिये। यदि केसियो जीवित रहता है तो उसके चरित्र में ऐसा उत्कर्ष है कि उसके सामने मैं महान् नीच दिखाई पड़ता हूँ। और इसके अतिरिक्त यह भी शंका है कि मूर उससे मेरा सब भेद खोल डाले। इसभांति मैं बड़े असमंजस में हूँ। नहीं ? उसका मरजाना अतिआवश्यक है, परन्तु मुझे अब चुप रहना चाहिये क्योंकि उसके आने की आहट सुनाई देरही है।

(केसियो का प्रवेश।)

रौदरिगो-मैं उसकी चालढाल जानता हूँ, यह वही है दुष्ट तेरी मृत्यु आगई है। (झपटता है और केसियो पर प्रहार करता है।)

केसियो-इस चोटसे मेरा काम पूराही होजाता, पर इस बातको तू नहीं जानता है कि मेरा कोट कैसा अभेद्य है, मैं तेरी खूबखबर लूँगा (अपनी तलवार निकालता है और रौदरिगो पर प्रहारकरता है)

रौदरिगो-हाय ! म मरा।

(यागो—अपने स्थान से झपट कर निकलता है और केसियोकी टाँग को पीछे से काटता है और चला जाता है)

केसियो-मैं जीवन भरके लिये लंगड़ा होगया हूँ। अरे भाई! कोई सहायता करो खून होगया है ! खूनहोगया है ! (गिरपड़ता है)

(कुछ दूरी पर ओथेलोका प्रवेश)

ओथेलो—यह केसियो की वाचा है, यागो ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करदी है।

रौदरिगो—हाय मैं कैसा दुरात्मा हूँ !

ओथेलो—हां ठीक है, यागोने जो केसियो के वध करने का प्रण किया था, उसे पूरा कर दिया है।

केसियो—हाय ! कोई सहायता करो ! अरे कोई उजियाला करो! और शस्त्र-चिकित्सक को बुलाओ।

ओथेलो—हां वही है। धन्यरे वीर, सच्चरित्र और न्यायपरायण यागो! तुझे अपने मित्र से किसी के दुष्टाचरण करने का कैसा महान् ज्ञान है! तू मेरे लिये आदर्श है। अच्छा कुलटा! तेरा प्रेमी मृतक पड़ा है और अब तेरी दुर्घड़ी भी समीप है। रंडी मैं आ पहुँचा ! अरे मन ! उसकी मोहनी चितवन को भुलादे, तेरी आँखों में पड़दा पड़गया है तेरी शय्या जो जारकर्म्म से लाञ्छित होगई है, जारिणी जैसी कि तू है, तेरे ही जारकर्म्म दूषितरक्त से रंगी जावेगी। (जाता है।)

(लोदोविको और ग्रत्यानो का दूरी पर प्रवेश)

केसियो—हाय ! क्या यहां कोई पहरेवाला नहीं है ? क्या यहाँ कोई आता जाता नहीं है ? अरे खून होगया है ! खून होगया है !

ग्रत्यानो—यह कोई दुर्घटना होगई है। यह चिल्लाहट बड़ी भयानक है।

केसियो—अरे सहायता करो।

लोदोविको–सुनो तो !

रौदरिगो–अरे नराधम चांडाल !

लोदोविको–दो या तीन कराह रहे हैं। यह रात्रि बड़ी अन्धकारमय है ! कौन जानता है कि ये लोग किसी व्यक्तिको फँसाने के लिए ऐसे रूप भर रहे हों। हमको जबतक कि और मनुष्य सहायता के लिए न आवें उस स्थान को जहांसे यह चिल्लाहट आरही है नहीं जाना चाहिये।

रौदरिगो-तो क्या कोई नहीं आवेगा ? तब तो मैं रक्तप्रवाह से मर जाऊँगा।

लोदोविको–सुनो तो !

(यागोका उजियाले के साथ पुनः प्रवेश।)

ग्रत्यानो—यह कोई कुर्ता पहिने, उजियाला लिए हुए और अस्त्रों से सज्जित होकर आरहा है।

यागो—वहां कौन है ? यह गुल गपाड़ा कौन मचा रहा है ? और खून, खून कौन चिल्लारहा है ?

लोदोविको—हम नहीं जानते।

यागो—क्या आपने कोई चिल्लाहट नहीं सुनी है ?

केसियो—अरे यहां आओ, यहाँ आओ, परमेश्वर के लिए मेरी सहायता करो।

ग्रत्यानो—मैं समझता हूँ कि यह ओथेलो का पताकावाहक है।

लोदोविको—हाँ वही है, वह एक बड़ा साहसी पुरुष है।

यागो—तुमलोग यहाँ कौनहो जो ऐसे महादुःखसे चिल्लारहे हो

केसियो—यागो, हाय ! मैं सदाके लिये लंगड़ा होगयाहूँ, दुष्टों ने मेरा काम कर डाला है, मेरी कुछ सहायता करो।

यागो—हैं क्या यह सहकारी सेनापति हैं। यह किन दुष्टों की करतून है ?

केसियो—मैं समझता हूँ कि उनमें से एक इधरही पड़ा है जो भाग नहीं सकता।

यागो-अरे विश्वासघाती दुर्जनो !(लोदोविको, और ग्रत्यानोसे) तुमलोग यहाँ कौनहो ? आओ कुछ सहायता करो।

रौदरिगो—अरे मेरी भी सहायता करो।

यागो—अरे खूनी नीच ! दुष्टात्मा ! (रौदरिगोको कोंचता है।)

रौदरिगो—अरे अधम यागो ! अरे निर्दय कुत्ते !

यागो—लोगोंका अँधियारेमें खून करना ! ये ऐसे हत्यारे चोर कहाँके होंगे ? यह नगर कैसा सुनसान है ! अरे खून होगया है ! खून होगया है ! तुम कौनहो ? यहाँ भले भाव से आयेहो या बुरे भावसे ?

लोदोविको—जब कि तुम हमारा व्यवहार देखोगे तब तुमको विदित होजायगा कि हम कौन हैं ?

यागो-वो, आप श्रीमान् लोदोविको हैं।

लोदोविको-हाँ महाशय मैं वही हूँ।

यागो-आप मुझे क्षमा करेंगे मैं आपको हिचान नहीं सका। देखिये, यहाँ केसियोको दुष्टोंने कैसी चोट पहुँचाई है।

ग्रत्यानो-क्या यह केसियो है ?

यागो—कहो भाई तुम्हारी कैसी दशाहै ?

केसियो-मेरी टाँगकी दो टाँग होगई हैं।

यागो-मरियम की शपथ, परमेश्वर ऐसा न करे ! महाशयो, आप इस उजियाले को थामे रहिये, मैं घावको अपना कुर्ता फाड़कर बांधूँगा।

(वियंका का प्रवेश।)

वियंका-अरे क्या गोलमाल है?वह कौन है जो चिल्ला रहा था?

यागो-वह कौन है जो चिल्ला रहा है ?

वियंका—हाय ! मेरे प्यारे केसियो ! मेरे मनोहर केसियो ! हे केसियो ! हे केसियो ! केसियो !

यागो—हे नामी गणिका! केसियो,क्या तुम उनलोगों के विषयमें कुछ सन्देह करसकते हो जिन्होंने इसभांति तुमपर आघात किया है?

केसियो—नहीं ।

अत्यानो—मुझे शोक है कि आप मुझे ऐसी दशामें मिले हैं-मैं आपकी खोजमें जा रहा था ।

यागो—मुझे अपनी मोजा बांधने की पट्टी इस घावको बांधने के लिये देदीजिये । वह ठीक होगी । अरे कोई डोली लाओ कि जिसमें यह सुगमता से यहांसे लेजाया जासके ।

वियंका—हाय हाय ! उसको मूर्च्छा आती है । हे केसियो ! केसियो ! केसियो !

यागो—अहो महाशयगण ! मैं संदेह करता हूँ कि इस छिनाल का इस अपराधसे कुछ संबन्ध है । प्यारे केसियो, कुछ देर धीरज धरो (लोदोविकोसे) इधर आइये, मुझे उजियाला दीजिये, देखिये हम इस व्यक्ति का मुख पहचान सकते हैं या नहीं ? हाय हाय यहतो मेरा मित्र और प्यारा स्वदेशी रौदरिगोला दीख पड़ता है ? क्या यह रौदरिगो नहीं है ? हाँ, हाँ, निश्चय वही है । हाय ! परमेश्वर रौदरिगो की दुर्गति !

अत्यानो—क्या यह वेनिसवासी रौदरिगो है ?

यागो—हाँ महाशय वही है । क्या आप इसको जानते थे ?

अत्यानो —जानते थे कैसा ? मैं इसको भलीभांति जानता था ।

यागो—अत्यानो महाशय, मैं आपसे क्षमा प्रार्थना करता हूँ । इन भयंकर घटनाओंसे मैं इतना विचलित होगया था कि मैं आपको पहिचान नहीं सका और इसलिये क्षमायोग्य हूँ ।

अत्यानो—मैं आपसे मिलने से प्रसन्न हूँ ।

यागो-केसियो, अबतुम कैसे हो? अरे डोली लाओ डोली लाओ!

अत्यानो—क्या यह रौदरिगो है!

यागो—हाँ वही है, वही है—

(एकडोली लाई जाती है।)

वाह, अच्छाहुआ डोली आगई है, कोई सज्जन इसको साव-धानीसे यहाँ से लेजाओ। मैं सेनापति के शस्त्र-चिकित्सक को बुलाने को जाताहूँ। (विंयकासे) वाईजी! आप क्लेश न उठावें।

केसियो-यह मनुष्य जो यहाँ मरा पड़ा है मेरा प्यारा मित्र था। तुम्हारे और उसके बीच क्या शत्रुता थी?

केसियो—कुछ भी नहीं, मैं उसको जानताभी नहीं हूँ।

यागो—विंयकासे) क्यों वाईजी! तुम पीली क्यों पड़गई हो उसपर वायु मत लगने दो।

(केसियो और रौदरिगो लेजाये जाते हैं)

सज्जन महाशयो, आपलोग थोड़ा ठहरें। (विंयकासे) वाईजी! तुम पीली क्यों दिखलाई पड़ती हो? (अत्यानो-लोदोविको से) क्या आप उसकी आँखोंकी विकरालता को निहार रहे हैं? (विंयकासे) चाहे तुम विना एक शब्द कहे इसभाँति ताकती रहो। किन्तु हमपर सबभेद शीघ्रही प्रकट होजायगा। (लोदोविको अत्यानोसे) उसको भलीभाँति देखियेगा, मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि आप उसका निरीक्षण कीजियगा, महाशय आपने देखाहै उसके मुँहकी आकृति से उसका पाप स्पष्ट दिखलाई पड़ता है, उसके बोलनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है।

(यमिलिया का प्रवेश)

यमिलिया—हाय हाय! क्या बात हुई है! स्वामिन्!

यागो—केसियो पर रातकी अँधियारी में रौदरिगो और कुछ

अन्य लोगोंने जो चंपत होगये हैं आक्रमण किया है वह अधमरा पड़ा है और रौदरिगो पंचत्वको प्राप्त होगया है।

यमिलिया- हाय हाय ! वह एक भद्र पुरुष था। सुजन केसियो के लिए मुझे शोक होता है !

यागो-यह वेश्याओं की संगतिका फल है। यमिलिया, मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ तू जा और इस बातका अनुसंधान कर कि केसियो ने आज रात भोजन कहां किया है। (वियङ्का से) यह क्या ! तुम इस बातपर क्यों कांप उठी हो ?

वियंका-उसने मेरे घरपर भोजन किया है, पर मैं इस बात से नहीं कांपती हूँ।

यागो-यह बात क्या हुई है ? तो मैं तुझपर अभिशाप लगाता हूँ। मेरे साथ चल।

यमिलिया-धिक् धिक् रंडी ! तुझपर धिक्कार है !

वियंका-मैं रंडी नहीं हूँ, और मेरा आचरण ऐसा ही शुद्ध है जैसाकि तुम्हारा है, जो मुझपर ऐसा दोषारोपण करती हो।

यमिलिया-जैसाकि मेरा आचरण है? छिः! तुझपर धिक्कारहै।

यागो-(लोदोविको अत्यानो से) दयाशील सज्जनों, चलें और देखें केसियो पर पट्टी बांधी गई है या नहीं ? (वियंका से) आओ बाईजी, तुमको तो हमसे कुछ और ही कहानी कहनी है। यमिलिया ! तुम दुर्ग को दौड़कर जाओ और जो कुछ हुआ है इसकी सूचना मेरे स्वामी और स्वामिनी को देदो। (लोदोविको अत्यानो से) क्या आप आगे पधारेंगे ? (अपने आप) आज रातको यातो मेरी पूर्ण कार्य्यसिद्धि होती है या सत्यानाश लगताहै।

(सब जाते हैं)

दूसरा–दृश्य ।

एक शयन स्थान ।

देशदामिनी पलंग पर सोरही है और दीपक जल रहा है ।

(ओथेलो का प्रवेश)

ओथेलो–हे मेरी आत्मा ! क्यों खेद करती है ? यही कारण है यही कारण है । हे पुण्य नक्षत्रमंडली मैं उस पापमय कारण का नाम तुमको नहीं बतलाना चाहता, यही कारण है, परन्तु मैं उसका शोणितपात नहीं करूँगा । और न मैं उसकी हिम से अधिकतर गोरी और स्मारक चिन्होपयोगी मणिशिला से अधिकतर कोमल देह को अस्त्रचिन्हित ही करूँगा । तौभी उसका मरना ही अभीष्ट है, नहींतो वह और लोगों को भी अपने जालमें फँसावेगी । अच्छा तो पहिले दीपनिर्वाण करदेना चाहिए, तब उसके जीवनरूपी दीप का निर्वाण करना ठीक होगा । हे दीपकज्योति ! यदि मैं तुझको बुझा दूँ तो जब चाहूँ इसका पश्चात्ताप होने पर तुझ को फिर तेरी पहिली ज्योति देसकता हूँ—पर हे सौन्दर्य्यमयी प्रकृति की उत्तमोत्तम आदर्श आकृति ! यदि मैं तेरी ज्योति बुझादूँ तो वह संजीवनी बूटी कहां है × जो मैं तेरी बुझी हुई ज्योति को फिर प्रज्वलित कर सकूँ ? जब मैं तेरे शरीररूपी वृक्षसे जीवरूपी गुलाब को तोड़ डालूँगा तो फिर मैं उसमें प्राणसंचार नहीं करसकता । वह अवश्य मुरझा जायगा । जबतक वह तेरे देहरूपी वृक्षमें लगा है तबतक ही मैं उसकी सुगंधि लेलूँ । (देशदामिनी को चूमता है ।) अहा ! कैसा सुधारस भरा है, जो निठुर न्याय को भी अपने पथसे डिगा देता है ! अच्छा एकवार और एकवार और (दो वार चूमता है ।) यद्यपि न्याय मुझे तेरा वध करने के लिये विवश करता है

× मूल में प्रोमिथियन हीट है देवताओं की अग्नि प्रोमिथियन ने चुराली थी । जिससे मृतप्राणी जीवित होजाते थे ।

तौभी यदि तू मरजाने पर भी ऐसी ही सुन्दर दिखलाई दी तो, मैं फिरभी तुझको प्यारी ही मानूँगा । एकवार और, (चूमता है) । इतनी मधुर कभी ऐसी प्राणघातक नहीं निकली। मैं तेरे भाग्य को देखकर रोने को विवश होता हूँ। परन्तु इस अश्रुधारा से मेरा हृदय नहीं पसीजता हैं. जिससे कि मेरा तुझे मारडालनेका संकल्प बदल जाय । अरे वह जाग उठी है ।

देशदामिनी–कौन है ? स्वामिन् आप हैं ?

ओथेलो—हां देशदामिनी मैं हूँ ।

देशदामिनी—स्वामिन् ! क्या आप सोयेंगे ।

ओथेलो-देशदामिनी क्या तूने रातकी प्रार्थना करली है ?

देशदामिनी-हां स्वामिन् ! करली है ।

ओथेलो—यदि तुमने कोई पाप किया हो और करुणामय ईश्वर से उसकी क्षमा प्रार्थना नहीं की हो तो अभी करलो, फिर अवसर नहीं मिलेगा ।

देशदामिनी—हाय हाय ! प्राणनाथ आप यह क्या कहरहे हैं ? मेरी समझ में कुछ नहीं आता है ।

ओथेलो-प्रश्न मत करो, किन्तु ईश्वर से क्षमा प्रार्थना करलो और इसमें देरी मत करो । तबतक मैं अलग हुए जाता हूँ । मैं तेरे पापी प्राणको जो स्वर्ग के लिये तैयार नहीं है नहीं निकालूँगा । परमेश्वर न करै कि मेरे हाथसे तेरी आत्माका नाश हो ।

देशदामिनी—आपतो मेरे बध करने की सी बात कहते हैं ?

ओथेलो-हां यही बात है ।

देशदामिनी—तो फिर परमेश्वर मुझपर करुणा करें ।

ओथेलो—मैं भी अन्तःकरणसे तथास्तु कहता हूँ।

देशदामिनी—जब आप ऐसा कहते हैं तो मुझको आशा है कि आप मेरी हत्या नहीं करेंगे ।

ओथेलो-हँ हँ।

देशदामिनी-तोभी मुझे आपको देखकर डर लगरहा है,क्योंकि जब आपकी आंखें घूमती हैं तब आप प्रलय कर बैठते हैं। मैं भयभीत क्यों होरही हूँ! यह मुझे नहीं जान पड़ता है, क्योंकि मैंने कोई पापकर्म्म नहीं किया है। यद्यपि मैं डरने का कोई हेतु नहीं जानती हूँ तथापि मैं समझ रही हूँ कि मैं डर रही हूँ।

ओथेलो-अपने पापकर्म्मों का विचार कर।

देशदामिनी-अंतः करण से आपको प्रेम करने के अतिरिक्त मुझे किसी और बड़े पाप करने का बोध नहीं है।

ओथेलो-हां और इसीके लिये तू मरती है।

देशदामनी-किसी को अपनेसे प्रेम करने के लिये मारना अस्वाभाविक है। हाय!हाय!आप अपना निचलाहोंट इस भांति क्यों चाब रहे हैं? किसी भयंकर मनोविकार से आपका सारा शरीर कांप रहा है। ये अशुभ लक्षण हैं, पर फिर भी मैं आशा करती हूँ और मुझे भरोसा है कि इनका लक्ष्य मैं नहीं हूँ।

ओथेलो-चुपरह और अपनी जिह्वाको सम्हाल।

देशदामिनी-मैं चुपरहूँगी,पर यह तो बतलाइये कि बात क्या है!

ओथेलो-वह अपना रूमाल जो मैंने तुझको प्रेम पुरस्कार में दिया था, उसे तूने केसियो को देदिया है।

देशदामिनी-अपने जीवन और आत्मा की शपथ मैंने नहीं दिया है! आप उसको बुलाकर पूछलें।

ओथेलो-अपनी प्रिय आत्मा के लिये चेत जा, सावधान होजा, मिथ्याभाषण न कर क्योंकि तू मृत्युशय्या पर पड़ी है।

देशदामिनी-मृत्युशय्या पर तो हूँ, परन्तु मुझे विश्वास है कि आप मुझे अभी नहीं मारेंगे।

ओथेलो-हां मैं तुझे अभी मारडालूँगा। इसलिये तू खुले मन से अपना पाप स्वीकार करले। क्योंकि सौगन्ध खाकर प्रत्येक बातसे मुकरजाने में मेरा जो पक्का निश्चय तेरे पापके विषय में होरहा है, वह न तो जायगा और न रुकेगा। मेरी आत्मा इससे अत्यन्त दुखी होरही है। तू अभी मरेगी।

देशदामिनी-तो परमेश्वर मुझपर करुणा करें।

ओथेलो—मैं एवमस्तु कहता हूँ।

देशदामिनी—और आप भी मुझपर करुणा करें। मैंने अपने जीवन भरमें कोई आपका अपराध नहीं किया है, मैंने केसियो को साधारण भांति प्यार करने के अतिरिक्त जैसे कि सजातियों को प्यार करना चाहिये ऐसा प्यार कभी नहीं किया है जो ईश्वर के समक्ष दोषयुक्त हो। उसको मैंने कभी कोई प्रेम उपहार नहीं दिया है।

ओथेलो—स्वर्गकी शपथ, मैंने अपना रूमाल उसके हाथमें देखा है। हे झूठी नारी! तूने मेरा हृदय पाषाणवत् कठोर बनादिया है और तू मेरे उस कर्म्म को जो मैंने "बलिदान" सोचा था "स्त्री-हत्या"बनाया चाहती है। मैंने अपनी आंखों से उस रूमालको उसके पास देखा है।

देशदामिनी-तो उसने उसको कहीं गिराहुआ पाया होगा मैंने उसको वह कभी नहीं दिया है। उसे यहां बुलाइये और सच्चीबात स्वीकार कराइये।

ओथेलो—उसने स्वीकार करलिया है।

देशदामिनी—क्या स्वीकार किया है? स्वामिन्!

ओथेलो—कि उसने तेरे साथ विहार किया है।

देशदामिनी—क्या पापयुक्त विहार?

ओथेलो—हां।

देशदामिनी—वह कभी ऐसा नहीं कहेगा।

ओथेलो—नहीं, उसका मुँह बंद होगया है। सत्यशील यागोने इसका प्रबन्ध करदिया है।

देशदामिनी—हाय ! तब तो मेरा यह डर सत्य होना जान पड़ता है कि आप ठगेगये हैं। क्या वह मरगया है ?

ओथेलो—यदि उसके इतने प्राण होते जितने कि उसके शरीर के बाल हैं तबभी मेरी प्रतीकाररूपी जठराग्निमें वे सब भस्म होजाते

देशदामिनी—शोक ! उसके साथ विश्वासघात कियागया है और मेरा भाग्य फूटगया है। (रोती है।)

ओथेलो—तू ऐसी ढीठ है कि मेरे सामने केसियो के वास्ते रोती है।

देशदामिनी—हे प्राणनाथ ! मेरा देशनिकाला करदीजिये पर मेरा वध न कीजिये। (उठती है।)

ओथेलो—बैठ रंडी !

देशदामिनी—अच्छा मुझे कल मारना, मुझे आजरात तो छोड़ दीजिये।

ओथेलो—नहीं यदि तू बचने का प्रयास करेगी।

देशदामिनी—केवल आधा घंटा ठहर जाइये !

ओथेलो—अब बहुत देर होगई है, दया दर्शाने की प्रार्थना करना व्यर्थ है, जबकि मैं बदला चुकाने के लिये उतारू होगया हूँ तो उसमें विलंब नहीं होना चाहिये।

देशदामिनी—इतनाही ठहर जाइये कि मैं एक प्रार्थना भर करसकूँ।

ओथेलो—अब बहुत ही ढील होगई है।(उसका गला घोंटता है।)

यमिलिया—(नेपथ्यमें) हे मेरे प्रभु ! हे मेरे प्रभु ! हे मेरे प्रभु ! आप क्या कर रहे हैं ?

ओथेलो—यह कोलाहल कौन करता है ? क्या वह अभी नहीं मरी है ? अभी पूर्णरूपसे नहीं मरी है ? इतना निठुर होनेपर भी मैं फिर दयावान् होगया हूँ । मैं तुझको यह दुःख अधिक देरलों नहीं सहने दूँगा, यह ले यह ले (फिर गला घोंटता है ।)

यमिलिया-(नेपथ्यमें) क्या होरहा है? हे मेरे प्रभु! हे मेरे प्रभु!

ओथेलो-कौन है ?

यमिलिया—(नेपथ्यमें) हे मेरे दयाशील प्रभु ! मैं आपसे एक बात कहने आई हूं ।

ओथेलो—हां, यह यमिलिया है मैं क्षणभर में उसको आने दूँगा—वह मरगई है । यह संभव है कि वह कसियो की मृत्यु का समाचार सुनाने आई है, उसने बड़ी चिल्ली पुकार की है । हाय अब वह हिलती डुलती नहीं है वह ऐसी स्तब्ध होगई है जैसी कि समाधि होती है । क्या इससमय उसको आने देना चाहिये ? क्या यह बात ठीक होगी ? मैं सोचता हूं कि फिर वह हिलती है, नहीं नहीं हिलती है । क्या करना अभीष्ट है ? यदि वह भीतर आवेगी तो अवश्य मेरी पत्नी से बातचीत करेगी । मेरी पत्नी ! मेरी पत्नी ! मेरी पत्नी कौन है ? मेरी कोई पत्नी नहीं है । हाय ! यह कैसा असह्य है ! कैसा दुर्मुहूर्त्त है ! मुझे इससमय सब अंधकारमय सूझता है, मानो चंद्रमा और सूर्य्य पर बड़ा लंबा खग्रास ग्रहण लगगया है और पृथ्वी ऐसा परिवर्तन होनेसे भयभीत होकर फट गई है ।

यमिलिया-(नेपथ्य में) मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि मुझे आपसे कुछ कहना है, हे मेरे दयालु प्रभो !

ओथेलो-ओहो ! मैं तुझको भूलगया । आ यमिलिया भीतर चली आ-थोड़ी देर ठहर, मैं तुझे अभी बुलाता हूँ (अपने आप)

परदा डाल देना चाहिये। (प्रकट) तू कहां है ? किस कामके लिये आई है ? (किवाड़ खोलता है)

(यमिलिया का प्रवेश।)

यमिलिया-हे मेरे कृपालु प्रभो ! यहाँ एक बुरा हत्याकाण्ड होगया है।

ओथेलो-क्या अभी ?

यमिलिया-मेरे प्रभु अभी अभी।

ओथेलो-इसका दोष चन्द्रमापर है जिसने अपना मार्ग छोड़के पृथ्वी के बहुत ही निकट आकर लोगों को बावला बनादिया है।+

यमिलिया-मेरे प्रभु ! केसियो ने एक नवयुवा वेनिसवासीको जिसका नाम रौदरिगो था मारडाला है।

ओथेलो-रौदरिगो मारागयाहै और क्या केसियो भी मारागयाहै?

यमिलिया—नहीं, केसियो नहीं मारा गया है।

ओथेलो—क्या केसियो नहीं मारागया है? तो नरहत्या अपना लक्ष्य भूल गई है और बदला लेने की रुचि जो मनुष्य जाति को ऐसी मधुर लगती है इस स्थल पर कठोर और कड़वी होगई है।

देशदाभिनी-हाय ? विना अपराध, विना अपराध, मेरा वध हुआ है।

यमिलिया—हाय ! हाय ! यह किसकी वाणी है।

ओथेलो-कहां ? किसकी ?

यमिलिया-वह प्रकट होगई है, और शोक है कि वह मेरी स्वामिनी की वाणी थी। अरे सहायता करो ! अरे सहायता करो ! सहायता करो ! हे मेरी प्रिय ठकुरानी बोलो क्या बात है ?

+ इँग्लिस्तान के लोगों का विचार था कि चन्द्रमा की ज्योति से लोग विक्षिप्त होते थे।

देशदामिनी-मैं निरापराध मरती हूँ ।

यमिलिया—अरे यह हत्याकांड किसने किया है ?

देशदामिनी-किसी ने नहीं किया है, मैंने अपने आप किया है अच्छा राम राम, अब मैं चलती हूँ । मेरे प्राणनाथ से मुझे स्नेह-पूर्वक स्मरण रखने की विज्ञप्ति करदेना, राम राम (मरती है ।)

ओथेलो—क्यों यह कैसे संभव होसकता है कि कोई उसका वध करे ?

यमिलिया-हाय! हाय! न जाने किसने ऐसा किया है ।

ओथेलो—तुमने अपने कानों से सुना है कि मैंने उसका वध नहीं किया है ।

यमिलिया-हां,उसने यह बात कही है,मैं तो सच्चा हाल कहूँगी

ओथेलो—वह असती थी और अग्निमय नरक धामको पधारी है, मैंने ही उसको मारा है ।

यमिलिया-हां,उसने ऐसा कहकर साक्षात् देवी होनेका अधिक-तर परिचय दिया है और तुमने नारकीय पिशाच होने का ।

ओथेलो—वह पुंश्चली होगई थी और रंडी बनगईथी ।

यमिलिया-तू उसपर मिथ्या दोषारोपण करता है,तू पिशाच है।

ओथेलो-वह पानी के सदृश चंचला थी, जो न कोई भारी वस्तुही उठा सकताहै और न जिसपर कोई चिन्हही ठहर सकताहै ।

यमिलिया—यदि वह चंचला थी तो तू दावाग्नि के समान जलवाला है । हा ! वह यथार्थ में स्वर्गीयमूर्त्ति थी ।

ओथेलो—केसियो ने उसका यौवनरस लूटा है। यदि तू इस बातको झूठ समझती है तो अपने पति से पूछले । यदि मैं केवल न्याययुक्त कारणों से इस अंतिम सीमाको न पहुँचा हूं तो घोर नर्क में पड़ूँगा, तेरे पतिको यह सब ज्ञात था ।

यमिलिया—मेरे पतिको !

ओथेलो—तेरे पतिको।

यमिलिया—क्या मेरे पति ने यह कहा था कि उसने विवाह की प्रतिज्ञा भंग की है ?

ओथेलो—हां तेरे पति ने कहा था कि केसियो के संग उसने ऐसा किया है। यदि वह पतिव्रता होती और स्वयं परमेश्वर भी मुझसे आके कहता के इसके बदले एक दूसरी जगत् सर्वगुणसंपन्न और अखण्ड हरित मणिकी लेले, तौ भी मैं उसको अलग न करता।

यमिलिया—मेरे पतिने यह बात कही है ?

ओथेलो—हां, उसीने पहले पहल यह बात मुझसे कही है। वह एक सत्यशील पुरुष है और उसको पापकर्मों से इतनी घृणा है कि वह पापियों का दंड देने के लिये सदैव ही प्रयत्न करता रहता है।

यमिलिया—मेरे पति ने यह बात कही है ?

ओथेलो—अरी नारी ! बार बार इस पुनरुक्ति की क्या आवश्यकता है ? मैं कहता हूँ कि तेरे पति ने ही यह बात कही थी।

यमिलिया—हाय मेरी ठकुरानी ! प्रेम दुष्टता के फंदे में आ फँसा है। क्या मेरे पतिने कहा है कि वह व्यभिचारिणी थी ?

ओथेलो—अरी स्त्री ! उसीने कहा है। मैं कहता हूँ तेरे पति ने कहा है, तू इस शब्दको समझती है ? मेरे मित्र, तेरे पति सच्चरित्र यागो ने यह बात कही है।

यमिलिया—यदि उसने ऐसा कहा है तो परमेश्वर करे उसकी पापात्मा को घोर यातना भोगनी पड़े। उसने जान बूझकर झूठ बोला है। हाय ! मेरी ठकुरानी बड़ी ही मूर्ख निकली जो तुझ जैसे निपट दुष्ट के पल्ले पड़ी।

ओथेलो—हाय ! हाय !

यमिलिया—जो भारी से भारी अनिष्ट तू मेरे लिए करसकता है करडाल। इसकार्य के करने से जैसे तू स्वर्ग जाने के योग्य नहीं रहा है, वैसे ही तू देशदामिनी के योग्य नहीं था।

ओथेलो-अब तू चुप होजा। यही सबसे अच्छी बात है।

यमिलिया-मैं क्यों चुप रहूँ? मुझे जितना क्लेश सहने की शक्ति है, तुझको मुझे उसका आधा क्लेश पहुँचाने की शक्ति भी नहीं है। अरे भोंदू! अरे अनाड़ी! कीच के समान ज्ञानशून्य! तूने ऐसा अन्धेर किया है कि मैं तेरे खड्गकी रत्तीमात्र भी चिंता नहीं करती। चाहे मेरा बीस बार मरण होजाय मैं तेरा भंडा फोड़ूँगी। अरे कोई है?सहायता करो! सहायता करो!सहायता करो! मूरने मेरी ठकुरानीको मारडाला है! खून होगया है! खून होगया है!

(मौनतेनो, ग्रत्यानो और यागोका प्रवेश)

मौनतेनो-क्या मामला है! कहिये सेनाधिपति क्या बात है?

यमिलिया—हां! यागो तुम भलेआये। तुमने यहबात अच्छी की है जो लोगों को अपने किये हुए खूनोंका तुम्हारे मत्थे मढ़नेका अवसर मिले।

ग्रत्यानो-क्या बात है?

यमिलिया—यदि तुम मनुष्य हो तो इस दुष्ट के कथन का खंडन करो। वह यह कहता है कि तुमने उससे यह बात कही थी कि उसकी स्त्री दुश्चारिणी थी। मैं समझती हूँ कि तुमने यह बात कभी नहीं कही होगी,क्योंकि तुम ऐसे दुरात्मा नहींहो। शीघ्र बोलो मेरा मन भरा आता है।

यागो-मेरा जो अपना विचार था वह मैंने उनसे कहा था इस से अधिक मैंने कुछ नहीं कहा और उनको अपने आप यह निश्चय होगया था, कि मैंने सच्ची खरी बात कही थी।

यमिलिया-परन्तु क्या तुमने कभी उससे यह बात कही थी कि वह कुलटा थी!

यागो—हां मैंने कही थी।

यमिलिया—तो फिर तुमने सरासर झूठ कहा है। ऐसा झूठ बका है जो अत्यन्त निन्दनीय है और जिसका दंड नरकमें ही मिल सकताहै। मैं अपनी आत्माकी सौगंध खाकर कहती हूँ कि यह बात मिथ्या है, एक दुष्टात्मा ही ऐसा झूठ बोल सकता है कि वह केसियो के साथ फँसी थी? क्या तुमने केसियोका नाम लिया था?

यागो—हां, हां, ठकुरानी केसियो के साथ। अब जाओ और अपना मुँह बंद करो।

यमिलिया—मैं अपना मुँह बंद नहीं करूँगी, मैं सब बात बोलनेके लिये बाध्य हूँ। मेरी स्वामिनी तो यहांपर बिस्तरपर बध कीहुई पड़ी है।

सब—परमेश्वर ऐसा न करे।

यमिलिया—और तुम्हारी सूचनाओं के कारण यह हत्याकांड हुआ है।

ओथेलो—हां हुआ है, आप महाशय चकित न हों, यह बात निःसन्देह सत्य है।

ग्रत्यानो—यह बिलक्षण सत्य है।

मौनतेनो—ओहो! यह बड़ी अनोखी घटना है।

यमिलिया—क्या ही अधमता! दुर्जनता! और दुष्टता है! मेरे विचार उससे भरे पड़े हैं। जब मैं सोचती हूँ तो मुझे वह खटकती है। ओहो! क्या ही शठता है, मुझे तबभी कुछ सूझ गयी थी, मैं शोकसागर में डूबकर मरजाऊँगी, हा पाप घोरपाप!

यागो—क्या तुम बावली होगई हो? जाओ अपने घर चली जाओ और मेरा कहना मानो।

यमिलिया—दयालु सज्जनो! मुझे बोलने की आज्ञा दीजिये।

मेरा उसकी आज्ञापालन करना धर्महै,पर अब यह बात नहीं रही है यागो ! अब मैं घरको लौटकर नहीं जाऊँगी।

ओथेलो—हाय ! हाय ! हाय ! (देशदामिनी की शय्या पर गिरता है। मौनतेनो उसको हटाता है।)

यमिलिया—हाय ! गिरपड़ और फूट फूट कर रोता जा, और अपना सिर फोड़ता जा, क्योंकि तूने संसार भर में एक अत्यन्त मनोहर निर्दोष रमणी का वध किया है, जिससे बढ़कर कोई दूसरी स्त्री पैदा नहीं हुई होगी।

ओथेलो—(उठकर) हा ! वह पुँश्चली थी। अहा ! कनिष्ठ ससुर जी मैं आपको नहीं पहिचानसका, मुझे क्षमा कीजिये। वो देखिये आपकी भतीजी मरी पड़ी है। जिसका प्राणवायु सचमुच मेरे इन हाथों से अभी निकला है। मैं समझता हूँ यह बड़ी भयंकर और हृदयविदारक घटना है।

ग्रत्यानो—भाग्यहीन देशदामिनी! मुझे अब इस बातको देखकर हर्ष होताहै कि तेरे पिताजी का स्वर्गवास होगया है। तेरा विवाह ही उनकी मृत्यु का कारण हुआ। उसी के शोक से उनके जीवन रूपी सूत्रके दोखंड हुए हैं। यदि वह इस समय जीवित होते तो न जाने इस घटना से वह क्या अनर्थ कर बैठते, वह अपनी उत्तम प्रकृति को घृणासे तजकर नीचप्रकृति का अवलंबन करके,अधोगतिको प्राप्त होते।

ओथेलो—यद्यपि वह दृश्य करुणामय है किन्तु यागो सब कुछ जानता है। वह जानता है कि देशदामिनीने केसियो के साथ दुष्कर्म्म किया है, एक बार नहीं वरन सहस्रवार। केसियो ने भी इस बातको स्वीकार किया है। केसियो के काम कलोल के उपहार में उसने उसको मेरा वह स्मरणचिन्ह और प्रीत्याभिज्ञान देडाला, जो मैंने उसको पहले पहल दिया था। मैंने उसे उसके हाथमें देखा है।

वह एक प्राचीन रूमाल था जो मेरे पिता ने मेरी माता को सहिदानी में दिया था।

यमिलिया—हे दैव ! हे दैवी शक्तियो !

यागो—अरी जा ! मौन साध।

यमिलिया—यह बात विना प्रकट हुए नहीं रहेगी, अवश्य खुलेगी। हां महाशय ठीक है। मैं चुप होजाऊँ? ऐसा कदापि नहीं होगा। जैसे कि उत्तरीय पवन के झोंके विना रोकटोक बहते हैं, उसीभांति मेरी वाग्धारा का प्रवाह भी बहेगा। चाहे दैवी, मानुषी और आसुरी सब शक्तियाँ मिलकर मेरे विरुद्ध खड़ी होकर मुझे रोकें, मैं तबभी विना बोले नहीं रहूँगी।

यागो—अरी चलीजा और अपने घरकी वाटले।

यमिलिया—मैं नहीं जाऊंगी।

(यागो अपनी स्त्रीको कोंचनेका उद्योग करता है।)

ग्र्यानो—छी छी ! तुम एक अबलापर अपना खड्ग उठाते हो?

यमिलिया—अरे जड़बुद्धि मूर ! वह रूमाल जिसकी चर्चा तू करता है मैंने अकस्मात् पड़ा हुआ पाया था, और मैंने उसे अपने पति को दिया था, क्योंकि बहुधा उसने मुझसे बड़े आग्रह से (निःसन्देह ऐसी तुच्छ वस्तुके लिये इतना आग्रह नहीं कियाजाताहै) उसे चुर लेने की प्रार्थना की थी।

यागो—अरी दुष्ट वेश्या !

यमिलिया—क्या मेरी ठकुरानी ने उसे केसियो को दिया था? हाय; हाय ! मैंने उसको गिरा हुआ पाया था और अपने पति को दिया था।

यागो—अरी दुष्टा ! तू झूठ बक रही है।

यमिलिया—ईश्वर की शपथ मैं मिथ्या नहीं बोलती हूँ। अरे हत्यारे मूर्ख ! तू ऐसा निपट अनाड़ी ऐसी देवी स्वरूप भार्य्या के योग्य नहीं था।

(यागो यमिलियाको कोंचता है और बाहर भागजाता है)

ओथेलो-क्या आकाश में कोई उबारू वज्र नहीं है, जो इस निठुर चांडाल के ऊपर गिरता?

ग्रत्यानो-वह स्त्री गिरती है, निश्चय उसने अपनी पत्नीको मार डाला है।

यमिलिया-मैं तो मरी पर मुझे कृपा करके मेरी ठकुरानी के साथ रख दीजिये।

ग्रत्यानो-वह तो भाग गया है पर अपनी पत्नीको मारगया है।

मौनतेनो-वह असाधारण दुष्ट है। तुम इस अस्त्रको सँभालो जो मैंने मूरसे छीना है। आओ, बाहर से दरवाजे पर पहरा रक्खो उसको जाने मत देना, यदि वह जाने का उद्योग करे तो उसको मार डालना। मैं उसही दुष्टकी ढूँढमें जाता हूँ, क्योंकि वह नरक-यातना के योग्य चांडाल है। (जाता है)

ओथेलो-मुझपर और कलंक तो लगही गये हैं। पर इसके अतिरिक्त ऐसा आभास होता है कि मेरे पूर्व पराक्रम में भी इतनी घटी होगई है कि कोईसा कापुरुष मेरे खड्ग को मुझसे छीन सकता है, जबकि मैंने घोर अपराध करके अपनी प्रतिष्ठा गँवादी है, तो इसबात की भी क्या चिन्ता करनी है कि मैं कायर भी समझा जाऊँ, इसको भी जाने दो।

यमिलिया-हे श्रीमती! तेरा सोने को जाने से पहिले गानेका क्या आशय था! हाय! क्या तू मेरा कहना नहीं सुन सकती है? मैं राजहंस की सी चेष्टा करके गाती २ मरूँगी। (गाती है)

स बमिल गाओ पिय परित्याग।

अरे मूर! मेरी ठकुरानी सती थी, अरे निठुर मूर! वह तुझ को प्राण से अधिक प्यार करती थी। यदि मैं सत्यभाषण करती मरती हूँ, तो मेरी आत्मा को परमानन्द मिले नहीं तो नहीं। जैसी मेरी मनसाहै वैसी ही वाचा भी है-मैं मरती हूँ,मैं मरतीहूँ। (मरतीहै)

ओथेलो–मेरा इस कोठड़ी में एक और शस्त्र रक्खा हुआ है वह स्पेन देशका खड्ग है। हिमसे बुझाया हुआ होनेसे उसका पानी जैसा का तैसा है। आहा! वह यह है, कनिष्ठ ससुरजी मैं यह आ पहुँचा।

ग्रत्यानो–यदि तूने आने का प्रयत्न किया तो, तू इसका फल भुगतेगा। मैं शस्त्रसज्जित हूँ। तेरे पास कोई शस्त्र नहीं है और तू अवश्य मार खायगा।

ओथेलो–तो अच्छा मेरी ओर सिर उठाके तो देखले और मेरे साथ बात तो करले, नहीं तो मैं अस्त्ररहित ही तुझपर आक्रमण करूंगा।

ग्रत्यानो—क्या बात है?

ओथेलो–देखो! मेरे हाथ में अस्त्र है। इससे अच्छा अस्त्र कभी किसी सैनिक की जंघापर नहीं लटका। मैंने वह दिन देखाहै जब इसी अच्छे खड्गसे और इसी छोटे हाथ से मैं तुम से बीस गुणी अधिक बाधा देने वालों के घेरे को कुछ न गिनकर उसके बीच में होकर निकल जाता था। किन्तु हा! अब यह अहंकार वृथा है! अपनी भवितव्यता पर किसका बश चलता है? अब मेरा वह दिन नहीं रहा है। इस समय चाहे तुम मुझे अस्त्र धारण किये देखते हो पर तुम मुझको देखकर मत डरो। यह मेरी जीवनरूपी यात्रा का अंत है–मैं अपने ठिकाने पर पहुँच चुका हूं। यही अन्तिम स्थल है जहां तक कि मेरी समुद्रयात्रा निर्दिष्ट थी। तुम डरकर क्यों पीछे हटते हो? तुम्हारा भय निर्मूल है। मेरे मनकी वर्तमान अवस्था में कोई भंगुर हथियार प्रत्युत एक तिनुका मात्र भी मुझे पराजित करने के लिये बहुत है। अब ओथेलो का ठिकाना कहां है! हे मंद-भागनी तरुणी! हाय अब तू कैसी दिखलाई पड़ती है?हाय!तू ऐसी पीली पड़गई है जैसी कि तेरी चोली है! अन्तिम न्याय के दिन

तेरी दृष्टि से ही मेरी आत्मा स्वर्ग से नरक में जा पड़ेगी और पिशाचगण उसको नोचेंगे। हे लाड़ली! हाय तेरा शरीर कैसा शीतल शीतल होगया है जैसा तेरा सतीत्व है। अरे! अभागे शापित चांडाल! हे वेतालगण, मेरा संहार करो! मुझे यह स्वर्गीय दृश्य मत देखने दो! मुझे पवनझकोरों से फूककर उड़ादो! मुझे गंधक के अग्निकुंड में भूनदो! मुझे घनघोर गहिरी द्रव अग्नि की खाड़ी में न्हिला दो! हे देशदामिनी क्या तू मरगई है!

[लोदोविको, मौनतेनोनो, केसियो (एक डोली में) अधिकारी वर्गका प्रवेश। यागो बंदी करके लायाजाता है]

लोदोविको–वह उतावला और अत्यन्त भाग्यहीन पुरुष कहां है?

ओथेलो–तुम्हारा अभिप्राय ओथेलो से है, मैं यहां हूं।

लोदोविको–वह सांपका बच्चा कहां है? उस दुष्टको आगेलाओ।

ओथेलो–मैं देखना चाहता हूँ कि कहीं वह खुरचिरा* तो नहीं है–पर यह दंतकथामात्र है। यदि तू यथार्थ में पिशाच है तो मैं तुझको नहीं मार सकूँगा। (यागो को घायल करता है।)

लोदोविको–उसकी तलवार उससे छीनलो।

यागो–महाशय! मैं लोहूलोहान होगया हूँ पर मैं मारा नहीं गया हूँ।

ओथेलो–मुझको इस बात की चिंता नहीं है, मैं चाहता हूँ कि तू बचा रहे। क्योंकि मेरी समझ में तो मरनेही में आनन्द है।

लोदोविको–अरे ओथेलो! जो तू एक समय ऐसा सज्जन था तू एक दुष्टके जाल में फंसकर यह क्या कर बैठा है? हमलोग तुझसे क्या कहें!

ओथेलो–क्यों जो चाहे सो कहियेगा। यदि आप चाहें तो मुझे एक मानरक्षक हत्यारा कह सकते हैं, क्योंकि मैंने जो कुछ किया है घृणावश नहीं किया है वरन मानरक्षाके हेतु किया है।

लोदोविको–इस दुरात्मा ने अपनी दुष्ट कार्य्यवाही का कुछ

---

* शैतान को कहा जाता है कि वह खुरचिरा है।

अंश स्वीकार करलिया है। क्या इस दुष्ट ने तुम्हारी सम्मति से केसियो के मार डालने की चेष्टा की थी ?

ओथेलो-हां।

केसियो-प्रिय सेनापति जी ! मैंने कभी आपका कोई अपराध नहीं किया है।

ओथेलो--मुझे इसका पूरा विश्वास है और मैं तुमसे क्षमा चाहता हूं। आप कृपापूर्वक उस अर्द्धपिशाच से पूछियेगा कि उस ने इसभांति क्यों मेरे शरीर और आत्माको घनघोर झंझटमें डाला है ?

यागो-मुझ से कुछ न पूछिये जो बात है आप जानते ही हैं। मैं आजके दिन से कभी अपना मुँह नहीं खोलूँगा।

लोदोविको-क्या तू प्रार्थना करनेके लिये भी ऐसा नहीं करेगा?

ग्रत्यानो—जब मार पड़ेगी तब तेरे होंठ खुलेंगे।

ओथेलो—इसी में श्रेय है कि तू अपनी जिह्वा बंद रक्खे।

लोदोविको—महाशय, जो जो बातें हुई हैं आपको विदित हो जायँगी। मैं समझता हूँ कि आप इससे जानकार नहीं हैं। देखिये मृत रोदरिगो के जेब में यह एक चिट्ठी मिली है और यह एक दूसरी चिट्ठी भी मिली है।उनमें से एक में यागो ने रोदरिगो को यह लिख रक्खा है कि वह केसियो को मार डाले।

ओथेलो—अरे पापी !

केसियो—अरे निर्लज्ज अधमाधम म्लेच्छ !

लोदोविको—और देखिये यह दूसरी चिट्ठी है—यहभी उसके खीसे में मिली है। इसमें रोदरिगो यागो के व्यवहार से असंतोष प्रकट करता है। इस चिट्ठी को वह इस नीच पिशाचको भेजने को था पर ऐसा प्रतीत होता है कि यागो उससे मिलगया और उसने उसका पूराही निबटारा करडाला।

ओथेलो-अरे अपकारक नराधम ! कहो केसियो, वह रूमाल जो मेरी भार्य्या का था तुम्हारे हाथ कैसे लगा था ?

केसियो-मैंने उसको अपने कमरेमें पड़ाहुआ पायाथा। उसने अभी इसबातको स्वीकार करलिया है कि किसी विशेष कारणसे जिससे

उसकी कोई मनोकामना सिद्ध होती थी उसने उसको वहां डाला था।

ओथेलो-अरे मैं कैसा मूर्ख बना! कैसा मूर्ख बना! कैसा मूर्ख बना!

केसियो-इसके अतिरिक्त रादरिगोकी चिट्ठी में यागो के लिये इसबातका उलहना भी लिखा है कि उसने किस भाँति पहरे पर मेरे साथ उसको भिड़ायाथा। जिस बात पर कि मैं पदच्युत किया गयाहूँ। कुछ देरतक मराहुआ सा जान पड़ने के पीछे रोदरिगोने अभी यह बातभी कही है कि यागोही उसके नाश का कारण हुआ है, उसनेही उसको मेरे वध करने के लिये उभाड़ा था।

लोदोविको-तुमको यह कमरा छोड़कर हमारे साथ चलना होगा। तुमारा अधिकार और शासक पद तुमसे निकाल दिये जाते हैं। सैप्रसपर केसियो शासन करेगा। इस चांडाल के लिये यदि कोई ऐसी कठोर युक्ति निकल आवेगी जिससे इसको घोर यातना सहनी पड़े, पर उससे इसके बहुत काल तक प्राण न जायँ, वही दंड इसको मिलेगा। जब तक कि वेनिसराजसे तुम्हारे अपराध का विचार नहीं होगा, तुम कठिन पहरे में बंदी रहोगे। अच्छा चलो उसको साथ ले आओ।

ओथेलो-थोड़ा ठहरो, जाने से पहले दो एक बातें जो मुझे कहनी हैं सुनतेचलो। मैंने राजकी जो कुछ सेवा की है वे इस बात को भलीभांति जानते हैं, इस विषय में मैं अधिक कहना नहीं चाहताहूँ। मेरी आपसे यह प्रार्थना है कि जब आप इन दुर्घटनाओं के बारे में चिट्ठियां भेजेंगे तो उनमें जैसा मैं वास्तवमें हूँ वैसाही वर्णन करना। उनमें कोई बात ऐसी न लिखना जिससे मेरा अपराध हलका जँचे पर साथ ही इसके द्वेषके वशवर्ती होकर भी कुछ अंकित न करना। आपको मेरा वृतान्त इसभाँति लिखना चाहिये। "मैंने अति उत्तम भाँति से अपनी अर्द्धांगीको प्यार किया है पर बुद्धिमानीसे नहीं। मैं सहजमें स्त्रियोंपर सन्देह करनेवाला नहीं था, किन्तु बारम्बार उत्तेजनाके कारण घनघोर संदेहमें फंस गया। मैंने उस असभ्य अमेरिकन इण्डियन के समान व्यवहार किया है, जो बेजाने अपने हाथ आये हुए अमूल्य मोतियों को फेंकदेता है और यह नहीं जानता है कि उसकी सारी जातिके मोलसे भी वे अधिकतर बहुमूल्य हैं। अस्तु, मेरी रोनेकी बान कभी नहीं थी पर अब

भारी विपत्ति से ग्रस्त होकर मेरी आँखोंसे ऐसे वेगसे अश्रुधारा बह रही है जैसे अरब देश के पेड़ोंसे औषधियोंमें काममें आनेवाला गोंद बहता है। आप इसको लिख लीजिये। और इसके व्यतिरिक्त यहभी लिखिये कि "अलेप्पो में जब एक बार एक द्रोही तुर्क पाग बांधे हुये एक वेनिसवासीपर मारपीट कररहाथा और वेनिसराज की निन्दा कर रहाथा, तो मैंने यों उस खतना किये हुए कुत्तेका गला पकड़ लिया और इस भांति उसको मारडाला"।

(अपनेको कोंचता है।)

लोदोविको—अरे कैसा भयंकर परिणाम है!

गृत्यानो—ओथेलो के आत्मघात करनेसे अब हमारा सब वाद-विवाद व्यर्थ है।

ओथेलो—प्यारी तेरे वध करनेके पहले मैंने तेरा चुम्बन किया था, अबतो और कुछ नहीं होसकताहै (देशदामिनी पर गिरताहै।) तुझे चुम्मा देते हुये ही मैं भी मरताहूँ। (मरता है।)

केसियो—मुझे पहलेसे शंकाथी कि ऐसी बातहोगी, क्योंकि वे बड़े शूरवीर थेपरन्तु मैंने सोचाथा कि उनके पास कोई हथियार नहींहै।

लोदोविको—(यागोसे) अरे भोटिया* कुत्ते! जो दारुण महामारी, अकाल और समुद्र से भी अधिकतर निठुर है! देखतो यह शय्या कैसे शोक जनक बोझसे लदी पड़ी है। यह सब तेरी करतूतहै। यह दृश्य आंखोंसे सहा नहीं जासकता! इसको किसी वस्त्रसे ढंक दो।

गृत्यानो—(लोदोविकोसे।) इस हवेलीकी रखवाली करो और मूरकी सब सम्पत्तिको अपने हस्तगत करलो क्योंकि उसके उत्तराधिकारी तुमही हो। (केसियोकेप्रति) अहो! श्रीमान् देशाधिपति! अब इस नारकीय चांडालको यथोचित दंड देना आपके आधीनहै। किस समय, किस स्थान पर, और कैसी यातनासे वह दियाजावेगा इसका निर्णय आप करेंगे। इसका भुगतान कराइये! मैं अब सीधे जहाज़पर सवार होकर जाताहूँ, इस हृदयविदारक घटना का समाचार उद्विग्न मनसे राजसभाको सुनाऊंगा। (सब जाते हैं।) इति।

---

* भोटिया=भोट या भूटानका। भोटके कुत्ते बड़े उग्र और भयानक होते हैं। मूलमें स्पार्टाका कुत्ता है।

शुद्धि-पत्र।

प्रस्तावना

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	१०	पताब्राहक	पताकावाहक
९	१५	पीढ़ा	पीड़ा
१०	३	त्तासकता	त्तासकती
१०	१८	है और	है और वह
११	२	तोड़कर	तोड़ का
११	११	दर्शाय	दर्शाया
११	१४	बढ़ं	बढ़
१२	११	कि	की
१३	८	यह	वह
१३	१४	उसका	उसको
१५	६	थोडा	थोड़ा
१५	२०।२१	र्रासिया	रसिया
१५	२६	देशदामिमिनी	देशदामिनी
१६	९	यथ	पथ
१७	६	विश्वासघात"	विश्वासघात
१८	१२	थ	था
१९	१४	परन्त	परन्तु
१९	१६	जात	जाता
१९	२१	झिझकती	झिझकती

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०	१	बया	बढ़ियां
२०	८	जानेका	जानेकी
२०	१७	बसन	बसंन
२१	३	यात्रा	मात्रा
२२	१०	दुःखात	दुःखान्त
२२	२५	मे	से

नाटक ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	१	आषधि	औषधि
१२	१५	कठिनताई	कठिनाई या कठिनता
१२	२३	चाहै	चाहे
१५	२५	वश्वास	विश्वास
२१	१४	में	मैं
२३	२०	का	को
२५	२५	मं	मैं
२६	१३	घर	घर
२९	८	किलोल	कलोल
३१	४	होगी ?	होती है ?
३१	१४	धर्मको	धर्म्म
३१	१७	िनंधर	निर्भर
३१	२२	सिमुरारो	सिसुणो
३२	२	इसका	इसकी
३२	९	प्रशारना	प्रशाखा
३२	२६	प्रशारना	प्रशाखा
३५	१३	घढा	बढ़ा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३५	१४	अंतरीय	अंतरीप
३८	२६	उमंड	उमड़
३९	१३	अखात	आखात
४२	३	सुघराइ	सुन्दराई
४३	१८	मर्म स्पर्श	मर्मस्पृश
४५	१२	बखेडा	बखेड़ा
४६	१७	तौभी	तोभी
४७	१२	लौंड़ा	लौंडा
४७	२०	निलज्जना	निर्लज्जता
४८	१४	रौदरिगो–	रौदरिगो !
५०	३	जिसके	जिसको
५०	८	हे	है
५२	१३	तौभी	तोभी
५३	१	बे	वे
५३	१६	प्रेम	मेम
५३	२१	वंड	वड़े
५३	२३	चढवा	चढ़वा
५४	९	हे	७
५५	४	इसका	इसको
५६	१६	लडाइ	लड़ाई
५६	२१	वह	यह
५७	१	तरग	तरंग
५७	२	जिसमे	जिससे
५८	३	चौडा	चौड़ा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५८	८	ह	है
५९	२५	हुं	हूं
६०	२५	लडाई	लड़ाई
६१	१४	तौभी	तोभी
६१	२०	पडा	पड़ा
६१	२१	होपडा	होपड़ा
६१	२२	पकडने	पकड़ने
६२	४	छुड़या	छुड़ाया
६३	६	वखेडों	बखेड़ों
६३	१५	धास्तव	वास्तवमें
६३	१६	तुम्हारेमें	तुम्हारे
६४	१	ह	है
६४	१५	विगाडा	बिगाड़ा
६६	१८	हां है	हां
६८	७	गल	गैल
६९	१२	सेनापतिको सुखद प्रभात	‘सेनापतिको सुखदप्रभात’’
७१	८	एसी	ऐसी
७१	१०	करक	करके
७१	२४	वडा	बढ़ा
७२	११	मांझीं	मांझी
७३	१	बीडा	बीड़ा
७३	१७	एसी	ऐसी
७४	१२	महाशय	महाशया

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७४	१९	केसिया	केसियो
७५	१	स	से
७८	२६	पूर्णाह	पूर्ण है
८०	१२	गढ	गढ़
८०	१३	होता	होता)
८०	१४	अपेक्षा	अवेक्षा
८१	१६	आहो	ओहो
८२	८	वढाते	बढ़ाते
८५	१	आर	और
८५	२०	म	में
८८	२६	विचारी	वेचारी
८९	२१	सिकजे	सिकंजे
९०	१३	सनाओ	सेनाओ
९२	१६	य	या
९३	१६	षय	विषय
९३	१६	मूर्खभरी	मूर्खताभरी
९३	१८	ढ़ता	बढ़ता
९५	८	प्रेमाशक्ति	प्रेमासक्ति
९६	१२	ज्योतियों	ज्योतियो
९६	११	पंचतत्वों	पंचतत्वो
९७	१७	यनाता	बनाता
९९	७	आर	और
१०१	१६	वहीं	कहीं
१०२	२४	तौ	तो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०५	२१	छेड्रूँगी	छेड़ूँगी
१०७	२०	दुर्ग के	सामने—यह जोड़िये
		(ओथेले ओर यागोका प्रवेश)	
१०८	१	नीतिक	नीतिके
१०८	५	माना	मानो
१०८	५	शतान	शैतान
१११	६	ो	हो
१११	२१	हैं" हैं"	है।
११२	१	करोडों	करोड़ों
११२	६	भोगता	भोगना
११२	२१	सगममा	समागम
११३	१२	विक्रन	विक्रय
११६	१६	हे	है
११७	१९	आर	और
११७	२५	ोथेलो	ओथेलो
११८	२१	कसे	कैसे
१२०	३	लोदोविका	लोदोविको
१२०	३	अनुचराकों	अनुचरोंका
१२०	५	स	से
१२०	१०	ह	है
१२२	१२	से	में
१२५	१	डलगाहो	होड़लगा
१२६	३	गुसा	गुप्त
१२६	१८	दुष्टचरित्र	दुष्टचरित्रा
१२८	७	मे	में

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२९	११	कसी	कैसी
१३०	२	कानसा	कौनसा
१३३	२	एसी	ऐसी
११३	१८	कपडे	कपड़े
१३९	२२	होट	होंट
१३९	२	केमदुम	केमद्रुम
१४०	२४	ओढनियों	ओढ़नियों
१४१	२	औरों	औरों*
१४२	२४	दूसरों	*दूसरों
१४३	५६	म	में
१४४	२१	ओार	और
१४६	१६	हिचान	पहिचान
१४८	८	केसियो–यह	केसियो ! यह
१५०	१०	तौभी	तोभी
१५१	१	तौभी	तोभी
१५३	३	पापक	पापके
१५५	१८	अधं कारमय	अंधकारमय
१५८	८	तौभी	तोभी
१६२	८	चाहैं	चाहे
१६४	२१	तिनुका	तिनका

पुस्तकें मिलनेका पता-
गणेशीलाल लक्ष्मीनारायण
लक्ष्मीनारायण यन्त्रालय,
मुरादाबाद.